RAJHIN/2016/70516 Bhilwara/171/2026-2028

सच्चाई से रूबरू smarthalchal.com

स्मार्ट हलचल

वर्ष-10 अंक-209 जयपुर, शुक्रवार, 30 जनवरी 2026 मूल्य-4 रुपये

यूजीसी के नए नियमों पर सुप्रीम कोर्ट की रोक

यूजीसी के नए नियमों के दुरुपयोग की आशंका, विभाजन का खतराः सुप्रीम कोर्ट

कोर्ट ने कहा- केंद्र को नए सिरे से ड्राफ्ट तैयार करने के निर्देश

नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देने) विनियम, 2026 को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई की। कोर्ट में इन विनियमों को सामान्य वर्गों के विरुद्ध भेदभावपूर्ण होने के आधार पर चुनौती दी गई है। ऐसे में सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी के नए नियमों पर रोक लगी दी। अब नए आदेश तक 2012 के नियम ही लागू रहेंगे।

केंद्र को नोटिस जारी, 19 मार्च को अगली सुनवाई

सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा कि

नए नियम अस्पष्ट हैं। कोर्ट के कहा कि नए यूजीसी नियमों का दुरुपयोग हो सकता है। इसी के साथ सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया और यूजीसी के नए नियमों पर अगले आदेश तक रोक लगा दी है। अब इस मामले पर अगली सुनवाई 19 मार्च को होगी।

केंद्र और यूजीसी से जवाब मांगा

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ ने इन रिट याचिकाओं की सुनवाई की। इस दौरान मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा कि हमें जातिविहीन समाज की ओर बढ़ना चाहिए या हम पीछे जा रह हैं। जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि क्या हम उल्टी दिशा में जा रहे। जिन्हें सुरक्षा चाहिए, उनके लिए व्यवस्था होनी चाहिए। इसी के साथ उन्होंने केंद्र और यूजीसी से जवाब मांगा है। साथ ही कहा है कि एक विशेष कमेटी भी बनाई जा सकती है। इसी के साथ नए नियमों की भाषा को स्पष्ट करने के लिए विशेषज्ञों की जरूरत पर भी जोर दिया।

यूजीसी के नए नियमों से देशभर में आक्रोश

दरअसल, यूजीसी रेगुलेशन, 2026 को 23 जनवरी, 2026 को नोटिफाई किया गया था। जिसे लेकर पूरे देश में आक्रोश फैल गया। जिसके बाद इसे कई याचिकाकर्ताओं ने मनमाना, भेदभावपूर्ण और संविधान के साथ-साथ यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन एक्ट, 1956 का उल्लंघन बताते हुए चुनौती दी। यूजीसी इक्विटी रेगुलेशन के खिलाफ याचिकाएं मृत्युंजय तिवारी, एडवोकेट विनीत जिंदल और राहुल दीवान ने दायर की हैं। याचिकाकर्ताओं का तर्क है कि ये नियम सामान्य वर्गों के खिलाफ भेदभाव को बढ़ावा देते हैं।

वहीं याचिकाकर्ता विनीत जिंदल ने कहा, 'आज, सीजेआई ने हमारी दलीलों की सराहना की। हमें कहना होगा कि यह हमारे लिए बहुत बड़ी जीत है। जैसा कि हम खास तौर पर तीन मुद्दों के बारे में बात कर रहे थे, एक है सेक्शन 3ष्ट जो जातिगत भेदभाव के बारे में बात करता है और उस खास सेक्शन में, सामान्य जाति को बाहर रखा गया है और बाकी सभी जातियों को शामिल किया गया है। तो, यह खास सेक्शन यह संदेश दे रहा है कि SC, ST और OBC के साथ सामान्य जाति द्वारा भेदभाव किया जा रहा है।'

यह सीजेआई के सामने हमारी दलील थी और उन्होंने हमारी दलील की सराहना की और खास तौर पर कहा कि हम जो कह रहे हैं वह सही है और अगर ऐसे सेक्शन हैं, तो यह निश्चित रूप से सामान्य जाति के लिए बहुत कठोर और भेदभावपूर्ण होगा और इसमें संशोधन किया जाना चाहिए। दूसरा हिस्सा इक्विटी कमेटी के संबंध में है जो इन नए त्तष्ट सेक्शन के सेक्शन 18 के तहत बनाई गई है। इन खास नियमों में सामान्य समुदाय के लिए कोई खास प्रतिनिधित्व नहीं बताया गया है।

'बीटिंग रिट्रीट समारोह' में दिखा जवानों का जोश

कार्यक्रम में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और प्रधानमंत्री रहे मौजूद

तीनों सेनाओं ने राष्ट्रपति को सैल्यूट दिया

नई दिल्ली

गणतंत्र दिवस उत्सव का औपचारिक समापन करने वाला 'बीटिंग रिट्रीट समारोह' का आज विजय चौक पर आयोजन किया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मौजूदगी में होने वाले इस आयोजन में उपराष्ट्रपति सी.पी. राधाकृष्णन, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और तीनों सेनाओं के प्रमुख भी शामिल हुए।

समारोह की शुरुआत में सेना द्वारा राष्ट्रपति को सैल्यूट दिया गया। इसके बाद तिरंगा फहराया गया और राष्ट्रगान की धुन बजाई गई। तीनों सेनाओं के बैंड ने सेरेमनी की शुरुआत धुन 'कदम-कदम बढ़ाए जा' बजाकर की।

वहीं, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस ऐतिहासिक सैन्य परंपरा को राष्ट्रीय गौरव और सैन्य विरासत का प्रतीक बताया है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि विजय चौक की भव्यता के बीच होने वाला यह आयोजन भारतीय सशस्त्र बलों के अनुशासन, एकता और स्थायी मूल्यों को दर्शाता है। उन्होंने इसे देश के लिए गौरव का क्षण बताया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी विजय चौक पर होने वाले बीटिंग रिट्रीट समारोह का आयोजन में विजय चौक पहुंचे। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उनका स्वागत किया। पीएम मोदी राष्ट्रगान के दौरान भी मौजूद रहे।

बीटिंग रिट्रीट समारोह के दौरान विजय चौक पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद पाइप्स एंड ड्रम्स बैंड ने 'अतुल्य भारत', 'वीर सैनिक', 'मिली झुली', 'नृत्य सरिता', 'मरूनी' और 'झेलम' जैसी मधुर धुनें पेश किया। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों ने बैंड 'विजय भारत', 'हथरोही', 'जय हो' और 'वीर सिपाही' बजाया।

बीटिंग रिट्रीट समारोह के अंत में मास बैंड 'भारत की शान', 'वंदे मातरम्' और 'ड्रमर्स कॉल' बजाएंगे। समारोह का समापन बिगुलरों द्वारा बजाई जाने वाली अमर धुन 'सारे जहां से अच्छा' के साथ होगा।

कथावाचक साध्वी प्रेम बाईसा की मौत के बाद हंगामा-तनाव

पिता का दावा- इंजेक्शन के कारण जान गई, किसने पोस्ट किया सुसाइड नोट?

जोधपुर

राजस्थान की कथावाचक साध्वी प्रेम बाईसा की मौत के बाद से जोधपुर में पोस्टमॉर्टम के दौरान अस्पताल में तनाव बना हुआ। बुधवार रात को उनकी मौत की जानकारी सामने आने के बाद से सैकड़ों की संख्या में भक्त वहां मौजूद हैं। कई भक्तों ने उनके पिता और आश्रम पर भी साध्वी की मौत को लेकर सवाल उठाए हैं। वहीं, उनके पिता ने मौत का कारण गलत इंजेक्शन को बताया है। प्रेम बाईसा की बॉडी को पोस्टमार्टम के बाद उनके बोरनाडा स्थित आश्रम ले जाया गया है।

एक भक्त रुद्रप्रताप सिंह ने बताया कि रात 9:30 बजे के करीब वो आरती नगर स्थित साध्वी के आश्रम पहुंचे। वहां उस समय साध्वी के पिता बॉडी को लेकर बाहर खड़े थे।

बॉडी को अंदर ले जाने से मना करने लगे। इतना ही नहीं साध्वी के फोन को भी पुलिस को देने से मना कर दिया। हालांकि, बाद में ष्टक्कछवि शर्मा ने उनके मोबाइल को अपने कब्जे में ले लिया।

कश्मीर में पारा माइनस 11.2 डिग्री, राजस्थान में आंधी-बारिश का अलर्ट

उत्तराखंड में हिमस्खलन की चेतावनी

शिमला

जम्मू-कश्मीर में कड़ाके की ठंड जारी है। सोनमर्ग सबसे ठंडा रहा, जहां न्यूनतम तापमान माइनस 11.2 डिग्री दर्ज किया गया। श्रीनगर में तापमान माइनस 0.6 डिग्री रहा। 1 फरवरी से वेस्टर्न डिस्टर्बेंस के कारण बारिश-बर्फबारी हो सकती है।

मध्य प्रदेश में ओले और बारिश का दौर थमने के बाद सर्दी और घने कोहरे का असर बढ़ गया है। गुरुवार सुबह भोपाल, ग्वालियर समेत 20 से ज्यादा जिलों में मध्यम से घना कोहरा रहा।

चंडीगढ़ के डिफेंस जियोइन्फॉर्मेटिक्स रिसर्च एस्टेब्लिशमेंट ने उत्तराखंड के कई ऊंचाई वाले इलाकों में शुक्रवार शाम 5 बजे तक हिमस्खलन का गंभीर खतरा बताया है। वहीं, मौसम विभाग ने 31 जनवरी से 3 फरवरी के बीच राज्य में फिर से बारिश और बर्फबारी का अलर्ट जारी किया है।

हरियाणा के 16 जिलों में गुरुवार को घना कोहरा छाया रहा। जींद में रोहतक हाईवे पर विजिबिलिटी जीरो रही। प्रदेश में 23 ट्रेनें लेट हुईं। प्रदेश में सबसे कम तापमान 2.0 डिग्री सेल्सियस नारनौल में दर्ज किया गया।

राजस्थान में शुक्रवार को 12 जिलों में शीतलहर की चेतावनी जारी की गई है। 31 जनवरी से एक मजबूत पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा, जिसके असर से राजस्थान के पूर्वी हिस्सों (जयपुर, भरतपुर, बीकानेर और कोटा संभाग) के जिलों में बादल छा सकते हैं।

स्कूल बस ने बच्ची को कुचला, मौत

परिजन बोले-पिछला और आगे का पहिया ऊपर से निकला

रामगढ़ (अलवर)

अलवर के रामगढ़ के बामनीखेड़ा गांव में निजी स्कूल की बस ने 6 साल की बच्ची की कुचल दिया। हादसे में बच्ची की मौत हो गई। बच्ची इसी बस से उतरी थी। परिजनों ने बस ड्राइवर के खिलाफ लापरवाही से बस चलाने का आरोप लगाया है। हादसा गुरुवार दोपहर करीब 3.30 बजे हुआ। इधर ड्राइवर हादसे के बाद से फरार है।

मृतका के ताऊ बनवारी पुत्र गुरुदयाल ने मामले पर रामगढ़ थाने में रिपोर्ट दी है। रिपोर्ट में बताया- बच्ची राखी पुत्री दीपचंद रामगढ़ के एक निजी स्कूल में पढ़ती थी। राखी रोजाना अपने भाई तन्नू और गांव के अन्य बच्चों के साथ उसी स्कूल बस से स्कूल जाती थी। गुरुवार को भी वह स्कूल गई थी। दोपहर 3.30 बजे स्कूल बस बच्चों को छोड़ने गांव पहुंची। बस से उतरने के बाद तन्नू आगे चला गया, जबकि राखी बस के पीछे खड़ी रही।

बस ड्राइवर ने बिना देखे बस को पीछे की ओर मोड़ दिया। राखी बस के पिछले पहिए के नीचे आ गई। ड्राइवर ने बस रोकने के बजाय आगे बढ़ाने की कोशिश की, जिससे बच्ची का सिर आगे के पहिए के नीचे भी आ गया। जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद ड्राइवर बस लेकर मौके से फरार हो गया।

राजस्थान कांग्रेस ने की 4 जिलाध्यक्षों की घोषणा

लोकसभा टिकट को लेकर विवादों में रहे सुनील शर्मा को जयपुर शहर की कमान

जयपुर

कांग्रेस ने संगठन सृजन अभियान के तहत बचे हुए पांच में से 4 जिलों में जिलाध्यक्षों की नियुक्ति की घोषणा कर दी है। सुनील शर्मा को जयपुर शहर जिलाध्यक्ष नियुक्त किया है। शर्मा पिछले लोकसभा चुनाव में जयपुर से कांग्रेस के कैंडिडेट थे, लेकिन उन्होंने टिकट लौटा दिया था।

पार्टी ने दिग्विजय सिंह पुरावत को प्रतापगढ़, वीरेंद्र सिंह गुर्जर को झालावाड़ और हंसराज मीणा को बारां जिलाध्यक्ष नियुक्त किया है।

राजसमंद में जिलाध्यक्ष की घोषणा अब भी होना बाकी है। इससे पहले नवंबर में कांग्रेस ने 45 जिलाध्यक्षों की नियुक्ति की थी। कांग्रेस संगठन के हिसाब से 50 जिले हैं।

अब तक 49 जिलों में जिलाध्यक्षों की नियुक्ति हो चुकी है। राहुल गांधी के फॉर्मूले पर रायशुमारी करने के बाद जिलाध्यक्ष नियुक्त किए गए हैं।

लोकसभा चुनावों में सुनील शर्मा के आरएसएस समर्थक संस्था जयपुर डायलॉग्स के मंच पर जाने का वीडियो सामने आया था। इस पर शशि थरूर सहित कई कांग्रेस नेताओं ने आपत्ति जताई थी।

फिर सुनील शर्मा का टिकट बदलने की मांग उठी। सोशल मीडिया पर इसे लेकर खूब विवाद हुआ था। विवाद के बाद सुनील शर्मा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करके उम्मीदवारी छोड़ने की पेशकश की थी।

इसके कुछ ही देर बाद पार्टी ने उनकी जगह प्रताप सिंह खाचरियावास को उम्मीदवार बना दिया था।

फंदे पर उल्टा लटका मिला लेपर्ड, मौत

अलवर। वन विभाग के अनुसार लेपर्ड झिरी ग्राम पंचायत के गुवाड़ा में खेत में लगाए एक फंदे में फंस गया था। यह फंदा खेत मालिक ने जानवरों को दूर रखने के लिए लगाया था। बॉडी रिकवर करने वाली टीम के डॉ. मनोज मीणा ने बताया कि रस्से के फंदे में फंसने के बाद लेपर्ड पेड़ पर चढ़ गया। इसी दौरान फंदा पेड़ की डाल पर अटक गया। करीब तीन से चार घंटे तक लेपर्ड लटका रहा। फंदा पेट पर कसने से उसका दम घुट गया। घटना प्रतापगढ़ के गुवाड़ा गांव में 26 जनवरी शाम की है, लेकिन अधिकारियों ने 28 जनवरी को इसकी जानकारी दी।

अजित पवार पंचतत्व में विलिन, उमड़ा जनसैलाब

बेटों ने मुखाग्नि दी, गन सैल्यूट दिया गया, शाह और शरद पवार मौजूद रहे

बारामती/मुंबई

बारामती के काटेवाड़ी स्थित विद्या प्रतिष्ठान मैदान में गुरुवार को महाराष्ट्र के पूर्व डिप्टी सीएम अजित पवार का अंतिम संस्कार हो गया। उनके दोनों बेटों पार्थ और जय पवार ने मुखाग्नि दी।

पत्नी सुनेत्रा पवार ने पति के पार्थिव शरीर पर गंगाजल चढ़ाकर

अंतिम विदाई दी। इस मौके पर चाचा शरद पवार और उनकी बेटी सुप्रिया सुले, गृह मंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे।

अंतिम संस्कार में महाराष्ट्र के अलावा दूसरे राज्यों से भी लोग पहुंचे। बारामती में देर रात से लोगों का पहुंचना शुरू हो गया था। सुबह के वक्त कई इलाकों में जाम की स्थिति बन गई।

समर्थक बाइक, ट्रैक्टर-ट्रॉली और बस से पहुंचे। अंतिम यात्रा में एक से दो किमी तक तक लोग ही लोग नजर आ रहे थे।

पवार का चार्टर्ड प्लेन बुधवार सुबह बारामती एयरपोर्ट के पास सुबह 8.45 बजे क्रैश हुआ था। वे 66 साल के थे। बारामती एयरपोर्ट पर लैंडिंग के दौरान प्लेन क्रैश हुआ था।

हादसे में पवार के सुरक्षाकर्मी, दो पायलट और एक महिला क्रू समेत 5 लोगों की मौत हुई। पवार 5 फरवरी को पुणे में होने वाले जिला परिषद चुनावों के लिए 4 रैलियों को संबोधित करने वाले थे। पवार के निधन पर महाराष्ट्र में 3 दिन का राजकीय शोक रखा गया है।

देश का 'आर्थिक रिपोर्ट कार्ड' संसद में पेश

भारत का आर्थिक आधार पहले से कहीं अधिक मजबूत

पीएम ने कहा- सरकार की पहचान रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म

नई दिल्ली

पीएम मोदी ने कहा, 'देश का ध्यान बजट की तरफ होना स्वाभाविक है, लेकिन सरकार कि पहचान रही है कि रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफोर्म।

सांसदों को धन्यवाद देता हूं कि वो इस तरफ लगातार काम कर रहे हैं। हमारे हर निर्णय में देश की प्रगति लक्ष्य है। हमारे सारे फैसले ह्यूमन सेंट्रिक हैं। हमारे योजनाएं ह्यूमन सेंट्रिक हैं। हम टेक्नोलॉजी को आत्मसात भी करेंगे, लेकिन साथ-

साथ हम मानव केंद्रित व्यवस्था को कम नहीं आंकेंगे।

भारत की डेमोक्रेसी और डेमोग्राफिक से आज दुनिया की बहुत बड़ी उम्मीद है। विश्व इसका जरूर स्वागत करता है और स्वीकार भी करता है। देश आज आगे बढ़ रहा है। देश आज व्यवधान का नहीं, समाधान की तरफ बढ़ रहा है। आज भूमिका व्यवधान के माध्यम से रोकर बैठने की नहीं, हिम्मत के साथ समाधान वाले फैसले लेने की है।

संसद में आज पेश किए गए 'आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26' ने भारतीय अर्थव्यवस्था की मिली-जुली तस्वीर पेश की है। सरकार ने साफ किया है कि अगले वित्त वर्ष में देश की विकास दर 6.8% से 7.2% के बीच रहने का अनुमान है। हालांकि, सर्वे में आगाह किया गया है कि कमजोर होता रुपया और सोने-चांदी की बढ़ती कीमतें महंगाई को थोड़ी हवा दे सकती हैं।

सर्वे के मुताबिक, अगले साल महंगाई दर में थोड़ी बढ़ोतरी हो सकती है, लेकिन यह आरबीआई के तय दायरे में ही रहेगी। रुपये में गिरावट आने से विदेश से सामान मंगाना महंगा हो सकता है, जिसे 'इम्पोर्टेड इन्फ्लेशन' कहा जाता है। इसके अलावा सोना, चांदी और तांबे जैसी धातुओं की कीमतें ऊंची बनी रहेंगी, जिससे कोर इन्फ्लेशन पर दबाव रहेगा।

अच्छी खबर यह है कि ग्लोबल मार्केट में कच्चे तेल और अन्य कमोडिटी के दाम घट रहे हैं। साथ ही, अच्छी फसल के कारण खाने-पीने की चीजों के दाम भी काबू में रहने की उम्मीद है, जो महंगाई को ज्यादा बढ़ने नहीं देंगे।

सर्वे और हालिया व्यापार समझौतों का सीधा असर भारतीय कंपनियों पर भी दिखने वाला है। भारत-यूरोपीय संघ के बीच हुए मुक्त व्यापार समझौते को लेकर भारतीय ऑटो सेक्टर सतर्क हो गया है।

सस्ती होंगी विदेशी कारें: यूरोप से आने वाली कारों पर आयात शुल्क 110% से घटकर 10% होने जा रहा है। जानकारों के मुताबिक, इससे टाटा मोटर्स और महिंद्रा जैसी देसी कंपनियों को यूरोपीय कंपनियों से कड़ी टक्कर मिल सकती है।

वाइन इंडस्ट्री: इस समझौते से यूरोप की वाइन सस्ती होगी, जिसका असर भारत की प्रमुख वाइन कंपनी 'सुला विनयार्ड्स' पर पड़ सकता है।

महंगाई के काबू में रहने और ग्रोथ को सहारा देने के लिए आरबीआई अगले हफ्ते ब्याज दरों में 0.25% की कटौती कर सकता है।

खान विभाग की लैब में लगेगी डब्ल्यूडी- एक्सआरएफ मशीन

60 तरह के खनिजों की होगी जांच

उदयपुर

खान एवं भूविज्ञान निदेशालय की ओर से खनिजों की जांच के लिए अत्याधुनिक तकनीक डब्ल्यूडी-एक्सआरएफ (वेवलेंथ डिस्पर्सिव एक्स-रे फ्लोरोसेंस) मशीन प्रयोगशाला में स्थापित की जाएगी। इसके लिए विभाग ने मशीन की आपूर्ति और स्थापना को लेकर टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस परियोजना पर कुल 4.25 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे, जिसमें सभी एक्सेसरीज और पांच वर्षों का मेंटेनेंस भी शामिल रहेगा। विभाग का उद्देश्य इस हाईटेक मशीन के जरिए खनिज नमूनों का तेज, सटीक और उच्च गुणवत्ता वाला रासायनिक विश्लेषण करना है। इससे राज्य में खनिज अन्वेषण, गुणवत्ता नियंत्रण और अनुसंधान कार्यों को नई मजबूती मिलेगी।

राजस्थान में यह पहली बार होगा जब माइनिंग विभाग अपनी प्रयोगशाला में इस स्तर की अत्याधुनिक डब्ल्यूडी-एक्सआरएफ मशीन स्थापित करेगा। अभी तक यह सुविधा केवल जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया और इंडियन ब्यूरो ऑफ माइंस के पास ही उपलब्ध है। खान विभाग के भू-वैज्ञानिकों के पास फिलहाल ईडी-एक्सआरएफ मशीन है, जो 20 से 30 लाख रुपए की लागत वाली पोर्टेबल मशीन होती है। हाल ही में विभाग ने तकनीकी कर्मचारियों को यह मशीन उपलब्ध कराई है।

जम्मू-कश्मीर व पहाड़ी राज्यों में बर्फबारी के चलते श्रीनगर-जम्मू नेशनल हाईवे बंद

जम्मू (एजेंसी)। लगातार हो रही बर्फबारी के चलते श्रीनगर-जम्मू नेशनल हाईवे बंद हो गया। जम्मू-कश्मीर के सोनमर्ग में लगातार बर्फबारी से मंगलवार रात हिमस्खलन आया। एवलांच (हिमस्खलन) में फिलहाल किसी की मौत या घायल होने की सूचना नहीं है। कई होटलों को नुकसान पहुंचा है। मीडिया रिपोर्ट में अधिकारियों के हवाले से बताया गया है कि एवलांच मंगलवार रात 10.12 बजे मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले में सोनमर्ग रिजॉर्ट में हुआ। बचाव टीमें घटनास्थल पर पहुंची। अधिकारियों ने बताया कि वे स्थिति पर नजर रखे हुए हैं। जम्मू-कश्मीर और अन्य पहाड़ी राज्यों में लगातार बर्फबारी जारी है। इसके देखते हुए मौसम विभाग ने एवलांच का अलर्ट जारी किया था। जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने गंदरबल, अनंतनाग, बांदीपोरा, बारामूला, कुलगाम और कुपवाड़ा समेत कश्मीर के 11 जिलों और जम्मू क्षेत्र के डोडा, किश्तवाड़, पुंछ, राजौरी और रामबन के लिए हिमस्खलन की चेतावनी दी थी। मंगलवार को भारी बर्फबारी के कारण जम्मू-श्रीनगर हाईवे बंद रहा। इसके साथ श्रीनगर एयरपोर्ट पर सभी फ्लाइट्स रद्द होने से लोग परेशान हुए। इमरजेंसी सेवाओं और सशस्त्र बलों की आवाजाही में भी इससे रुकावट आई। अधिकारियों ने बताया कि बचाव और सड़क साफ करने का अभियान जारी जारी है। श्रीनगर एयरपोर्ट पर आने और जाने वाली 29-29 फ्लाइट्स रद्द कर दी गईं। अधिकारियों ने बताया कि लगातार बर्फबारी के कारण रनवे ऑपरेशन के लिए असुरक्षित हो गया था। रिपोर्ट के मुताबिक अधिकारियों ने बताया कि काजीगुंड और बनिहाल के बीच बर्फ जमा होने के कारण श्रीनगर-जम्मू नेशनल हाईवे ट्रैफिक के लिए बंद कर दिया गया था। बर्फ हटाने का काम जारी रहने के बावजूद हाईवे पर ट्रैफिक संचालन की अनुमति नहीं दी जा रही थी। अधिकारियों ने बताया कि बर्फबारी के कारण ट्रेन सेवाएं भी प्रभावित हुईं। बनिहाल और बडगाम के बीच कुछ ट्रेनें रद्द कर दी गईं। ट्रैक साफ होने के कुछ घंटों बाद ऑपरेशन फिर से शुरू हो गए। जिला प्रशासन और पुलिस ने जनता की मदद के लिए कंट्रोल रूम और हेल्पलाइन नंबर स्थापित किए हैं। मौसम विभाग ने अधिकांश जगहों पर हल्की बारिश या बर्फबारी और कुछ इलाकों में गरज या तेज हवाएं चल सकती हैं। बुधवार को भी हल्की बारिश हो सकती है।

गुरुग्राम में कई बड़े स्कूलों को बम से उड़ाने का आया मेल, मचा हड़कंप, बच्चों को बाहर निकाला

गुरुग्राम (एजेंसी)। गुरुग्राम के बड़े और नामी स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। धमकी भरा ईमेल मिलने के बाद स्कूल प्रबंधन और प्रशासन में हड़कंप मच गया। एहतियात के तौर पर स्कूलों में सर्च अभियान चलाया गया और बच्चों को बाहर निकाला। गुरुग्राम में जिन बड़े स्कूलों को धमकी मिली है, उनमें कुंसकपालन स्कूल, लैंसर्स स्कूल और हेरिटेज एक्सपीरिएंशियल लर्निंग स्कूल और बादशाहपुर पाथवेस स्कूल, शालोम हिल्स स्कूल, शेरवुड कान्वेंट स्कूलों को बम धमकी वाला ईमेल मिला है। सूचना मिलते ही पुलिस टीमों ने तुरंत मौके पर पहुंचकर सुरक्षा प्रोटोकॉल सक्रिय कर दिए। एसडीआरएफ की टीम भी सहायता के लिए बुलाई गई। जांच कार्य में जुटी गुरुग्राम पुलिस सभी स्कूलों तलाशी अभियान चलाया। लेकिन कोई संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, लेकिन स्थिति पर प्रशासन की कड़ी नजर रखे हुए है। छात्रों-स्टाफ की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सभी सावधानियां बरती जा रही हैं। पुलिस की तरफ से जांच जारी है। बता दें बुधवार सुबह 7 बजे कुंसकपालन स्कूल गुरुग्राम में बम की धमकी भरी मेल मिले, जिसमें लिखा था कि हरियाणा खालिस्तान है, गुरुग्राम स्कूल में दोपहर 1.11 बजे बम धमाका होगा। इसी प्रकार से लांसर इंटरनेशनल स्कूल सैक्टर 53 गुरुग्राम, शेरवुड स्कूल डीएलएफ फेस-2 गुरूग्राम अमेरिकन स्कूल डीएलएफ फेस-2 गुरुग्राम, लॉटस वैली स्कूल सैक्टर 50 गुरुग्राम, श्रीराम स्कूल सैक्टर 29 गुरूग्राम, स्कोटिस स्कूल सैक्टर 57 गुरुग्राम बम से उडाने की धमकी भरी मेल मिली है। ज्यादातर स्कलों में एम्बर डरहम से मेल आई है, जबकि कुछ स्कूलों में नॉवेल्ला से मेल मिली है। सभी मेल में कैंटेट सेम है जिन-जिन स्कूलों में मेल आई। सभी स्कलों की छुटटी कर दी गई।

पटना सिविल कोर्ट में पिस्टल लेकर घुस रहे दो बदमाश पकड़े, सुरक्षा में बड़ी चूक सामने आई

पटना (एजेंसी)। पटना सिविल कोर्ट परिसर में बुधवार सुबह हथियार लेकर घुसने की कोशिश करने वाले दो युवकों में से एक को सुरक्षाकर्मियों ने पकड़ा, जबकि दूसरा फरार हो गया है। घटना से कोर्ट परिसर में सनसनी फैल गई और अधिवक्ताओं में डर का माहौल बन गया। मौके पर पुलिस की टीम पहुंची और पकड़े गए आरोपी पीयूष (हाजीपुर निवासी) से पूछताछ कर रही है। पुलिस फिलहाल दूसरे फरार आरोपी की तलाश में लगी हुई है। पुलिस ने बताया कि सुबह 11 बजे गेट पर दो युवकों की चेकिंग के दौरान संदेह होने पर एक को पकड़ा गया। वरीय अधिकारी उससे पूछताछ कर रहे हैं। दोनों युवकों के उद्देश्य और टारगेट का पता लगाया जा रहा है। वहीं पुलिस दूसरे आरोपी की खोज में लगी हुई है। पटना सिविल कोर्ट के वकील ऋषिकेश नारायण सिंहा ने कहा कि यह सुरक्षा की बड़ी चूक है। उन्होंने सुरक्षाकर्मियों की सतर्कता की सराहना कर कहा कि अगर वे नहीं होते, तब गंभीर हादसा हो सकता था। वकील ने कोर्ट परिसर में सुरक्षा बढ़ाने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इस घटना ने परिसर में सुरक्षा व्यवस्था की कमियों को उजागर किया है और सभी की चिंता बढ़ा दी है।

तेलंगाना में साइबर अपराध से जुड़े केरल-बेंगलुरु के छह आरोपी गिरफ्तार

-कमीशन लेकर अपने बैंक खातों को जालसाजों को कराए उपलब्ध

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना साइबर सुरक्षा ब्यूरो ने केरल और बेंगलुरु के छह लोगों को गिरफ्तार किया है। ब्यूरो ने कहा है कि आरोपियों में पांच ऐसे 'म्यूल' खाताधारक शामिल हैं जिन्होंने कमीशन लेकर अपने बैंक खातों को मुख्य जालसाजों को इस्तेमाल करने के लिए उपलब्ध कराया है। इन खातों का इस्तेमाल साइबर अपराधों के जरिए मिले धन के लेन-देन में किया गया, जबकि इसमें एक एजेंट भी शामिल है। बता दें 'म्यूल' खाते ऐसे बैंक खाते होते हैं जिसका इस्तेमाल अपराधी, खाताधारक की जानकारी से या जानकारी के बगैर, अवैध धन प्राप्त करने, धन अंतरित करने या उसे वैध बनाने के लिए करते हैं। तेलंगाना में दर्ज तीन मामलों में छह आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जो मुख्य जालसाजों द्वारा किए गए 'डिजिटल अरेस्ट' धोखाधड़ी और ऑनलाइन ट्रेडिंग धोखाधड़ी से संबंधित थे। टीजीसीएसबी की निदेशक ने बताया कि दो टीम ने छह व्यक्तियों को गिरफ्तार किया जिनमें से तीन केरल के और तीन बेंगलुरु से हैं।

इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी से हो रही मौतों के मामले में हाईकोर्ट सख्त

-रिपोर्ट को बताया 'आई-वॉश', स्वतंत्र जांच आयोग गठन करने का दिया आदेश

इंदौर (एजेंसी)। मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के भागीरथपुरा में दूषित पानी से हो रही मौतों के मामले में हाईकोर्ट ने शासन और नगर निगम की रिपोर्ट को 'आई-वॉश' करार दिया है। कोर्ट ने माना कि यह मामला गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थिति से जुड़ा है और स्वच्छ पेयजल का अधिकार जीवन के अधिकार का हिस्सा है। मामले की गंभीरता को देखते हुए हाईकोर्ट ने स्वतंत्र जांच आयोग के गठन का आदेश दिया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक मंगलवार को भागीरथपुरा में एक और व्यक्ति की मौत हो गई, जिससे अब तक मरने वालों की संख्या 29 हो गई है। मृतक खूबचंद (63) पिछले 15 दिनों से उल्टी-दस्त से पीड़ित थे। परिजनों के मुताबिक वे पहले स्वस्थ थे और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से इलाज के बावजूद उनकी जान नहीं बच सकी। भागीरथपुरा मामले में दायर जनहित याचिकाओं पर हाईकोर्ट की इंदौर बेंच में ढाई घंटे से ज्यादा समय तक सुनवाई की। शासन की ओर से कोर्ट में 23 मौतों की रिपोर्ट पेश की गई, जिसमें 16 मौतें दूषित पानी से होनी बताई गई। वहीं 4 मौतों को लेकर असमंजस और 3 मौतें दूषित पानी से नहीं होना बताया।

रिपोर्ट के मुताबिक हाईकोर्ट ने मौतों के आंकड़ों को लेकर गंभीर असहमति दर्ज की। जहां सरकारी रिपोर्ट में 16 मौतें जलजनित बीमारी से मानी गईं, वहीं याचिकाकर्ताओं ने करीब 30 मौतों का दावा किया। कोर्ट ने कहा कि रिपोर्ट में मौतों के स्पष्ट कारण दर्ज नहीं हैं और पर्याप्त वैज्ञानिक व दस्तावेजी आधार का अभाव है। कोर्ट ने आदेश दिया कि भागीरथपुरा में दैनिक जल गुणवत्ता जांच और नियमित स्वास्थ्य शिविर लगातार जारी रखे जाएं। जांच आयोग को चार सप्ताह में अंतरिम रिपोर्ट सौंपनी होगी। मामले की अगली सुनवाई 5 मार्च को होगी।

न्यायमूर्ति विजय कुमार शुक्ला और न्यायमूर्ति आलोक अवस्थी की खंडपीठ ने रिपोर्ट में प्रयुक्त 'वर्बल ऑटॉप्सी' शब्द पर भी आपत्ति जताई और पूछा कि यह कोई मान्य मेडिकल शब्द है या अधिकारियों द्वारा गढ़ा गया है। कोर्ट ने स्पष्ट कहा कि पेश की गई रिपोर्ट विश्वसनीय नहीं है और इसे केवल 'आई-वॉश' माना जा सकता है।

यूजीसी के नए नियमों पर एकमत नहीं है पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह का परिवार

लखनऊ (एजेंसी)। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के प्रमोशन ऑफ इक्विटी रेगुलेशंस 2026 को लेकर भाजपा के पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह और उनके दो बेटों के बीच विचार एकमत नहीं है। इस मुद्दे पर जहां पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि इस पर अध्ययन के बाद सोच समझकर अपनी राय रखेंगे क्योंकि ये बेहद संवेदनशील मुद्दा है। उन्होंने कहा कि वह इसका अध्ययन कर रहे हैं और जो भी बोलेंगे बहुत सोच विचार करके ही बोलेंगे। बता दें कि यूजीसी के नए नियमों को लेकर इस समय देश और प्रदेश के विभिन्न शहरों में विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। मंगलवार को भी लखनऊ गोरखपुर, बस्ती सहित कई जिलों में छात्रों-युवाओं ने प्रदर्शन किए। विरोध-प्रदर्शनों के इस माहौल में लोग जनप्रतिनिधियों से उनका स्टैंड पूछ रहे हैं। इसी क्रम में बृजभूषण शरण सिंह से भी इस पर सवाल किया गया तो उन्होंने अध्ययन करने की बात कहकर जवाब को टाल दिया। वहीं, इस मुद्दे पर उनके परिवार में ही दो तरह की स्थिति देखने को मिली है। एक ओर यूजीसी के नियमों में किए गए बदलाव वाली 31 सदस्यीय संसदीय समिति का हिस्सा ब्रजभूषण के सांसद बेटे करण भूषण सिंह थे। वहीं उनके विधायक पुत्र प्रतीक भूषण सिंह ने इस नियम को लेकर इसके उलट प्रतिक्रिया दी है। प्रतीक ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर लिखा कि इतिहास के दोहरे मापदंडों पर अब गहन विवेचना होनी चाहिए जहां बाहरी आक्रांताओं और उपनिवेशी ताकतों के भीषण अत्याचारों को अतीत की बात कहकर भुला दिया जाता है जबकि भारतीय समाज के एक वर्ग को निरंतर ऐतिहासिक अपराधी के रूप में चिन्हित कर वर्तमान में प्रतिशोध का निशाना बनाया जा रहा है। बता दें कि प्रतीक भूषण सिंह गोंडा की सदर सीट से विधायक हैं। उनका पक्ष सामने आने के बाद इस पर लोगों की अलग-अलग तरह की प्रतिक्रियाएं भी आ रही हैं। उधर, यूजीसी के नए नियमों को लेकर सवाल पूछे जाने पर विधायक प्रतीक भूषण के पिता और पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने कहा था कि यूजीसी एक बड़ा और गंभीर विषय है। मैं इसका अध्ययन कर रहा हूं। जो कुछ भी बोलूंगा सोच-समझकर बोलूंगा। यह समाज से जुड़ा मुद्दा है। सामंजस्य निकलना जरूरी है।

राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा- शुभांशु शुक्ला की अंतरिक्ष यात्रा शुरुआत है एक ऐतिहासिक सफर की

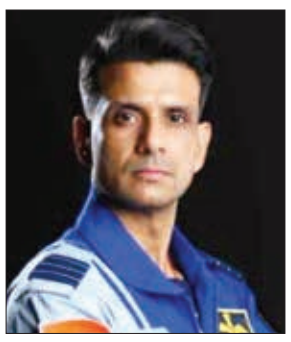

नई दिल्ली(एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को कहा कि अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला की अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) तक की यात्रा भारत के अंतरिक्ष इतिहास में एक नए और ऐतिहासिक अध्याय की शुरुआत है। संसद के बजट सत्र के पहले दिन लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने भारत की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमताओं और भविष्य की महत्वाकांक्षी योजनाओं पर विस्तार से प्रकाश डाला।

राष्ट्रपति मुर्मू ने अपने अभिभाषण में कहा, शुभांशु शुक्ला का अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन तक पहुंचना एक ऐतिहासिक यात्रा की शुरुआत है। आने वाले वर्षों में भारत अपना स्वयं का अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियां देश के वैज्ञानिकों, इंजीनियरों और युवा प्रतिभाओं की मेहनत और संकल्प का परिणाम हैं। उन्होंने कहा कि अब अंतरिक्ष केवल अनुसंधान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि अंतरिक्ष पर्यटन भी धीरे-धीरे भारतीयों की पहुंच में आता जा रहा है। राष्ट्रपति के इस बयान को भारत के उभरते अंतरिक्ष उद्योग और निजी क्षेत्र की भागीदारी के संदर्भ में अहम माना जा रहा है।

राष्ट्रपति मुर्मू ने गगनयान मिशन का उल्लेख करते हुए कहा कि देश पूरे उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ इस महत्वाकांक्षी मानव अंतरिक्ष मिशन पर कार्य कर रहा है। उन्होंने विश्वास जताया कि गगनयान मिशन भारत को अंतरिक्ष में मानव भेजने वाले चुनिंदा देशों की श्रेणी में शामिल करेगा। इस दौरान लोकसभा कक्ष में उपस्थित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित कई सांसदों और नेताओं ने मेजें थपथपाकर राष्ट्रपति के संबोधन का स्वागत किया।

ममता ने इतने साल शासन के बाद भी युवाओं के लिए कुछ भी नहीं किया: अग्निमित्रा पॉल

दुर्गापुर (एजेंसी)। बंगाल से भाजपा विधायक अग्निमित्रा पॉल ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि इतने सालों के शासनकाल में मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आज तक जनता के कल्याण के लिए कोई काम नहीं किया। उन्होंने कहा कि 2008 में जब टाटा का नैनो प्रोजेक्ट बंगाल के सिंगूर में आया था, तब उस कंपनी को वापस भेज दिया था। तब ममता बनर्जी ने कहा था कि हम प्रदेश के युवाओं को बड़ी संख्या में रोजगार दूंगी। लेकिन, इतने सालों के शासनकाल में उनकी सरकार ने युवाओं के लिए कुछ नहीं किया। भाजपा विधायक ने कहा कि इन लोगों ने सत्ता में रहते हुए युवाओं को रोजगार देने का वादा किया था। लेकिन, इतने सालों के शासनकाल में इन लोगों ने आज तक किसी भी युवा को रोजगार देने का फैसला नहीं किया। अगर दिया होता, आज की तारीख में युवाओं को रोजगार के लिए दूसरे राज्यों में नहीं जाना पड़ता। ममता बनर्जी ने सिर्फ प्रदेश के लोगों के साथ छलावा किया है।

उन्होंने कहा कि ममता ने लगातार प्रदेश में निवेश से संबंधित कई तरह के कार्यक्रम का आयोजन किया। इन कार्यक्रमों में दावा किया गया है कि हम प्रदेश में निवेश को लाने का मार्ग प्रशस्त कर रहे है। लेकिन, आज तक प्रदेश में किसी भी प्रकार के निवेश को नहीं लाया गया। लेकिन, स्थिति ऐसी बनी हुई है कि युवाओं को रोजगार के लिए दूसरे राज्यों की शरण लेनी पड़ रही है और मुख्यमंत्री ममता बनर्जी इस दिशा में पूरी तरह से उदासीन बनी हुई हैं।

उन्होंने कहा कि अब प्रधानमंत्री मोदी हमारे बंगाल में आए। उन्होंने हमसे वादा किया है कि आगामी दिनों में पश्चिम बंगाल को उत्पादन का केंद्र बनाया जाएगा। इससे अन्य लोगों को रोजगार मिलेगा। हमारे राज्य में प्रचुर मात्रा में संसाधन है, जिनका इस्तेमाल किया जाएगा। लेकिन, अफसोस की बात है कि ममता बनर्जी को प्रदेश की जनता ने मौका दिया। आज तक उन्होंने प्रदेश की जनता के हित के लिए कोई कदम नहीं उठाया।

जयपुर- पैसेंजर्स से भरे एयर इंडिया प्लेन की लैंडिंग फेल, रनवे को टच कर फिर उड़ा, फ्लाइट में थे कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर रंधावा

नई दिल्ली (एजेंसी)। जयपुर। दिल्ली से जयपुर पहुंची एयर इंडिया की फ्लाइट एआई-1719 की लैंडिंग फेल होने से दहशत फैल गई। बुधवार दोपहर को विमान रनवे को टच करते ही वापस उड़ गया। जानकारी के अनुसार फ्लाइट में कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा भी थे। हालांकि, करीब 10 मिनट बाद दूसरे प्रयास में विमान की सुरक्षित लैंडिंग करा ली गई। जयपुर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पहले भी लैंडिंग फेल होने की घटनाएं सामने आई हैं। दरअसल, फ्लाइट एआई-1719 ने दोपहर करीब 1 बजकर 5 मिनट पर जयपुर एयरपोर्ट पर लैंडिंग का प्रयास किया था। इस दौरान पायलट ने रनवे को छूते ही विमान को दोबारा हवा में उठा लिया। अस्थिर अप्रोच के कारण पायलट ने सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए गो-अराउंड का फैसला लिया। पहले प्रयास के बाद विमान ने एयरपोर्ट के ऊपर कुछ देर तक गोल चक्कर लगाया। करीब 10 मिनट बाद पायलट ने सफल लैंडिंग की। इस फ्लाइट में 135 पैसेंजर्स थे। सूत्रों के मुताबिक, इस फ्लाइट में कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधावा भी सवार थे।

ब्राह्मण समाज को एकजुट करने में जुटे थे अग्निहोत्री, अब इंटेलिजेंस पर उठे सवाल

बरेली(एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के बरेली जिले में सिटी मजिस्ट्रेट के पद पर तैनात रहे अलंकार अग्निहोत्री का इस्तीफा इन दिनों देशव्यापी चर्चा का केंद्र बना हुआ है। प्रशासनिक पद पर रहते हुए समाज सेवा और एक विशिष्ट वर्ग को संगठित करने की उनकी गतिविधियों ने शासन से लेकर आम जनता तक सबको हैरान कर दिया है। बताया जा रहा है कि अलंकार अग्निहोत्री काफी समय से ब्राह्मण समाज को एकजुट करने के मिशन पर काम कर रहे थे, जिसकी भनक स्थानीय प्रशासन और खुफिया विभाग को अंत तक नहीं लग सकी।

सूत्रों के अनुसार, बरेली में तैनाती के दौरान ही उन्होंने ब्राह्मण समाज के उत्थान के लिए सक्रियता बढ़ा दी थी। चौंकाने वाली बात यह है कि सिटी मजिस्ट्रेट जैसे संवेदनशील पद पर रहते हुए वे अपने कार्यालय में ही समाज से जुड़े नेताओं और युवाओं के साथ नियमित बैठकें करते थे। इन चर्चाओं में ब्राह्मण समाज की मजबूती और संगठन विस्तार को लेकर रणनीति बनाई जाती थी। प्रशासनिक गलियारों में यह भी चर्चा है कि कई अन्य ब्राह्मण अधिकारी भी उनके निरंतर संपर्क में थे। समाज को डिजिटल माध्यम से जोड़ने के लिए उन्होंने कई व्हाट्सएप ग्रुप भी बनाए थे। हाल ही में मालवीय जयंती पर जीआईसी ऑडिटोरियम में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम के बाद समाज में उनकी लोकप्रियता चरम पर पहुंच गई और उन्हें एक नई पहचान मिलने लगी।

इस्तीफे की पटकथा अचानक नहीं लिखी गई। जानकारी के मुताबिक, अग्निहोत्री ने करीब पांच महीने पहले ही अपने करीबियों के बीच पद छोड़ने की इच्छा जताई थी। दिसंबर में भी इस पर विमर्श हुआ, लेकिन अंततः उन्होंने 26 जनवरी का दिन अपने त्यागपत्र के लिए चुना। इस पूरे मामले ने उत्तर प्रदेश के खुफिया तंत्र यानी स्थानीय खुफिया इकाई (एलआईयू) की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। एक मजिस्ट्रेट स्तर का अधिकारी अपने कार्यालय का उपयोग सामाजिक बैठकों के लिए करता रहा, लेकिन एलआईयू को इसकी जानकारी नहीं हुई, इसे बड़ी विफलता माना जा रहा है। अब शासन स्तर पर इस इंटेलिजेंस फेल्योर की समीक्षा की जा रही है और माना जा रहा है कि लापरवाही बरतने वाले अधिकारियों पर बड़ी गाज गिर सकती है। अलंकार अग्निहोत्री का इस्तीफा ऐसे समय में आया है जब देश में आरक्षण और यूजीसी के नियमों को लेकर नई बहस छिड़ी हुई है। डैमेज कंट्रोल न हो पाने और इस पूरी प्रक्रिया के दौरान खुफिया इनपुट की कमी ने सरकार के लिए भी असहज स्थिति पैदा कर दी है।

मायावती ने जातिवादी मानसिकता वालों को दी नसीहत, सरकार को भी घेरा

लखनऊ (एजेंसी)। बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा उच्च शिक्षण संस्थानों में जातिवादी भेदभाव को समाप्त करने के लिए बनाए गए नए नियमों का समर्थन किया है। उन्होंने इक्विटी कमेटी (समता समिति) के गठन का विरोध करने वालों पर कड़ा प्रहार करते हुए इसे संकीर्ण मानसिकता का परिचायक बताया है। मायावती ने सोशल मीडिया के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि देश के सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों में जातिगत भेदभाव के निराकरण हेतु यूजीसी द्वारा लाए गए नए नियमों का कुछ लोग विरोध कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि सामान्य वर्ग के केवल वे ही लोग इसका विरोध कर रहे हैं जो जातिवादी मानसिकता से ग्रसित हैं और इसे अपने विरुद्ध एक षड्यंत्र मान रहे हैं, जो पूरी तरह अनुचित है।

हालांकि, बसपा सुप्रीमो ने सरकार की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि ऐसे संवेदनशील नियमों को लागू करने से पहले यदि सभी पक्षों को विश्वास में लिया जाता, तो देश में सामाजिक तनाव की स्थिति पैदा नहीं होती। उन्होंने सरकारों और संस्थानों को सलाह दी कि भविष्य में इस तरह के कदम उठाते समय सामाजिक सामंजस्य का ध्यान रखा जाना चाहिए। मायावती ने दलित और पिछड़ा वर्ग के छात्रों व नागरिकों को भी सतर्क रहने की नसीहत दी। उन्होंने अपील की कि इन वर्गों के लोगों को अपने ही समाज के स्वार्थी और बिकाऊ नेताओं के भड़काऊ बयानों में नहीं आना चाहिए, जो अपनी राजनीति चमकाने के लिए ऐसे मुद्दों का सहारा लेते हैं। गौरतलब है कि यूजीसी ने 13 जनवरी 2026 को नए दिशा-निर्देश जारी किए थे, जिसके तहत एससी, एसटी और ओबीसी छात्रों के साथ होने वाले भेदभाव को रोकने के लिए विशेष समितियों, हेल्पलाइन और निगरानी दलों की स्थापना अनिवार्य कर दी गई है। इन नियमों को लेकर उत्तर प्रदेश सहित देश के विभिन्न हिस्सों में विरोध के स्वर भी उठ रहे हैं।

चारधाम कोई पिकनिक स्पॉट नहीं, यहां केवल हिंदू, सिख, बौद्ध और जैन को ही मिलेगी एंट्री

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के विश्वप्रसिद्ध चारधामों-बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री में गैर-हिंदुओं के प्रवेश को लेकर चल रही चर्चाओं के बीच मंदिर समितियों ने अपनी स्थिति पूरी तरह स्पष्ट कर दी है। बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति (बीकेटीसी) और गंगोत्री मंदिर समिति की ओर से कहा गया है कि इन पवित्र धामों में केवल उन्हीं लोगों को प्रवेश मिलेगा जो सनातन परंपरा और देवी-देवताओं में अटूट आस्था रखते हैं। इस निर्णय के तहत हिंदुओं के साथ-साथ सिख, जैन और बौद्ध धर्मावलंबियों को भी दर्शन की अनुमति होगी।

बीकेटीसी के अध्यक्ष हेमंत द्विवेदी ने इस फैसले को स्पष्ट करते हुए कहा कि केदारनाथ और बदरीनाथ धाम कोई पिकनिक स्पॉट या सामान्य पर्यटन स्थल नहीं हैं। ये सनातन परंपरा के सर्वोच्च आध्यात्मिक केंद्र हैं, जिनकी अपनी एक गरिमा और मर्यादा है। उन्होंने संवैधानिक तर्कों का हवाला देते हुए कहा कि संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत सिख, जैन और बौद्ध धर्म को सनातन परंपरा का अभिन्न अंग माना गया है। वहीं, अनुच्छेद 26 धार्मिक संस्थाओं को अपनी परंपराओं, पूजा-पद्धति और अनुशासन की रक्षा करने का पूर्ण अधिकार प्रदान करता है। द्विवेदी ने जोर देकर कहा कि यह निर्णय किसी विशेष समुदाय के खिलाफ नहीं है, बल्कि सदियों पुरानी आस्था, अनुशासन और धामों की शुद्धता को संरक्षित करने के लिए लिया गया है। उत्तराखंड में पर्यटन के लिए हजारों अन्य स्थल खुले हैं, लेकिन धामों की मूल धार्मिक पहचान और आध्यात्मिक स्वरूप से समझौता नहीं किया जा सकता। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मंदिरों में गैर-हिंदुओं का प्रवेश पहले से ही प्रतिबंधित रहा है; यह कोई नया नियम नहीं बल्कि सदियों पुरानी परंपरा का औपचारिक ऐलान मात्र है। जिस तरह मस्जिद और चर्च के अपने नियम और संस्कार होते हैं, उसी तरह हिंदू मंदिरों को भी अपनी पवित्रता तय करने का अधिकार है। गंगोत्री मंदिर समिति के अध्यक्ष सुरेश सेमवाल ने भी इसी सुर में अपनी बात रखते हुए कहा कि जो लोग हिंदू धर्म का सम्मान करते हैं और सनातन संस्कृति में विश्वास रखते हैं, उनका स्वागत है। विशेष रूप से सिख समाज के लोग जो हमेशा से हिंदू परंपराओं के करीब रहे हैं, वे दर्शन के लिए आ सकते हैं। वर्तमान में गंगोत्री और यमुनोत्री मंदिर समितियों ने गैर-हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध संबंधी औपचारिक प्रस्ताव भी पारित कर दिया है। इस निर्णय का उत्तराखंड की विभिन्न धार्मिक संस्थाओं और पुरोहित समाज ने स्वागत किया है। श्री केदार सभा और श्री डिमरी धार्मिक केंद्रीय पंचायत सहित तमाम सनातन धर्मावलंबियों ने इसे धर्म की रक्षा के लिए लिया गया एक ऐतिहासिक कदम बताया है। स्थानीय तीर्थ पुरोहितों का मानना है कि धामों की दीक्षा और संप्रदाय आधारित व्यवस्था को बनाए रखना ही देवभूमि की असली पहचान है।

वक्फ बोर्ड ने फैसले का किया स्वागत

इस संवेदनशील मुद्दे पर उत्तराखंड वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष शादाब शम्स ने भी मंदिर समितियों के फैसले का स्वागत करते हुए पुरजोर समर्थन किया है। उन्होंने दो टूक कहा कि जिनकी देवी-देवताओं पर आस्था ही नहीं है, उनका चारधाम में आखिर क्या काम? शम्स ने कहा कि वर्तमान समय में सनातन संस्कृति पर वैश्विक स्तर पर प्रहार हो रहे हैं, ऐसे में इसे संरक्षित करने के लिए कड़े कदम उठाना अनिवार्य है। उन्होंने कहा कि बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री आस्था के केंद्र हैं, पर्यटन के केंद्र नहीं।

न्याय की आस में 218 दिनः अब जयपुर कूच करेंगे जालिया के प्रताड़ित किसान, आत्मदाह की चेतावनी से प्रशासन में हड़कंप

स्मार्ट हलचल | बनेड़ा

जिंदल सॉ लिमिटेड की अवैध खनन गतिविधियों के खिलाफ ग्राम जालिया और महुआखुर्द के किसानों का शांतिपूर्ण महापड़ाव आज 218वें दिन में प्रवेश कर गया है। इतने लंबे संघर्ष और राष्ट्रपति कार्यालय के हस्तक्षेप के बावजूद जिला प्रशासन की संवेदनहीनता से क्षुब्ध होकर अब किसानों ने जल्द हि जयपुर कूच करने का निर्णय लिया है। न्याय न मिलने से क्षुब्ध किसानों ने जयपुर का रास्ता अपनाते हुए महामहिम राज्यपाल से सामूहिक आत्मदाह की अनुमति मांगी थी।

मुख्य घटनाक्रमः

1. शांतिपूर्ण धरने की उपेक्षाः पिछले 218 दिनों से किसान लोकतांत्रिक तरीके से अपनी जायज मांगों को लेकर डटे हुए हैं, लेकिन प्रशासन ने समाधान के बजाय कंपनी को संरक्षण देना जारी रखा है।

2. जयपुर कूच की चेतावनीः न्याय न मिलने से हताश किसानों ने ऐलान किया है कि वे जल्द ही जयपुर की ओर प्रस्थान करेंगे और वहाँ अपनी मांगों को लेकर सामूहिक आत्मदाह जैसा कठोर कदम उठाने को मजबूर होंगे।

3. गंभीर सुरक्षा उल्लंघनः ग्रामीणों का आरोप है कि रिहायशी इलाकों और स्कूलों के पास प्रतिबंधित 'ड्राई ड्रिलिंग' और भारी ब्लास्टिंग का दौर रुक नहीं रहा है। मकानों में दरारें और बच्चों के स्वास्थ्य पर संकट गहराता जा रहा है।

4. संवैधानिक आदेशों की अनदेखीः राष्ट्रपति सचिवालय के पत्र और न्यायालय के आदेशों के बावजूद कार्यवाही न होना प्रशासन की निष्पक्षता पर सवालिया निशान लगाता है।

5. डीजीएमसी की संदेहास्पद भूमिकाः आंदोलनकारियों का कहना है कि डीजीएमसी ने सितंबर 2024 में बिना किसी भौतिक सत्यापन के ब्लास्टिंग की अनुमति दे दी। पिछले 10 महीनों से जिला कलेक्टर के पत्रों का जवाब न देना विभाग की मिलीभगत की ओर इशारा करता है।

6. आबादी पर संकटः 500 मीटर के डेंजर ज़ोन में स्थित 3 बस्तियों और 3 सरकारी स्कूलों के पास हो रही भारी ब्लास्टिंग से मकानों में गहरी दरारें आ चुकी हैं। मासूम स्कूली बच्चों का जीवन हर पल खतरे में है।

किसानों का आह्वानः

किसान प्रतिनिधियों ने कहा है, 'हमने शांति का रास्ता अपनाया, लेकिन हमारी चुप्पी को कमजोरी समझा गया। अब हमारी लड़ाई भीलवाड़ा की सड़कों से निकलकर राजधानी जयपुर तक पहुंचेगी। यदि कोई अनहोनी होती है, तो इसकी समस्त जिम्मेदारी मुख्यमंत्री कार्यालय और भीलवाड़ा जिला प्रशासन की होगी।

गिव अप अभियान में भीलवाड़ा अव्वल, 3.22 लाख अपात्र एनएफएसए से बाहर, 2.55 लाख जरूरतमंदों को मिला हक

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग द्वारा प्रारंभ किया गया 'गिव अप' अभियान लगातार नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। इस अभियान में भीलवाड़ा जिला प्रदेश में अग्रणी बनकर उभरा है। जिले में अब तक 2 लाख 46 हजार 190 लोगों ने स्वेच्छा से एनएफएसए योजना का लाभ त्याग कर सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचय दिया है, जो अपने आप में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है।

इसके साथ ही ई-केवाईसी के माध्यम से 75 हजार 824 लोग एनएफएसए योजना से बाहर हुए हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर 3 लाख 22 हजार 14 अपात्र लाभार्थियों को एनएफएसए योजना से हटाया गया है।

अपात्र लोगों के हटने से विभाग को बड़ी सफलता मिली है, क्योंकि इससे 2 लाख 55 हजार 317 पात्र लेकिन वंचित परिवारों को एनएफएसए योजना में शामिल किया जा सका है। वर्षों से इंतजार कर रहे इन जरूरतमंद परिवारों को अब खाद्य सुरक्षा का लाभ मिल सकेगा।

एक ओर जहां अपात्र लाभार्थियों के हटने से सरकार को खाद्य, गैस, बीमा एवं चिकित्सा सब्सिडी पर होने वाले व्यय में बड़ी बचत होगी, वहीं दूसरी ओर नये जुड़े एनएफएसए लाभार्थियों को इन चारों योजनाओं का समुचित लाभ मिल सकेगा।

'गिव अप' अभियान के अंतर्गत चार पहिया वाहन मालिकों, सरकारी कार्मिकों, आयकर दाताओं तथा एक लाख रुपये से अधिक वार्षिक आय वाले लोगों ने स्वेच्छा से एनएफएसए लाभ छोड़कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाई है। इस पहल ने समाज में सकारात्मक जागरूकता पैदा की है और बड़ी संख्या में लोग ऑनलाइन एवं ऑफलाइन माध्यम से 'गिव अप' कर सामाजिक कर्तव्य की मिसाल कायम कर रहे हैं।

इस अभियान की सफलता में समाज के सभी वर्गों, जनप्रतिनिधियों तथा सोशल, प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वहीं खाद्य विभाग के कार्मिकों एवं उचित मूल्य दुकानदारों ने भी अभियान को जन-जन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई है।

खाद्य विभाग द्वारा एमएसपी पर 100 क्विंटल से अधिक गेहूं बेचने वाले लाभार्थी परिवारों की सूची भी तैयार कर जांच की जा रही है, ताकि अपात्रता की स्थिति में आवश्यक कार्रवाई की जा सके।

विभाग ने स्पष्ट किया है कि यह योजना 28 फरवरी 2026 तक प्रभावी रहेगी। इसके बाद 01 मार्च 2026 से, जो अपात्र लाभार्थी स्वेच्छा से 'गिव अप' नहीं करेंगे, उनसे 30 रुपये 57 पैसे प्रति किलोग्राम गेहूं की दर से खाद्यान्न की वसूली की जाएगी।

अवैध बजरी का 4 हजार टन स्टॉक जब्त

खनन विभाग और पुलिस की संयुक्त कार्यवाही

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

पारोली थाना पुलिस और खनन विभाग की टीम ने संयुक्त रूप से अवैध बजरी पर कार्यवाही करते हुए अवैध बजरी का 4 हजार टन स्टोक जब्त किया है जिससे बजरी माफियाओं में हड़कंप मचा हुआ है । अवैध बजरी का खेल जिले में बखूबी माफियाओं द्वारा खेला जा रहा है पुलिस ओर खनन विभाग द्वारा उन पर लगातार प्रभावी कार्यवाही भी की जा रही है । एसपी धर्मेंद्र सिंह द्वारा जिलेभर में अवैध खनन ओर परिवहन के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है इसी के अंतर्गत पारोली थाना पुलिस ओर खनन विभाग ने छीतर सिंह जी का खेड़ा गांव में दबिश दी । शिकायत मिली थी की यहां भारी मात्रा में अवैध बजरी का स्टॉक जमा किया हुआ है । जिस पर संयुक्त टीम बनाकर कार्यवाही को अंजाम दिया और 4000 टन बजरी को जब्त करते हुए आगे की कार्यवाही शुरू की।

दूसरे दिन भी आया पेंथर का नवजात बच्चा मचा हड़कंप, किया रेस्क्यू

स्मार्ट हलचल

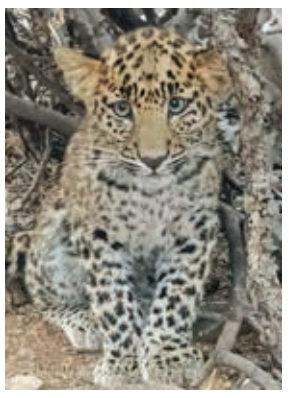

खजुरी। उलेला ग्राम पंचायत के नजदीक सुंदरगढ़ ग्राम में दूसरे दिन भी पैंथर का नवजात देखने को मिला जिससे लोगों मे हड़कंप मच गया घटना की जानकारी वन विभाग अधिकारियों को दी गई साथ ही जहाजपुर पुलिस को सूचना दी घटना स्थल पर वन विभाग के अधिकारी जहाजपुर पुलिस मौके पर पहुंची जहा कड़ी मशक्कत के बाद नवजात शावक को पिंजरे मे कैद कर लिया । वन विभाग के अधिकारी भेरूलाल मीणा ने बताया कि दूसरे दिन भी पेंथर के नवजात को नुवागन माताजी मंदिर के नजदीक आने की सुचना मिली जिसको सफलतापूर्वक रेस्क्यू कर पिंजरे में कैद कर लिया गया और काछोला वन विभाग कार्यालय पर ले जाया गया । आगे उच्च अधिकारियों के आदेश अनुसार जंगल में छोड़ा जाएगा । जन सेवक परमेश्वर मीणा ने बताया कि कुछ दिनों से माता जी के मंदिर के पास पैंथर की आवाज आने जैसी सूचना मिल रही थी बुधवार को एक पैंथर को देखा जिसकी सूचना विभाग को दी । पैंथर जंगल की तरफ चला गया वहीं दूसरे दिन गुरुवार को पैंथर के नवजात की सूचना मिली जिसे वन विभाग के अधिकारियों ने सफलतापूर्वक पकड़ लिया गया समस्त ग्राम वासियों ने पुलिस प्रशासन व वन विभाग अधिकारियों की सराहना करते हुए आभार जताया इस दौरान पैंथर के नवजात को देखने के लिए लोगों का ताँता लग गया।

आई 20 कार से भालू की हुई मौत, दो जने गंभीर घायल

स्मार्ट हलचल

बिजौलियाँ। नेशनल हाईवे 27 पर नला के माता जी के समीप कोटा की ओर से आ रही आई 20 कार के सामने अचानक भालू आ गया। कार और भालू की टक्कर इतनी जोरदार हुई की भालू की मौके पर ही मौत हो गई। वही कार सवार 2 जने गंभीर रूप से घायल हो गए घायलों को एंबुलेंस की सहायता से कोटा ले गए।

घटनास्थल पर मौजूद महेंद्र राठौर ने बताया कि कार सवार लोग सांवलिया सेठ दर्शन को जा रहे थे। वही वन विभाग की टीम मौके पर पहुंचकर भालू के शव को कब्जे में लिया।

गेहूँ खरीद हेतु किसान रजिस्ट्रेशन पोर्टल' के माध्यम से किसान गेहूँ विक्रय हेतु

1 फ़रवरी से करवा सकेंगे ऑनलाइन पंजीकरण, प्रदेश में 25 जून तक जारी रहेगी ऑनलाइन पंजीकरण प्रक्रिया

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा/जयपुर

भारत सरकार द्वारा रबी विपणन सीजन 2026-27 हेतु गेहूँ का न्यूनतम समर्थन मूल्य पच्चीस सौ पचासी रूपए प्रति क्विंटल घोषित किया गया है। राज्य के किसान अपनी उपज (गेहूँ) विक्रय हेतु पंजीयन दिनांक 1.02.2026 से 25.06. 2026 तक स्वयं अथवा ई-मित्र के माध्यम से खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, राजस्थान की वेबसाइट https://food.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध 'गेहूँ खरीद हेतु किसान रजिस्ट्रेशन पोर्टल' के माध्यम से ऑनलाइन पंजीकरण करवा सकेंगे। पंजीयन हेतु किसान के पास अद्यतन जन आधार कार्ड अनिवार्य है। किसान को उसके द्वारा विक्रय की गई उपज का भुगतान उसके जन आधार से जुडे हुए बैंक खाते में किया जाएगा। इसलिए किसान जिस बैंक खाते में भुगतान प्राप्त करना चाहता है उसे अपने जन आधार में जुड़वा लेंवे ।

पंजीकरण प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, राजस्थान की वेबसाइट पर उपलब्ध है। किसान पंजीकरण व अन्य खरीद सम्बन्धी जानकारी एवं समस्याओं के लिए टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 14435 पर राजकीय कार्य दिवसों में प्रातः 10.00 बजे से सांय 05.00 बजे तक सम्पर्क कर सकते हैं। किसान को खरीद संबंधी विभिन्न जानकारियों को एसएमएस के माध्यम से रजिस्टर्ड मोबाईल नम्बर पर समय-समय पर अवगत करवाया जायेगा।

राज्य में रबी विपणन सीजन 2026-27 के दौरान न्यूनतम समर्थन मूल्य पर गेहूँ खरीद का कार्य दिनांक 10 मार्च, 2026 से 30 जून, 2026 तक किये जाने का निर्णय लिया गया है। गेहूँ खरीद कार्य हेतु राज्य में एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, कुल 383 क्रय केंद्र स्थापित किये गये हैं। क्रय केन्द्रों की सूची खाद्य राजस्थान की वेबसाइट https://food.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। किसानों से गेहूँ खरीद कार्य भारतीय खाद्य निगम, राजफेड, तिलम संघ, नाफेड एवं एनसीसीएफ के साथ इस वर्ष से राजस्थान राज्य खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति निगम के माध्यम से भी किया जायेगा।

राधा कृष्ण बस्ती द्वारा विराट हिंदू सम्मेलन की शुरुआत भूमि पूजन से

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

राधा कृष्ण बस्ती द्वारा आयोजित किये जाने वाले विराट हिंदू सम्मेलन की तैयारियों का शुभारंभ विधिवत भूमि पूजन के साथ किया गया।

आयोजन संयोजक गोपाल वैष्णव ने बताया कि यह भूमि पूजन समारोह राधा कृष्ण बस्ती में महात्मा गाँधी राजकीय वार्ड संख्या 8 स्कूल के सामने स्थित कम्युनिटी हॉल में आयोजित किया गया, जिसकी शुरुआत पंडित शिव प्रसाद शर्मा द्वारा आयोजन समिति अध्यक्ष ओम प्रकाश सेन सहित आयोजन समिति के सदस्यो पदाधिकारियो, बस्तीवासियो द्वारा विधिवत मंत्रोच्चार एवं पूजा अर्चना कर की गई।

आयोजन समिति अध्यक्ष ओम प्रकाश सेन ने जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 01 फरवरी 2026 (रविवार) को विराट हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर प्रातः भव्य शोभा यात्रा एवं कलश यात्रा निकाली जाएगी, जिसमें दिव्य संत श्री श्री 108 श्री बनवारी शरण जी काठिया बाबा का पावन सानिध्य प्राप्त होगा। शोभा यात्रा के पश्चात भारत माता की सामूहिक आरती सम्पन्न होगी तथा अंत में समरसता भोज का आयोजन रखा गया है। भूमि पूजन के साथ ही सम्मेलन की तैयारियां औपचारिक रूप से प्रारंभ हो गई हैं। आयोजन समिति द्वारा सम्मेलन को भव्य, ऐतिहासिक एवं सफल बनाने हेतु व्यापक स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित आयोजन समिति सदस्यो, कार्यकर्ताओ एवं बस्तीवासियो ने आयोजन की सफलता हेतु सहयोग का संकल्प लिया।

विधिक चेतना शिविर का आयोजित

स्मार्ट हलचल

कोटड़ी। मुख्यालय स्थित नोबल पब्लिक स्कूल कोटडी में तालुका विधिक सेवा समिति कोटडी के तत्वाधान में विधिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें अध्यक्षता करते हुए न्यायिक मजिस्ट्रेट कोटडी श्रीमती वर्षा आमेरा ने बालकों को छोटे-छोटे कानून की जानकारी देते हुए पढ़ाई के साथ कानून की जानकारी भी आवश्यक है। उन्होने धूम्रपान कानून, नकल विरोधी कानून, एफआईआर संविधान में मौलिक अधिकार मैं कर्तव्य के बारे में जानकारी दी गई। वहीं शिविर के मुख्य अतिथि वासुदेव पंचोली एडवोकेट एवं राजेश आचार्य अधिवक्ता ने भी अनेक कानून व धाराओं की जानकारी दी। विद्यालय के डायरेक्टर उमेश वैष्णव ने सभी का आभार व्यक्त किया। श्रीमती वर्षा अमेरा ने अपने उद्बोधन में संविधान के कर्तव्य व मौलिक अधिकार के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। साथ ही बालक-बालिकाओं से संवाद किया तथा आगामी परीक्षाओं के लिए मेहनत करने एवं नकल नहीं करने के बाबत प्रेरित किया। इस दौरान अनेक अभिभावक तथा एसडीएमसी सदस्य, अध्यापकगण उपस्थित थे।

फर्जी दस्तावेजों से करोड़ों की ट्रस्ट भूमि हड़पने का खेल ?

फर्जी आधार-पैन, फर्जी बैंक खाता... फिर भी रजिस्ट्री ? उपपंजीयक की भूमिका पर बड़े सवाल

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

शहर के उपनगर सुवाणा क्षेत्र में स्थित जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट की करोड़ों रुपये मूल्य की भूमि के फर्जी बेचान का मामला सामने आते ही प्रशासनिक हलकों में हलचल मच गई है। सवाल यह है कि जब राजस्व रिकॉर्ड में जमीन का बेचान संभव ही नहीं था, तो रजिस्ट्री आखिर हुई कैसे ?

जांच में सामने आया है कि जमीन हथियाने के लिए पहले फर्जी आधार कार्ड ? फर्जी पैन कार्ड ? और फर्जी बैंक खाता ? तैयार किया गया। इन्हीं कागजातों के सहारे 17 अक्टूबर 2025 को मात्र 19 लाख 50 हजार रुपये में करोड़ों की जमीन का बेचान कर दिया गया। क्या यह सब बिना विभागीय मिलीभगत के संभव था ?

खसरा संख्या 1985, रकबा दो बीघा, सुवाणा ग्राम पंचायत क्षेत्र की यह भूमि वर्षों से जैन श्वेतांबर समाज के मंदिर ट्रस्ट के नाम दर्ज है। इसके बावजूद विक्रेता ने स्वयं को जमीन का मालिक बताकर दस्तावेज तैयार करवा लिए। सबसे बड़ा सवाल यह है कि जांच के बिना पहचान पत्र कैसे स्वीकार कर लिए गए ?

सूत्र बताते हैं कि फर्जी गवाह भी खड़े किए गए और भुगतान एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक के चेक से दर्शाया गया। क्या उपपंजीयक कार्यालय ने दस्तावेजों की वास्तविकता की जांच की ? या फिर आंखें मूंद ली गईं ?

ट्रस्ट अध्यक्ष नेमकुमार संघवी ने साफ कहा कि यह पूरा मामला सुनियोजित साजिश है। उन्होंने सवाल उठाया कि जब ट्रस्ट ने कभी जमीन बेचने का निर्णय ही नहीं लिया, तो नामांतरण किस आधार पर कर दिया गया ?

फिलहाल करोड़ों की यह जमीन राजस्व रिकॉर्ड में आसींद निवासी मुन्ना मोहम्मद के नाम दर्ज हो चुकी है। अब बड़ा सवाल यह है–

क्या दोषियों पर कार्रवाई होगी ? या यह मामला भी फाइलों में दफन कर दिया जाएगा ?

सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी के नए नियम पर लगाई रोक, पुराना 2012 का नियम फिर से लागू

यूजीसी के नए नियम का गलत इस्तेमाल हो सकता है- सुप्रीम कोर्ट

स्मार्ट हलचल | नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी के नए नियम पर रोक लगा दी है। कोर्ट ने कहा कि जाति संबंधी नियम स्पष्ट नहीं है। विशेषज्ञ को भाषा और स्पष्ट करने को कहा गया है। फिलहाल यूनिवर्सिटीज और कॉलेजों में 2012 के पुराने रेगुलेशंस ही लागू रहेंगे। अगली सुनवाई 19 मार्च को होगी। यूजीसी इक्विटी एक्ट 2026 पर कोर्ट की रोक देशभर में चल रहे विरोध के बीच आई है। दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार समेत कई राज्यों में जातिगत-भेदभाव को रोकने के लिए लाए गए यूजीसी के नए 'कानून' का एकतरफा बताया जा रहा है। बरेली के सिटी मजिस्ट्रेट अंलकार अग्निहोत्री ने इसे 'काला कानून' बताते हुए अपने पद से इस्तीफा तक दे दिया है। वहीं सवर्ण जाति संगठनों ने आंदोलन तेज करने की धमकी दी है। 13 जनवरी से चल रहे विरोध के बाद यूजीसी जल्द स्पष्टीकरण जारी कर सकती है। सरकार शिक्षाविद, अधिकारी और यूजीसी को मिलाकर एक हाईलेवल कमेटी बना सकती है। यूजीसी 'इक्विटी एक्ट 2026' की ताजा जानकारी के लिए यहां दिए जा रहे अपडेट्स पर नजर रख सकते हैं।

कोर्ट ने फिर से लागू किया पुराना 2012 का नियम

सुप्रीम कोर्ट ने यूजीसी 2026 इक्विटी नियम के लागू होने पर रोक लगाते हुए पुराने 2012 नियम फिर से लागू कर दिए हैं। यूजीसी इक्विटी रेगुलेशंस 2012 सुप्रीम कोर्ट के अगले आदेश तक भारत के सभी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में लागू रहेंगे। कोर्ट ने कहा कि दखल देना जरूरी था क्योंकि नई गाइडलाइंस समाज को

बांट सकती थीं और अगर इस स्टेज पर इन्हें लागू किया जाता तो इसका गंभीर असर हो सकता था।

सुप्रीम कोर्ट ने सरकार से मांगा जवाब, दिया ये सुझाव

कोर्ट ने नियमों पर रोक लगाने की मांग वाली दलीलों को स्वीकार किया, सॉलिसिटर जनरल से उनका जवाब मांगा, और कहा कि नियमों के कुछ पहलुओं पर और जांच की जरूरत है। बेंच ने यह भी सुझाव दिया कि सरकार उठाई गई चिंताओं की समीक्षा के लिए जाने-माने विद्वानों और विशेषज्ञों की एक समिति बनाने पर विचार कर सकती है।

यूजीसी के नए नियम पर कड़ी टिप्पणी करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सवाल उठाया कि क्या हम पीछे की ओर जा रहे हैं। क्या 75 साल की संवैधानिक प्रगति के बाद भी समाज को जातियों से मुक्त नहीं कर सके। क्या भारत बढ़ने के बजाय उल्टी दिशा में जा रहा है? कोर्ट ने कहा कि शिक्षण संस्थानों में भारत की एकता दिखनी चाहिए। अमेरिका से तुलना करते हुए बेंच ने कहा कि भारत को अमेरिका के 'नस्लीय आधार' पर अलग-अलग स्कूलों जैसी व्यवस्था की ओर नहीं बढ़ना चाहिए, जहां छात्रों को पहचान के आधार पर बांटा जाता था।

सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि ये नियम पहली नजर में अस्पष्ट हैं और इनका गलत इस्तेमाल हो सकता है। सुप्रीम ने केंद्र सरकार से नियमों को फिर से बनाने के लिए कहा है, तब तक इनका संचालन रोक दिया गया है। कोर्ट ने कहा - 'हम जनरल कैटेगरी की शिकायतों पर विचार नहीं कर रहे हैं। हमारी चिंता यह है कि आरक्षित समुदाय के सदस्यों के लिए शिकायत निवारण प्रणाली लागू रहनी चाहिए।'

यूजीसी एक्ट पर सुप्रीम कोर्ट की 7 बड़ी बातें

29 जनवरी को यूजीसी के नियम पर सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने ये 7 बड़ी बातें कहीं हैं-

यूजीसी नए आदेश तक 2012 के नियम लागू रहेंगे।

यह कोई बहुत बड़ा संवैधनिक मामला नहीं है।

नियमों को दुरुपयोग हो सकता है।

विशेषज्ञ इसकी भाषा स्पष्ट करें।

भेदभाव की परिभाषा और समावेशी होनी चाहिए।

2026 रेगुलेशन की भाषा अस्पष्ट है।

जाति संबंधी नियम स्पष्ट नहीं।

जिलाध्यक्ष पद पर अंकित सोमानी नियुक्त

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

उपभोक्ता अधिकार समिति के केंद्रीय अध्यक्ष सुनील राठी के निर्देशानुसार एवं केंद्रीय महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष मधु जाजू के आतिथ्य में, तथा केंद्रीय महासचिव प्रहलाद राय व्यास की सहमति से अंकित सोमानी को समिति के युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। संगठन के विस्तार के लिए हार्दिक सोनी को युवा जिला महामंत्री एवं त्रिदेव मूंदड़ा को युवा जिला कोषाध्यक्ष के पद पर नियुक्त किया गया है। नवनियुक्त जिलाध्यक्ष अंकित सोमानी से संगठन को यह अपेक्षा है कि वे युवाओं को समिति से जोड़ते हुए उपभोक्ता अधिकारों के संरक्षण एवं जन-कल्याणकारी गतिविधियों को प्रभावी रूप से आगे बढ़ाएंगे तथा जिला स्तर पर संगठन को और अधिक सशक्त बनाएंगे। समिति के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने सोमानी को इस नियुक्ति पर शुभकामनाएं देते हुए आशा व्यक्त की कि वे पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं सक्रियता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करेंगे। सोमानी ने संगठन के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संगठन ने मुझ पर जो विश्वास जताया है, मैं उस उत्तरदायित्व को पूरी निष्ठा और समर्पण भाव से निभाऊंगा। उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा के लिए आमजन की आवाज़ को मजबूती से उठाना ही मेरी प्राथमिकता होगी।

इस अवसर पर समिति के अशोक सोमानी, श्यामसुंदर सोमानी, हर्ष राठी, राहुल सोमानी, विशाल सेठी सहित कई अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित थे।

व्यावसायिक शिक्षा के अंतर्गत बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गुलमंडी में व्यावसायिक शिक्षा योजना के अंतर्गत किट वितरण समारोह

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

राजस्थान सरकार की व्यावसायिक शिक्षा योजना के अंतर्गत राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, गुलमंडी, भीलवाड़ा में अध्ययनरत विद्यार्थियों को कौशल विकास हेतु आवश्यक संसाधन किट, राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर के माध्यम से उपलब्ध कराए गए। विद्यालय में ब्यूटी एवं वेलनेस विषय की 34 छात्राओं को ब्यूटी किट प्रदान की गई तथा अपैरल मेड अप एंड होम फर्निशिंग ट्रेड में अध्ययनरत 35 विद्यार्थियों को सिलाई मशीनें वितरित की गईं। इस पहल का उद्देश्य बालिकाओं को हुनरमंद बनाकर उन्हें स्वरोज़गार एवं आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर करना है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के विद्यालय विकास एवं प्रबंधक समिति के विधायक प्रतिनिधि एवं विधानसभा सयोंजक संजय जी राठी उपस्थित रहे। वहीं विशिष्ट अतिथि के रूप में विधायक प्रतिनिधि दुर्गालाल जी सोनी , अखिल भारतीय विधार्थी परिषद् के अध्यक्ष प्रशांत परमार जी, रा उच्च माध्यमिक विद्यालय राजेंद्र मार्ग के प्रधानाचार्य श्री राजेंद्र गहलोत, स्ष्ठस्ष्ट के श्रीमती नैना ने सहभागिता निभाई। इस दौरान कार्यक्रम में एसडीएमसी सदस्य श्रीमती विद्या जी एवं सावित्री जी भी उपस्थित रहीं।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अतिथि द्वारा सरस्वतीजी के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर मालार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम के संचालन डॉ अनुज नुवाल ने करते हुए स्थानीय विद्यालय की व्यावसायिक शिक्षा योजना की गतिविधि की रूप रेखा प्रस्तुत की।

मुख्य अतिथि श्री संजय जी राठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि 'व्यावसायिक शिक्षा आज के समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उन्हें हुनरमंद बनाकर आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान करती है।

सोनी ने अपने उद्बोधन में कहा की ब्यूटी एवं वेलनेस तथा मेड-अप एंड होम फर्निशिंग जैसे ट्रेड बालिकाओं को स्वरोज़गार से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सरकार द्वारा किट एवं सिलाई मशीनों का वितरण इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है, जिससे छात्राएं अपने कौशल का उपयोग कर भविष्य में आर्थिक रूप से सशक्त बन सकेंगी। परमार जी ने विधार्थियों का मार्गदर्शन कौशल शिक्षा का महत्व विभिन्न उदहारण एवं प्रश्न पूछते हुए किया।

इस अवसर पर स्थानीय विद्यालय की कौशल मित्र श्रीमती सावित्री अग्रवाल, व्यावसायिक प्रशिक्षक संगीता दीक्षित एवं माया पंकज मौजद रहे।

प्रधानाचार्य श्रीमती सुनीता जीनगर ने राज्य सरकार द्वारा प्रदान किये जा रहे किट का अधिक से अधिक उपयोग करने एवं स्वरोजगार से जुड़ने हेतु विधार्थियों को प्रोत्साहित किया ढ्ढव्यावसायिक शिक्षा को वर्तमान समय की आवश्यकता बताते हुए कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षण से छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ आजीविका के अवसर भी प्राप्त होते हैं। कार्यक्रम के अंत में स्थानीय विद्यालय की उपाचार्य श्रीमती रजनी मेहता द्वारा सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया गया।

मांडल में अवैध शराब व मांस दुकानों का मुद्दा विधानसभा में गूंजा

स्मार्ट हलचल

मांडल। मांडल विधानसभा क्षेत्र के विधायक उदयलाल भड़ाना ने क्षेत्र में फल-फूल रही अवैध शराब और मांस की दुकानों का मामला विधानसभा में जोरदार तरीके से उठाया। उन्होंने आरोप लगाया कि आबकारी विभाग और पुलिस की मिलीभगत से मांडल सेक्टर में देर रात्रि तक अवैध शराब की दुकानें संचालित हो रही हैं। विधायक भड़ाना ने कहा कि शराब ठेकेदार एक दुकान के लाइसेंस पर 10 से अधिक अवैध ब्रांच खोलकर खुलेआम कानून की धज्जियां उड़ा रहे हैं। जगह-जगह रात देर तक अवैध शराब की बिक्री हो रही है, जिससे क्षेत्र का सामाजिक माहौल खराब हो रहा है। उन्होंने यह भी मुद्दा उठाया कि मांडल क्षेत्र में अवैध रूप से संचालित मांस की दुकानों पर भी प्रशासन आंख मूंदे बैठा है। विधायक ने मांग की कि हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों पर शराब और मांस की दुकानों को पूरी तरह बंद किया जाए। उदयलाल भड़ाना ने विधानसभा में कहा कि अवैध शराब बिक्री से अपराध बढ़ रहे हैं और युवाओं पर गलत प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने सरकार से मांग की कि मांडल क्षेत्र में विशेष अभियान चलाकर अवैध शराब व मांस दुकानों पर सख्त कार्रवाई की जाए। अब देखना यह होगा कि प्रशासन विधायक द्वारा उठाए गए इस गंभीर मुद्दे पर कितना प्रभावी कदम उठाता है।

भोपालगंज माहेश्वरी महिला मंडल के चुनाव निर्विरोध संपन्न

सुमन सोमानी अध्यक्ष, शीतल जागेटिया मंत्री निर्विरोध हुई निवार्चित

निर्विरोध चुनाव से संगठन की शक्ति और बढ़तीः श्रीमती सुमन सोमानी

स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। भोपालगंज माहेश्वरी महिला मंडल के चुनाव प्रक्रिया में अध्यक्ष पद पर श्रीमती सुमन सोमानी और मंत्री पद पर श्रीमती शीतल जागेटिया को सर्वसम्मति से चुना गया। साथ ही कोषाध्यक्ष पद पर अंजना मालू और संगठन मंत्री के रूप में ललिता सोमानी को नियुक्त किया गया। वर्तमान अध्यक्ष कल्पना सोमानी ने बताया की नगर माहेश्वरी महिला संस्थान अध्यक्ष डॉक्टर सुमन सोनी के निर्देशन में निर्वाचन की पारदर्शिता और सुनिश्चित करने के लिए पर्यवेक्षक के रूप में श्रीमती गायत्री मूंदड़ा और श्रीमती नीलम माहेश्वरी का सानिध्य प्राप्त रहा। इस अवसर पर नव निर्वार्चित अध्यक्ष श्रीमती सुमन सोमानी ने कहा कि वह इस पद पर पूरी निष्ठा और लगन से कार्य करेंगी। उन्होंने सभी महिला मंडल सदस्यों को साथ लेकर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने की प्रतिबद्धता जताई।

सोमानी ने कहा कि निर्विरोध चुनाव सामाजिक एकता और समरसता का प्रतीक है तथा इससे संगठन की शक्ति और बढ़ती है। निर्विरोध चुनाव से समाज का समय और धन दोनों की बचत होती है। इस प्रक्रिया में मंडल की पुर्व अध्यक्ष निशा सोनी के साथ ही अर्चिता झवंर, आशा देवपुरा, सत्यम मूंदड़ा, लीला सोमानी, सुशीला सोमानी, सुमन बाहेती, मधु बाहेती, रेणु देवपुरा, सुनीता सोमानी का पूर्ण सहयोग रहा। अंत में नवर्निवाचित पदाधिकारियों का सदस्याओं द्वारा माला पहनाकर व मुँह मीठा कराकर स्वागत किया गया।

लाडपुरा में एक फरवरी को सजेगा 'विराट हिंदू सम्मेलन', कलश यात्रा और संत समागम से गूंजेगा क्षेत्र

आरएसएस के शताब्दी वर्ष पर सनातन संस्कृति के संरक्षण का संकल्प, घर-घर बांटे पीले चावल

स्मार्ट हलचल

लाडपुरा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सौ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आगामी एक फरवरी को लाडपुरा पंचायत क्षेत्र के बिहारी नाथ देवनारायण मंदिर प्रांगण में 'विराट हिंदू सम्मेलन' का भव्य आयोजन किया जाएगा। सकल हिंदू समाज लाडपुरा, डामटी, खोखरा, श्यामगढ़ सहित क्षेत्र की करीब 2 पंचायतों के तत्वावधान में आयोजित इस सम्मेलन को लेकर ग्रामीणों और युवाओं में अभूतपूर्व उत्साह देखा जा रहा है।

भव्य कलश यात्रा से होगा आगाज

सम्मेलन की शुरुआत रविवार सुबह 10:15 बजे 'बाग वाला कुआं' से निकलने वाली भव्य जल कलश यात्रा के साथ होगी। गाजे-बाजे और बैंड-बाजों के साथ निकलने वाली इस यात्रा में सनातनी बंधु पारंपरिक पोशाक और हाथों में भगवा ध्वज लिए शामिल होंगे। प्रचार प्रमुख नारायण सनाढ्य ने बताया कि यात्रा मुख्य मार्गो से होते हुए मंदिर प्रांगण पहुंचेगी, जहाँ विभिन्न झांकियों, रंगोलियों और अखाड़ा प्रदर्शन के बीच धर्म सभा आयोजित होगी।

संतों का मिलेगा आशीर्वाद, प्रतिभाएं होंगी सम्मानित

दोपहर एक बजे से आयोजित धर्म सभा में पूज्य संतों का आशीर्वचन प्राप्त होगा। इस अवसर पर मंडल की विभिन्न प्रतिभाओं को मंच से सम्मानित भी किया जाएगा। आयोजन समिति ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समाज में सनातन धर्म के प्रति चेतना जागृत करना और सामाजिक समरसता को मजबूत करना है।

तैयारियां जोरों पर, घर-घर दिया निमंत्रण

आयोजन को सफल बनाने के लिए कार्यकर्ताओं की टोलियां गठित की गई हैं, जो घर-घर जाकर पीले चावल बांटकर निमंत्रण दे रही हैं। कार्यक्रम के अंत में सभी श्रद्धालुओं के लिए सामूहिक भोजन प्रसादी की व्यवस्था की गई है। आयोजकों ने सकल हिंदू समाज से सपरिवार उपस्थित होने का आह्वान किया है।

बरून्दनी में हिन्दू सम्मेलन 1 को

स्मार्ट हलचल

आकोला। संघ शताब्दी वर्ष के निमित्त विराट हिंदू सम्मेलन बरून्दनी में संपन्न करवाने के लिए पुलिस चौकी के पास शिवालय मंदिर पर समस्त ग्राम वासियों की एक बैठक का आयोजन किया जिसमें निर्णय लिया गया कि 1 फरवरी को विराट हिंदू सम्मेलन बरून्दनी में आयोजित किया जाएगा जिसमें रविवार को प्रातः काल 10:00 बजे बावड़ी के बालाजी मंदिर से शौभायात्रा प्रारंभ होगी बरून्दनी गांव में शौभायात्रा निकालते हुए मैला प्रांगण में एक विशाल हिंदू धर्म सभा का आयोजन किया जाएगा जिसमें बावड़ी के बालाजी महंत श्री राम सुंदर दास जी महाराज का सानिध्य मिलेगा हिंदू सम्मेलन के अध्यक्ष रामराय जी लढ़ा महिला प्रमुख गायत्री देवी पंचोली और मुख्य वक्ता का मार्गदर्शन मिलेगा धर्म सभा में वेद मित्रों का उच्चारण किया जाएगा विजय महामंत्र हनुमान चालीसा का पाठ किया जाएगा अंत में भारत माता की महा आरती का आयोजन होगा हिंदू सम्मेलन प्रचार प्रसार प्रमुख शिव प्रकाश भट्ट ने बताया है कि धर्म सभा के बाद महाप्रसादी ग्रहण की जाएगी।

मंगरोप टीम ने परचम लहराया, साडास में आयोजित रस्साकशी प्रतियोगिता में बनी प्रथम विजेता

स्मार्ट हलचल | मंगरोप

चितौड़गढ़ जिले के साडास कस्बे में बुधवार को रस्साकशी प्रतियोगिता आयोजित हुई।प्रतियोगिता में कुल 30 टीमों ने रजिस्ट्रेशन करवाया था।लेकिन किसी कारणवश 27 टीमें देर रात करीब 9 बजे तक प्रतियोगिता स्थल पर नहीं पहुंची।बाकी तीन टीम को,मंगरोप तीसरी मेजबान टीम साडास थी।पहला मैच जय लंकेश टीम मंगरोप व चौधरी क्लब कोजुंदा के बीच हुआ जिसमें जय लंकेश टीम ने चौधरी क्लब को 2-0 से हराकर फाइनल में पहुंची।फाइनल मुकाबला मेजबान टीम साडास व मंगरोप के बीच हुआ।मंगरोप टीम ने जबरदस्त ताकत,तालमेल और रणनीति का परिचय देते हुए प्रतिद्वंद्वी मेजबान टीम साडास को 2-0 से हराया।टीम कोच संदीप पुरोहित ने जानकारी देते हुए बताया कि मंगरोप टीम की इस जीत में सभी खिलाड़ियों का अहम योगदान रहा।टीम के मुख्य कप्तान प्रेमसुख सोलंकी तथा उपकप्तान पंकज कुमार खटीक के कुशल नेतृत्व में खिलाड़ियों ने पूरे टूर्नामेंट में उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन किया। विजेता टीम को ट्रॉफी और 5100 रुपए नगद पुरस्कार दिया गया। विजेता टीम में शिवराम खटीक, गोपाल खटीक,विकास खटीक, इमरान मोहम्मद बिसायती,मुकेश कीर,लोकेश कीर एवं राजूलाल सालवी शामिल रहे।खिलाड़ियों ने शारीरिक क्षमता के साथ-साथ आपसी समन्वय का बेहतरीन उदाहरण पेश किया,जिसका परिणाम टीम को खिताब के रूप में मिला।

प्रतियोगिता में जीत दर्ज करने के बाद मंगरोप में खुशी की लहर दौड़ गई।ग्रामीणों व खेल प्रेमियों ने टीम की इस उपलब्धि पर खिलाड़ियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।टीम की इस सफलता से क्षेत्र का नाम रोशन हुआ है और युवाओं में खेल के प्रति उत्साह भी बढ़ा है।

टीन शेड के नीचे पढ़ने को मजबूर नौनिहाल

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

फूलिया कलां उपखण्ड क्षेत्र की नवगठित ग्राम पंचायत खेड़ा हेतम के जोरा का खेड़ा गांव का मामला सामने आया है, जहां राजकीय प्राथमिक विद्यालय के मासूम छात्र-छात्राएं आज भी मूलभूत सुविधाओं से वंचित हैं। विद्यालय भवन की छत जर्जर व टूटी होने के कारण प्रशासन द्वारा स्कूल भवन को कंडम घोषित कर जमींदोज करवा दिया गया था। इसके बाद सरकार द्वारा नए विद्यालय भवन के निर्माण हेतु आज तक कोई फंड जारी नहीं किया गया। हालात इतने गंभीर हो गए कि मजबूर होकर ग्रामीणों ने आपस में चंदा इकट्ठा कर टीन शेड लगवाया ।

शाहपुरा जिला अस्पताल में लंबे समय से रिक्त डॉक्टरों के पद भरे

स्मार्ट हलचल | शाहपुरा

जिला अस्पताल शाहपुरा में लंबे समय से रिक्त पड़े चिकित्सकों के पदों को भरने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। शाहपुरा विधायक डॉ. लालाराम बैरवा की मांग पर मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा एवं चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खिंवसर द्वारा आवश्यक कार्रवाई करते हुए डॉक्टरों के कुछ पदो पर नियुक्तियां की गई हैं। इस निर्णय से क्षेत्र की जनता को बेहतर एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध होंगी तथा जिला अस्पताल में उपचार व्यवस्था सुदृढ़ होगी। लंबे समय से चिकित्सकों की कमी के कारण मरीजों को हो रही असुविधाओं से

अब राहत मिलेगी। विधायक डॉ. लालाराम बैरवा ने इस जनहितकारी निर्णय के लिए आदरणीय मुख्यमंत्री एवं चिकित्सा मंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार आमजन के स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने विश्वास जताया कि आने वाले समय में शाहपुरा क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाएं और अधिक सशक्त होंगी।

3 दिन की बच्ची को दुर्लभ रक्त ओ नेगेटिव रक्त दिया

स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। रक्तदान जीवनदान का संदेश देते हुए राजकीय महात्मा गांधी चिकित्सालय एडमिट 3 दिन की बच्ची के लिए इमरजेंसी ताजा ओ नेगेटिव रक्त की आवश्यकता होने पर ब्लड बैंक जनसंपर्क अधिकारी अर्पित बाहेती ने रक्तदान कर रक्तदान जीवनदान का संदेश दिया। सहयोग सेवार्थ फाउंडेशन के सचिव गोपाल विजयवर्गीय ने बताया कि 3 दिन की बेबी के लिए इमरजेंसी ताजा रक्त की आवश्यकता होने पर अर्पित बाहेती ने तत्काल रक्तदान किया बाहेती पूर्व में भी अर्धरात्रि में इमरजेंसी रक्तदान कर चुके है एवं अब तक 50 से अधिक बार दुर्लभ रक्तक दान कर चुके है। इस अवसर पर ब्लड बैंक इंचार्ज डॉ. दीपक गोयल, डॉ. प्रतिभा, डॉ जया, प्रभारी दिनेश शर्मा, एलटी नारायण कुमावत एवं नवीन मीना सहित सभी स्टाफ ने रक्तविर का हौंसला बढ़ाया। सहयोग सेवार्थ फाउंडेशन की ओर से रक्तदाता का आभार व्यक्त किया गया।

निर्देशक डॉ. अंजली के नेतृत्व में 50 ब्रिटिश-भारतीय गायकों ने 'वैष्णव जन तो' से दी महात्मा गांधी को संगीतमय श्रद्धांजलि

स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। भारतीय संस्कृति ने सदैव विश्व को अच्छे संस्कारों और मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाया है। इन्हीं आदर्शों के कारण भारत को 'जगद्गुरु' कहा जाता है। सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा जैसे मूल्यों को महात्मा गांधी ने अपने जीवन और कार्यों के माध्यम से न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में स्थापित किया। उनके इन्हीं विचारों को संगीत के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास गीतांजलि ललित कला अकादमी यूनाइटेड किंगडम द्वारा किया गया है।

भीलवाड़ा जिले के गुलाबपुरा मूल की डॉ. अंजली शर्मा तिवारी के निर्देशन में गांधीजी के प्रिय भजन 'वैष्णव जन तो' को आधार बनाकर 50 ब्रिटिश-जनित और

ब्रिटिश-भारतीय विद्यार्थियों एवं कलाकारों ने सामूहिक रूप से एक संगीतमय प्रस्तुति दी है। यह प्रस्तुति 30 जनवरी को, महात्मा गांधी की पुण्यतिथि के अवसर पर जारी की गई। इसका उद्देश्य नई पीढ़ी को गांधीजी के विचारों से जोड़ना तथा संगीत के माध्यम से मानवता, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश देना है।

निर्देशक डॉ. अंजली शर्मा तिवारी ने बताया कि 'वैष्णव जन तो' भजन का भावार्थ दूसरों के दुख को अपना समझने और सेवा भाव से जीवन जीने की प्रेरणा देता है। यही कारण था कि यह भजन गांधीजी को अत्यंत प्रिय था। इसी भावना को केंद्र में रखकर गीतांजलि अकादमी ने इस परियोजना को साकार किया।

अकादमी की निदेशक जयिता घोष ने इस कार्य का नेतृत्व करते हुए अकादमी के 50 प्रख्यात गायकों को एक मंच पर एकत्र किया। यह अकादमी न केवल भारतीय कला का संवर्धन कर रही है, बल्कि भारत के बाहर भी भारतीय संस्कृति और मूल्यों का प्रचार-प्रसार कर रही है।

इस परियोजना का रचनात्मक निर्देशन डॉ. अंजली शर्मा तिवारी और सुनील जाधव ने किया। उन्होंने संगीत और भावनाओं का ऐसा संतुलन स्थापित किया कि भजन की आत्मा और गांधीजी का संदेश दोनों समान रूप से उभरकर सामने आए। इसकी रिकॉर्डिंग और संगीत संयोजन कौशिक शुक्ला द्वारा मिल हिल स्टूडियो, लंदन में किया गया, जिससे प्रस्तुति को अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीकी गुणवत्ता प्राप्त हुई।

इस प्रस्तुति को 'वैष्णव जन तो महात्मा गांधी को 50 ब्रिटिश-भारतीय आवाज़ों की संगीतमय श्रद्धांजलि' नाम दिया गया है। इसे 'नई पीढ़ी की आवाज़ में शाश्वत संदेश' भी कहा जा सकता है, क्योंकि इसमें युवा कलाकारों ने सदियों पुराने मूल्यों को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है।

निर्देशक डॉ. अंजली शर्मा तिवारी ने बताया कि इस सामूहिक गायन ने यह सिद्ध कर दिया कि संगीत सीमाओं में बंधा नहीं होता। यह प्रयास केवल एक गीत नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक सेतु है, जो पीढ़ियों और देशों को जोड़ता है। गीतांजलि अकादमी की यह पहल यह संदेश देती है कि भारतीय संस्कृति आज भी विश्व को दिशा दिखाने में सक्षम है। गांधीजी के विचारों को सुरों में पिरोकर प्रस्तुत किया गया यह प्रयास आने वाली पीढ़ियों को यह याद दिलाता है कि सच्ची सभ्यता वही है, जो मानवता को सर्वोपरि मानती है और सेवा को जीवन का आधार बनाती है।

पवन क्रिकेट क्लब बोरखेड़ा द्वारा आयोजित फाइनल मुकाबला

स्मार्ट हलचल

आकोला। बोरखेड़ा में पवन क्रिकेट क्लब बोरखेड़ा द्वारा आयोजित फाइनल मुकाबले में बोरखेड़ा ने गेगा का खेड़ा को हराकर फाइनल जीता।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि पूर्व प्रधान विजय सिंह बडलियास सरपंच प्रकाश रैगर पूर्व सरपंच विजय सिंह बोरखेड़ा पूर्व सरपंच कैलाश शर्मा किशनगढ़ पूर्व उपसरपंच रामपाल तेली समेत सहित युवा ग्रामीण मौजूद रहे।

अगर मेरे साथ कुछ हुआ तो...', राजवर्धन सिंह परमार ने जताया जान का खतरा, लगाए गंभीर आरोप

स्मार्ट हलचल

अजमेर। अजमेर दरगाह विवाद को लेकर चर्चा एक बार फिर तेज हो गई है। अजमेर न्यायालय में दरगाह में हिंदू शिव मंदिर होने को लेकर याचिका दायर करने वाले महाराणा प्रताप सेना के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष राजवर्धन सिंह परमार ने अपनी जान को खतरा बताते हुए गंभीर आरोप लगाए हैं। परमार का कहना है कि अजमेर दरगाह उनका पवित्र हिंदू मंदिर है और इस मुद्दे को उठाने के बाद से उन्हें लगातार धमकियां मिल रही हैं।

राजवर्धन सिंह परमार ने आरोप लगाया कि महाराष्ट्र स्थित 'हज़रत ख्वाजा वेलफेयर फोरम' से जुड़े कुछ लोग एक बार फिर सक्रिय हो गए हैं और उनके खिलाफ माहौल बना रहे हैं। उन्होंने मीडिया को जारी बयान में कहा कि इससे पहले 29 मई 2022 को भी इसी संगठन से जुड़े कुछ लोगों ने उनके खिलाफ अजमेर के एक थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। परमार के अनुसार उस दौरान उनके खिलाफ आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल किया गया था और जान से मारने की धमकियां भी दी गई थीं। उन्होंने बताया कि उस समय उन्होंने पूरे मामले की जानकारी पुलिस और प्रशासन को दी थी, ताकि किसी भी तरह की अनहोनी से बचा जा सके। उन्होंने यह भी

बताया कि वर्ष 2022 में इस मामले को लेकर उन्होंने दिल्ली के संसद भवन थाना क्षेत्र में भी एफआईआर दर्ज करवाई थी। परमार का आरोप है कि अब वही लोग फिर से सक्रिय होकर उन्हें डराने-धमकाने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पहले भी उन पर कई बार हमले हो चुके हैं, जिसके चलते उन्हें अपनी सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंता है। राजवर्धन सिंह परमार ने अजमेर पुलिस अधीक्षक, राजस्थान सरकार, गृह मंत्रालय और केंद्र सरकार से सुरक्षा मुहैया कराने की मांग की है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि यदि भविष्य में उनके साथ किसी भी तरह की कोई अनहोनी होती है तो इसके लिए हज़रत ख्वाजा वेलफेयर फोरम महाराष्ट्र से जुड़े लोग जिम्मेदार होंगे।

'मुझे धमकियां दी जा रही हैं'

परमार ने कहा, 'मैं संवैधानिक और कानूनी तरीके से अपनी बात रख रहा हूं, लेकिन इसके बावजूद मुझे धमकियां दी जा रही हैं और डर का माहौल बनाया जा रहा है। मेरी मांग है कि प्रशासन इस पूरे मामले को गंभीरता से ले और मेरी सुरक्षा सुनिश्चित करे।' उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि उनका उद्देश्य किसी भी धर्म या धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाना नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर अपनी बात रखना है। साथ ही उन्होंने प्रशासन से अपील की कि ऐसे संवेदनशील मामलों में निष्पक्ष जांच कर कानून-व्यवस्था बनाए रखी जाए। फिलहाल इस बयान के बाद अजमेर में दरगाह विवाद को लेकर एक बार फिर चर्चाएं तेज हो गई हैं। हालांकि प्रशासन की ओर से अब तक इस मामले पर कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है, लेकिन परमार के बयान के बाद सुरक्षा और कानून-व्यवस्था को लेकर सतर्कता बढ़ाई जा सकती है।

सर्जिकल ब्लेड से एकतरफा प्यार के हमले में कानपुर की युवती घायल

स्मार्ट हलचल

कानपुर। यहां प्यार के नाम पर युवतियों को किसी ने किसी बहाने से शिकार बनाए जाने का सिलसिला लगातार जारी है, जिसके क्रम में एक तरफा प्यार में अंधे युवक ने साथ चलने से इनकार करने पर एक युवती को ब्लेड मारकर घायल कर दिया। युवती को घरवालों ने हैलट में भर्ती कराया है। इसके पहले मोहल्ले वालों ने युवक को पड़कर पुलिस के हवाले भी कर दिया ,जिसे गिरफ्तार कर लिया गया है।

एकतरफा प्यार में पागल इस युवक ने युवती पर सर्जिकल ब्लेड से युवती के चेहरे और कलाई पर 13 वार किए ,जिसकी चीख-पुकार सुनकर मोहल्ले के लोगों ने आरोपी को पकड़ पीट-पीट की अधमरा करने के बाद उसे पुलिस के हवाले कर दिया। परिजनों ने बताया कि 9 दिन बाद, 7 फरवरी को युवती की शादी होनी है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक नजीराबाद थाना क्षेत्र के भदौरिया चौराहा इलाके में रहने वाली 24 वर्षीय युवती के परिवार में माता-पिता, दो बच्चे एक बेटा और एक बेटी है। लड़की का भाई ठेला लगाता है। परिजनों ने बताया कि उनके घर के पास एल्युमिनियम कारखाना है। फैक्ट्री में बीते दो साल से गोलू नाम का युवक काम करता है। गोलू का लड़की के घर आना-जाना था।

युवती ने बताया कि बुधवार देर शाम गोलू आया और उसने रेस्टोरेंट चलकर खाना खाने की बात कही। गोलू नशे में था। इस वजह से लड़की ने इनकार कर दिया और अपने घर जाने को कहा। आरोप है कि इस पर गोलू ने सर्जिकल ब्लेड से चेहरे और कलाई पर करीब 13 बार हमला कर दिया। युवती ने काफी संघर्ष कर खुद को बचाने की कोशिश भी की।

युवती दोनों हाथ और चेहरे पर कई जगह ब्लेड लगने से लहुलूहान हो गई। शोर सुनकर मोहल्ले के लोग दौड़े और गोलू को जमकर पीटा। हंगामे की सूचना पर नजीराबाद पुलिस मौके पर पहुंच फरार होने के पहले ही आरोपी को गिरफ्तार कर लिया । घटना से क्षेत्र के लोगों में रोष व्याप्त है। उन्होंने युवती और उसके परिवार वालों की सुरक्षा किए जाने की भी मांग की है।

जिले को मिले 27 चिकित्सक, स्वास्थ्य सेवायें होगी सुदृढ

राज्य सरकार की स्वास्थ्य के क्षेत्र में जिले को बड़ी सौगात

स्मार्ट हलचल | राजसमंद

माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व तथा चिकित्सा मंत्री माननीय गजेन्द्र खींवसर की पहल से राज्य सरकार ने जिले में 27 डिप्लोमा एवं विशेषज्ञ चिकित्सा अधिकारीयों के पदस्थापना आदेश जारी किये है। जिससे जिले में मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाओं सहित अन्य चिकित्सा सेवायें सुदृढ होगी एवं स्थानीय मरीज लाभान्वित होंगे। यह जानकारी सीएमएचओ डॉ हेमन्त कुमार बिन्दल ने दी।

उन्होंने बताया कि आर.के जिला चिकित्सालय, उपजिला चिकित्सालय भीम, देवगढ़, आमेट, सीएचसी खमनोर व रेलमगरा में पीसीपीएनडीटी डिप्लोमा प्राप्त चिकित्सा अधिकारीयों को नियोजित किया है जिससे चिकित्सा संस्थानो में सोनोग्राफी सुविधाएं सुलभ हो सकेगी तथा गर्भवती महिलाओं के साथ - साथ अन्य रोगो से ग्रस्त मरीज भी लाभान्वित होंगे।

उन्होंने बताया कि सीएचसी रेलमगरा में फेमिली मेडिसीन विशेषज्ञ, सीएचसी झालो की मदार में स्त्री एवं प्रसुति रोग तथा सीएचसी केलवाड़ा में शिशु रोग विशेषज्ञ, उपजिला चिकित्सालय देवगढ़ में एनिस्थीसिया, स्त्री एवं प्रसुति रोग, शिशु रोग, ईएनटी विशेषज्ञ, जिला चिकित्सालय नाथद्वारा में रेडियो, एनिस्थिसिया,मेडिसीन, शिशु रोग व टी.बी के विशेषज्ञ, उपजिला चिकित्सालय भीम में आर्थो व सर्जरी के विशेषज्ञ, आर.के जिला चिकित्सालय राजसमंद में फोरेंसिक मेडिसीन विशेषज्ञ, उपजिला चिकित्सालय आमेट में विशेषज्ञ टी. बी तथा बीसीएमओ आमेट के पद पर पदस्थापना आदेश जारी किये गये है।

चिकित्सा अधिकारीयों के पद-स्थापना से जिले के मुख्य चिकित्सा संस्थानो में स्थानीय लोगो को विशेषज्ञ चिकित्सकीय सेवायें सुलभ होंगी तथा चिकित्सा संस्थानो में सेवायें मजबूत होगी।

विधानसभा में विधायक आक्या बोले- काश्तकारों से डोडा चूरा खरीद कर उचित मुआवजा दे सरकार

स्मार्ट हलचल | ओम जैन

चित्तौड़गढ़। विधायक चंद्रभान सिंह आक्या ने गुरूवार को विधानसभा के प्रक्रिया एवं कार्यसंचालन के नियमो के नियम 50 के अंतर्गत स्थगन प्रस्ताव पर बोलते हुए आबकारी विभाग द्वारा किसानो से गत आठ सालो में डोडे चुरे का हिसाब मांगने की प्रक्रिया को किसानो के साथ नाईंसाफी बताते हुए सरकार से किसानो को उचित मुआवजा देने की मांग की।

विधायक आक्या ने विधानसभा में स्थगन प्रस्ताव पर बोलते हुए कहा की मेवाड़ अंचल में अफीम की फसल ग्रामीण एवं शहर की अर्थव्यवस्था की प्रमुख धुरी रही है

परंतु हाल ही में आबकारी विभाग के डोडा चुरा नष्ट करने के परिपत्र को लेकर किसानो के साथ बड़ी नाईंसाफी हो रही है।

आबकारी विभाग द्वारा किसानो से गत 8 साल का डोडा चुरे का हिसाब मांगा जा रहा है। अनुमान के मुताबिक अफीम के एक पट्टे पर प्रति वर्ष 60 किलो डोडे चुरे का उत्पादन होता है ऐसे में 8 वर्ष का 4 क्विंटल 80 किलो डोडा चुरा नष्ट करने का अफीम किसानो को फरमान जारी किया जा रहा है।

विधायक आक्या ने विधानसभा अध्यक्ष के माध्यम से सरकार को संबोधित करते हुए कहा की पूर्व में सरकार द्वारा डोडा चुरा की खरीद की जाती थी लेकिन विगत कुछ वर्षो से सरकार द्वारा डोडा चुरा की खरीद नही की जा रही है। हर साल किसानो का डोडा चुरा नष्ट करने के लिए तोल कराने हेतु नोटिस निकाला जाता है। डोडा चुरा अधिकतम छः माह में स्वतः ही खराब हो जाता है, इस लिए किसानो ने पुराने डोडा चुरे को अपने खेतो में डाल खाद के रूप में इस्तेमाल कर लिया है। ऐसे में 8 साल का डोडा चुरा किसान कहां से लाकर देगा। आज इस फरमान से अफीम किसानो के सामने अपना पट्टा निरस्त होने से बचाने की एक चुनौती आ गई है। हमारा किसान ईमानदार है उसके पास 8 साल का डोडा चुरा मिलना असंभव है और आबकारी विभाग के इस फरमान को लेकर इसकी आड़ में किसानो से अवैध वसूली की मिलीभगत की शिकायत भी सामने आ रही है।

विधायक आक्या ने सरकार से आबकारी विभाग द्वारा जारी परिपत्र को निरस्त करने, पुराने नष्टीकरण नोटिस को खत्म करने व किसानो से डोडा चुरा की उचित दर पर खरीद कर उन्हे उचित मुआवजा देने की मांग की।

फ्री इलाज योजना में 50 फीसदी से ज्यादा क्लेम रिजेक्ट, सरकार ने योजना प्रभारियों को थमाए नोटिस

ज्यादातर मरीज गरीबी की रेखा के नीचे की श्रेणी वाले

स्मार्ट हलचल

अजमेर। राजस्थान में मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना (रू) के तहत सरकारी अस्पतालो के क्लेम बड़ी संख्या में बीमा कंपनियों ने रिजेक्ट कर दिए हैं। अधूरे दस्तावेज और गलत जानकारी के चलते कई अस्पतालों में तो लगभग 60 प्रतिशत तक क्लेम रिजेक्ट हो गए। जिससे मरीजों पर बीमारी के इलाज के लिए खुद भुगतान करना पड़ा। इस योजना में ज्यादातर मरीज गरीबी की रेखा के नीचे की श्रेणी वाले हैं, जो प्राइवेट अस्पतालों में इलाज करवाने में सक्षम नहीं है। यह स्थिति तब है जब सरकार इस योजना के तहत बीमा कंपनियों को करोड़ों रुपए के प्रीमियम का भुगतान कर रही है। अब मेडिकल एजुकेशन कमिश्नर नरेश गोयल ने प्रदेश के 28 सरकारी अस्पतालों में योजना प्रभारियों व के तहत क्लेम बुक करने वाले कार्मिकों को कारण बताओ नोटिस जारी कर तीन दिन में जवाब मांगा है। गौरतलब है कि रू योजना के तहत भर्ती मरीजों के इलाज का खर्च बीमा कंपनी द्वारा वहन किया जाता है। इसके लिए अस्पताल प्रशासन को मरीज से संबंधित बीमारी, इलाज और अन्य जरूरी दस्तावेज पोर्टल पर अपलोड करने होते हैं। दस्तावेज पूरे होने पर बीमा कंपनी इलाज की राशि संबंधित सरकारी अस्पताल के खाते में ट्रांसफर करती है। लेकिन कई सरकारी अस्पतालों में अधिकारियों और कर्मचारियों की लापरवाही के चलते मरीजों की जानकारी और जरूरी दस्तावेज

अधूरे या गलत अपलोड किए जा रहे हैं। इसी कारण बीमा कंपनियां बड़ी संख्या में क्लेम रिजेक्ट कर रही हैं।

48 फीसदी से ज्यादा तक क्लेम रिजेक्ट

प्रदेश के कई सरकारी अस्पतालों में लगभग 60 फीसदी से ज्यादा तक बीमा क्लेम रिजेक्ट होने के मामले सामने आए हैं। सबसे ज्यादा खराब स्थिति सिरोही के राजकीय मेडिकल कॉलेज से जुड़े अस्पताल की है, जहां जून 2025 से नवंबर 2025 के बीच 60 फीसदी से ज्यादा क्लेम रिजेक्ट हुए। अस्पताल प्रशासन को जारी किए गए नोटिस में कहा गया है कि रू योजना में यहां 3.45 करोड़ रुपए के क्लेम राशि बुक की गई। इसमें से 1.28 करोड़ रुपए के ही क्लेम पास हुए जबकि 1.72 करोड़ रुपये के क्लेम रिजेक्ट हो गए।

चिकित्सा मंत्री के प्रभारी जिले में हालात खराब

बीकानेर जिले के सरकारी अस्पतालों की स्थिति सबसे चिंताजनक बताई जा रही है। जिले के छह सरकारी अस्पतालों में 25 से 42 फीसदी तक क्लेम रिजेक्ट हुए हैं। बीकानेर चिकित्सा मंत्री गजेंद्र सिंह खींवसर का प्रभारी जिला भी है। इसके अलावा जयपुर के सांगानेरी गेट महिला चिकित्सालय, जनाना हॉस्पिटल चांदपोल, सैटेलाइट हॉस्पिटल बनीपार्क और सेठी कॉलोनी स्थित अस्पतालों में भी बड़ी संख्या में क्लेम रिजेक्ट किए गए हैं।

इन अस्पतालों को जारी हुए नोटिस

नोटिस पाने वाले अस्पतालों में झालावाड़ का जनाना हॉस्पिटल, श्री राजेन्द्र सामान्य हॉस्पिटल, कोटा का न्यू मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल और सुल्तानपुर सीएचसी, भरतपुर का राज बहादुर मेमोरियल हॉस्पिटल, अजमेर का सैटेलाइट हॉस्पिटल और महिला चिकित्सालय, जयपुर के जनाना हॉस्पिटल चांदपोल, बनीपार्क सैटेलाइट हॉस्पिटल, सांगानेरी गेट महिला चिकित्सालय और सेठी कॉलोनी स्थित एस.आर. गोयल अस्पताल शामिल हैं। इसके अलावा बीकानेर के पीबीएम महिला एवं चिल्ड्रन हॉस्पिटल, कैंसर, टीबी, ईएनटी और मानसिक स्वास्थ्य संस्थान, बाड़मेर, बूंदी, करौली, सीकर, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर और सिरोही के जिला अस्पतालों में भी 20 से 48 फीसदी तक क्लेम रिजेक्शन दर्ज किया गया है।

सवाईपुर में विराट हिंदू सम्मेलन को लेकर बैठक आयोजित

स्मार्ट हलचल

सवाईपुर। सवाईपुर कस्बे में 1 फरवरी 2026 को आयोजित होने वाले विराट हिन्दू सम्मेलन को लेकर बुधवार रात्रि को सवाईपुर कस्बे में बडे चारभुजा नाथ मंदिर प्रांगण में बैठक आयोजित हुई । इस सम्मेलन की तैयारियों को लेकर विचार-विमर्श किया । अध्यक्ष श्याम सुंदर श्रोत्रिय ने बताया कि रविवार 1 फरवरी को सवाईपुर मंडल के सालरिया, ढ़ेलाणा, ड़साणिया का खेड़ा, सोपुरा, खरेड़, सबला जी का खेड़ा, जित्यास, कालिरड़िया, नोहरा गांवों का विराट हिंदू सम्मेलन आयोजित होगा, जिसको लेकर बुधवार रात्रि को बडे चारभुजा नाथ मंदिर प्रांगण में बैठक आयोजित हुई । जिसमें 1 फरवरी रविवार को प्रातः 9:15 बजे बड़े चारभुजा नाथ मंदिर से कलश यात्रा व शोभायात्रा प्रारंभ होगी, जो नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए रड़ा की माताजी मंदिर पर पहुंचेगी । जहां दोपहर 1:30 बजे पर आगंतुक मेहमानों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया जाएगा, तथा संतों का आशीर्वचन पश्चात् भारत माता की आरती व प्रसाद वितरण किया जाएगा । इसके साथ ही कार्यक्रम की रुपरेखा को लेकर चर्चा की । इस दौरान रोडू गाडरी, अमरचंद गाडरी, बालू सुवालका, चांद सिंह, जगदीश श्रोत्रिय, नंदलाल दरोगा, दयाल सिंह, रामकुमार जाट, सुशील श्रोत्रिय, कमलेश जाट, गोविंद प्रजापत, कालू टेलर, लवेश जैन, सांवरमल वैष्णव, नारायण लाल जाट आदि कई मौजूद रहे।

सुभाष नगर माहेश्वरी महिला मंडल के चुनाव निर्विरोध हुए संपन्न

निर्विरोध निर्वाचन, सामाजिक एकता, आपसी सहयोग का प्रतीक है : रेखा बांगड़

रेखा बांगड़ अध्यक्ष, सुनीता लाहोटी सचिव, उर्मिला राठी कोषाध्यक्ष, रेणु लढा संगठन मंत्री निर्विरोध निवार्चित

स्मार्ट हलचल

भीलवाड़ा। नगर माहेश्वरी महिला संस्थान अध्यक्ष डॉक्टर सुमन सोनी के निर्देशन में सुभाष नगर माहेश्वरी महिला मंडल के आगामी नए सत्र हेतु अध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष एवं संगठन मंत्री पदों के लिए मनोनयन प्रक्रिया स्थानीय भवन में निर्विरोध रूप में संपन्न हुई। जिसमें नगर माहेश्वरी महिला संस्थान के चुनाव पर्यवेक्षक अधिकारी श्रीमती स्नेहलता तोषनीवाल एवं श्रीमती कल्पना सोनी द्वारा नवनिर्वाचित

अध्यक्ष रेखा बांगड़, सचिव सुनीता लाहोटी, कोषाध्यक्ष उर्मिला राठी एवं संगठन मंत्री रेणु लढा को वर्तमान अध्यक्ष गीता गांधी के सानिध्य में निर्विरोध चुना गया। नव निर्वाचित अध्यक्ष रेखा बांगड़ ने बताया की निर्विरोध निर्वाचन केवल पदाधिकारियों के चयन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि समाज के भीतर एकता और आपसी सहयोग की भावना का प्रतीक है। कार्यक्रम में कुसुम गट्टाणी, उर्मिला अजमेरा, इंद्रा अजमेरा, रीना सोमानी, रमा सोडाणी, गीता मालू, नीलकमल अजमेरा, तारा लाहोटी, मंजू शारदा, सुनीता तोषनीवाल, रेणु काकाणी, आराधना पोरवाल व सभी सदस्यों का पूर्ण सहयोग रहा। अंत में वर्तमान अध्यक्ष गीता गांधी के सानिध्य में नवनिर्वाचित पदाधिकारियों का सभी उपस्थित सदस्याओं ने गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्हें माला पहनाकर व मुँह मीठा कराकर उनके प्रति सम्मान और समर्थन व्यक्त किया गया।

गौ सेवा कर मनाया वीर तेजाजी महाराज का जन्मोत्सव

निम्बाहेड़ा। लोकदेवता वीर तेजाजी महाराज के पावन जन्मोत्सव के पर लसडावन क्षेत्र में गोभक्तों के सहयोग से गौ-सेवा की गई।

कार्यक्रम के तहत लसड़ावन गांव स्थित श्री कृष्ण गोपाल गोशाला में लगभग दो क्विंटल लापसी बनाकर विधिवत पूजा-अर्चना के साथ भोग अर्पित किया गया। इसके पश्चात यह लापसी गो माताओं को खिलाई गई। सभी गोभक्तों ने श्रद्धापूर्वक गौ-सेवा कर पुण्य लाभ अर्जित किया। इस आयोजन में भोपाजी पिंटू जाट, मोंटी चावत, खुशहाल टेलर, रतन माली, मथरालाल माली, भोपराज माली, मुकेश शर्मा, देवीलाल माली, राजू माली, उदयलाल जाट, नारायण जाट, नरपत रायका, रमेश पूरी, प्रकाश माली, बाबूलाल गायरी, मोहन गायरी सहित कई गोभक्त उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं ने गौ माता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताते हुए कहा कि लोकदेवता वीर तेजाजी महाराज की कृपा से समाज में सेवा, सद्भाव और धर्म के प्रति आस्था निरंतर मजबूत होती है। आयोजन के अंत में समस्त क्षेत्र की सुख-समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की गई।

महुआ में 'श्रीराम दिव्य रथ' का भव्य स्वागत, उमड़ा सैलाब

बानोड़ा बालाजी के आचार्यत्व में जलेन्द्री से महुआ पहुंची यात्रा; पंच कुण्डात्मक महायज्ञ और देवनारायण मंदिर महोत्सव का हुआ आगाज

स्मार्ट हलचल

महुआ/लाडपुरा। बानोड़ा बालाजी के आचार्यत्व एवं शेषावतार कल्लाजी महाराज के दिव्य सान्निध्य में निकाली जा रही 'श्रीराम दिव्य रथ यात्रा' का गुरुवार को महुआ गांव पहुंचने पर ऐतिहासिक स्वागत किया गया। श्री कृष्ण कल्कि शक्ति महायज्ञ के उपलक्ष्य में निकली इस रथ यात्रा के दर्शन के लिए ग्रामीणों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी।

रथ यात्रा गुरुवार प्रातः 10:15 बजे श्री संकट मोचन हनुमान मंदिर, जलेन्द्री से रवाना हुई। यात्रा के मार्ग में आने वाले रामपुरिया, माल का खेड़ा, श्यामपुरा और बीकरण सहित

विभिन्न गांवों में श्रद्धालुओं ने रथ पर पुष्प वर्षा कर भगवान श्रीराम का अभिनंदन किया। शाम 4:15 बजे जैसे ही रथ महुआ के 'श्री दाता का देवनारायण मंदिर' प्रांगण पहुंचा, पूरा क्षेत्र जय श्रीराम के उद्घोष से गूंज उठा।

धार्मिक अनुष्ठानों का शुभारंभ

महुआ पहुंचने पर बानोड़ा बालाजी के कैलाश चन्द्र शर्मा द्वारा वैदिक मंत्रोच्चार के साथ पूजन किया गया। देवनारायण मंदिर विकास समिति द्वारा यात्रा का भव्य स्वागत किया गया। गौरतलब है कि यह रथ यात्रा महुआ में आयोजित होने वाले 'श्री देवनारायण मंदिर महोत्सव' एवं 'पांच दिवसीय पंच कुण्डात्मक महायज्ञ' का मुख्य हिस्सा रहेगी। भक्तों ने रथ के दर्शन कर क्षेत्र में खुशहाली की कामना की।

फ़ूड व्यापार मंडल ने सफ़ाई ऑटो टिपर चार्ज हटाने की माँग उठाई, मंदी से जूझ रहे व्यापारियों को राहत देने की अपील

स्मार्ट हलचल | भीलवाड़ा

भीलवाड़ा फ़ूड एवं होटल व्यवसाय से जुड़े व्यापारियों ने नगर निगम द्वारा सफ़ाई के नाम पर वसूले जा रहे ऑटो टिपर चार्ज को हटाने की माँग उठाई है। भीलवाड़ा फ़ूड व्यापार मंडल के जिलाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण व्यास के नेतृत्व में व्यापारियों ने इस संबंध में नगर निगम महापौर को ज्ञापन सौंपा। संगठन के सचिव संदीप तोतला सहित मुकेश जैन, मनोज लोढ़ा, राम बाबू गगड़, चिमनलाल व अन्य व्यापारियों ने बताया कि फ़ूड एवं होटल व्यवसाय लंबे समय से मंदी और बढ़ती महंगाई की मार झेल

रहा है। बिजली, गैस, पानी, सफ़ाई शुल्क, कर्मचारियों का वेतन और विभिन्न सरकारी करों के कारण व्यापारियों पर अत्यधिक आर्थिक बोझ बढ़ गया है। इसका परिणाम यह है कि लगातार होटल और रेस्टोरेंट बंद हो रहे हैं, जिससे व्यापारी एवं कर्मचारी बेरोजगार हो रहे हैं।

जिलाध्यक्ष लक्ष्मीनारायण व्यास ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में व्यापारी कर्ज के बोझ तले दबते जा रहे हैं। ऐसे समय में सरकार और नगर निगम का दायित्व है कि व्यापारियों को राहत प्रदान की जाए। उन्होंने कहा कि व्यापारी पहले से ही लाइट बिल के साथ विभिन्न करों के रूप में शुल्क अदा कर रहे हैं, ऐसे में अतिरिक्त ऑटो टिपर चार्ज देना संभव नहीं है।

इस मांग पर महापौर राकेश पाठक ने संबंधित अधिकारियों से चर्चा कर सफ़ाई ऑटो टिपर चार्ज को कम करने का ससम्मान आश्वासन दिया, जिससे व्यापारियों को राहत मिली। इस अवसर पर पार्षद हेमंत शर्मा, ओम साईं राम और अशोक खंडेलवाल का सहयोग सराहनीय रहा।

मौके पर संगठन के पदाधिकारी राजकुमार दरियानी, देवेंद्र शर्मा, मनोज रामावत, अभिषेक जैन, हर्षद कौशिक, आशीष कसारा सहित बड़ी संख्या में व्यापारी उपस्थित रहे।

वैदिक विला सोसाइटी, गांधी पथ (लालरपुरा) बिल्डर की वादा खिलाफी से त्रस्त सोसाइटीवासी

स्मार्ट हलचल

मानसरोवर। जयपुर के तेजी से विकसित हो रहे गांधी पथ क्षेत्र की वैदिक विला सोसाइटी, लालरपुरा में अव्यवस्थाओं का अंबार लगा हुआ है। सोसाइटी में रहने वाले परिवारों का आरोप है कि बिल्डर ने मकान बेचते समय जिन आधुनिक और बुनियादी सुविधाओं का भरोसा दिलाया था, वे आज तक जमीन पर उतरती दिखाई नहीं दे रही हैं। हालत यह है कि एक भी सुविधा मानकों के अनुसार पूरी नहीं की गई, जिससे लोगों का जीवन दूभर हो गया है।

सीवर व्यवस्था बनी सबसे बड़ी समस्या

सोसाइटी में सीवर लाइन का निर्माण बेहद घटिया तरीके से किया गया है। कई स्थानों पर सीवर ओवरफ्लो होकर सड़कों पर बह रहा है। इससे न केवल दुर्गंध फैल रही है बल्कि संक्रमण और बीमारियों का खतरा भी लगातार बढ़ता जा रहा है। बरसात के समय स्थिति और भी भयावह हो जाती है।

बच्चों के खेलने का स्थान बना गंदगी का केंद्र

बिल्डर द्वारा बच्चों के मनोरंजन के लिए बनाए गए स्विंग और पार्क एरिया को उचित रखरखाव के अभाव में गंदे होद में तब्दील कर दिया गया है। जहां बच्चों की किलकारियां गूंजनी चाहिए थीं, वहां आज मच्छरों और गंदगी का साम्राज्य है।

अधूरी सुविधाएं, अधूरे वादे

सोसाइटी की दीवारों पर वॉल पेंटिंग और फिनिशिंग का काम आज तक पूरा नहीं किया गया है। जगह-जगह अधूरी दीवारें और उखड़ी पुताई सोसाइटी की बदहाली को साफ बयां करती हैं।

खुली सिवरेज पाइपलाइन से बढ़ा खतरा

सोसाइटी के आसपास बने बाहरी मकानों की सिवरेज ड्रेन पाइपलाइन खुली छोड़ दी गई है, जिससे गंदा पानी खुले में बह रहा है। इससे न केवल वातावरण दूषित हो रहा है, बल्कि छोटे बच्चों और बुजुर्गों के लिए यह गंभीर खतरा बन चुका है।

दोषी बिल्डर के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करें प्रशासन नहीं तो करेंगे बड़ा आंदोलन।

अतिक्रमण से बाधित यातायात

सोसाइटी के पास रहने वाले कुछ लोग आए दिन सड़क पर अतिक्रमण कर लेते हैं, जिससे वाहनों और पैदल चलने वालों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। कई बार इस कारण झगड़े और दुर्घटनाओं की स्थिति भी बन जाती है।

सोसाइटी में स्ट्रीट लाइट की व्यवस्था भी बेहद लापरवाह है। कई लाइट पोलों में करंट आने का खतरा बना रहता है, सड़क के दोनों ओर लाइट पोल न लगाकर केवल एक तरफ ही लगाए गए हैं, रात के समय अंधेरा रहने से चोरी और हादसों का डर बना रहता है। सोसायटी वासियों ने लगाई गुहार प्रशासन से त्वरित कार्रवाई की मांग वैदिक विला सोसाइटी के निवासियों ने नगर निगम, जेडीए और संबंधित विभागों से मांग की है कि बिल्डर द्वारा किए गए वादों की जांच की जाए, दोषी बिल्डर के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो, सीवर, लाइट और सफाई व्यवस्था को तुरंत दुरुस्त किया जाए, सड़क से अतिक्रमण हटाकर आवागमन को सुरक्षित बनाया जाए।

सोसाइटी वासियों का कहना है कि यदि जल्द समाधान नहीं हुआ तो वे आंदोलन और कानूनी कार्रवाई का रास्ता अपनाने को मजबूर होंगे।

सदर बाजार में पिक अप की टक्कर से विद्युत पोल टूटा, बड़ा हादसा टला

स्मार्ट हलचल

मेड़ता रोड। शहर के व्यस्ततम सदर बाजार क्षेत्र में गुरुवार को उस समय अफरा-तफरी मच गई जब एक पिक अप की टक्कर से सड़क किनारे लगा विद्युत पोल टूट गया। हादसे में पोल बीच से क्षतिग्रस्त होकर तारों के सहारे आधा लटक गया, जिससे पूरे इलाके में दहशत का माहौल बन गया। गनीमत रही कि घटना के समय वहां कोई राहगीर या दुकानदार पोल की चपेट में नहीं आया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सदर बाजार का मुख्य मार्ग संकरा होने के कारण चालक वाहन पर संतुलन नहीं बना पाया और पिक अप सीधे विद्युत पोल से जा टकराई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि पोल अपनी जगह से हिल गया और बिजली के तार नीचे की ओर झुक गए। इससे बिजली आपूर्ति बाधित हो गई और करंट फैलने का खतरा भी उत्पन्न हो गया। घटना की सूचना मिलते ही विद्युत विभाग की टीम तत्काल मौके पर पहुंची। विभाग के कर्मचारियों ने सबसे पहले एहतियातन क्षेत्र की बिजली आपूर्ति बंद करवाई और आसपास के लोगों को सुरक्षित दूरी बनाए रखने की अपील की। इसके बाद क्षतिग्रस्त विद्युत पोल को हटाकर नया पोल लगाया गया तथा बिजली के तारों को व्यवस्थित किया गया। कड़ी मशक्कत के बाद कुछ ही समय में क्षेत्र की बिजली आपूर्ति पुनः बहाल कर दी गई।

घटना के बाद सदर बाजार के व्यापारियों और स्थानीय नागरिकों ने राहत की सांस ली। व्यापारियों का कहना है कि यदि यह हादसा बाजार के अधिक भीड़भाड़ वाले समय में होता तो जान-माल का भारी नुकसान हो सकता था। उन्होंने विद्युत विभाग की त्वरित कार्रवाई और तत्परता की सराहना की।

स्थानीय लोगों ने प्रशासन से मांग की है कि सदर बाजार जैसे संकरे और भीड़भाड़ वाले मार्गों पर पिक अप जैसे बड़े वाहनों के प्रवेश पर रोक लगाई जाए, ताकि भविष्य में इस प्रकार की दुर्घटनाओं से बचा जा सके। वहीं प्रशासन ने वाहन चालकों से अपील की है कि बाजार क्षेत्र में धीमी गति से और सावधानीपूर्वक वाहन चलाएं।

फिलहाल स्थिति पूरी तरह सामान्य है और सदर बाजार क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति सुचारु रूप से जारी है।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर का छठा दिवस : स्वयंसेवकों ने शैक्षणिक भ्रमण से सीखा सामाजिक समरसता का पाठ

स्मार्ट हलचल

मेड़ता रोड। मेड़ता सिटी स्थित स्थानीय राजकीय महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के विशेष शिविर के छठे दिवस का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. बलवीर सेन ने स्वयंसेवकों से लगन एवं निष्ठा से कार्य करते हुए राष्ट्रीय सद्भाव एवं सामाजिक समरसता स्थापित करने का आह्वान किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी बरकत अली ने प्रार्थना, ध्यान एवं नैतिक शिक्षा के माध्यम से स्वयंसेवकों को सकारात्मक जीवन मूल्यों से अवगत कराया। सहायक आचार्य राम कुमार शर्मा ने योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करवाते हुए योग को निरोग जीवन का आधार बताया।

इसके पश्चात् राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन किया गया। भ्रमण के दौरान स्वयंसेवकों ने दरियाव धाम रेण के दर्शन किए तथा वहां के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व की जानकारी प्राप्त की। पीठाधीश श्री सज्जनदास जी महाराज ने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति अपनी वाणी, व्यवहार एवं कर्म की पवित्रता से आध्यात्मिक और भौतिक जगत में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. रामकिशोर माली ने बताया कि स्वयंसेवकों ने रेण तालाब, शिव मंदिर, जाखण माता मंदिर एवं गौशाला आदि स्थलों का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि शैक्षणिक भ्रमण से ज्ञान में वृद्धि होती है, स्थायित्व आता है तथा सामाजिक चेतना का विकास होता है। कार्यक्रम में महाविद्यालय के संकाय सदस्य डॉ. रामेश्वर लाल, डॉ. हरदेव राम, डॉ. राजेन्द्र सिंह सोलंकी, डॉ. अरविन्द गौड़, श्रीमती कान्ता कुमारी मीणा, मनोहर पूनियां, दिनेश कुमार, सुरेन्द्र, राजेन्द्र दिवराया, मनीष भाटी, मलराज सिंह सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे।

सिग्नल एवं टेलीकॉम मेंटेनर्स को विशेष टूल किट वितरित

फ्रंटलाइन स्टाफ की क्षमताओं को सुदृढ़ करने की दिशा में बड़ी पहल

स्मार्ट हलचल

मेड़ता रोड। उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल में गुरुवार को एक महत्वपूर्ण पहल के अंतर्गत मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी द्वारा जोधपुर रेलवे स्टेशन परिसर में सिग्नल एवं टेलीकॉम विभाग के इलेक्ट्रिक सिग्नल मेंटेनर्स तथा टेलीकॉम मेंटेनर्स को कुल 300 विशेष टूल बैग सहित आधुनिक टूल किट वितरित की गई।

यह विशेष टूल किट फ्रंटलाइन मेंटेनेंस स्टाफ की कार्यक्षमता को बढ़ाने, RDSO के सेफ्टी स्टैंडर्ड्स के अनुपालन को सुनिश्चित करने तथा ऑटोमैटिक ब्लॉक सिग्नलिंग के कार्यान्वयन और पूरे मंडल में कवच प्रणाली के रोलआउट जैसे महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स को प्रभावी रूप से समर्थन देने के उद्देश्य से तैयार की गई हैं।

इन टूल किट्स में मल्टीमीटर, क्रिम्पिंग टूल, केबल फॉल्ट लोकेटर, सेफ्टी इक्विपमेंट तथा SIEMENS MSDAC मेंटेनेंस किट शामिल हैं, जिससे सिग्नल एवं टेलीकॉम परिसंपत्तियों के प्रोएक्टिव और सुरक्षित मेंटेनेंस में सहायता मिलेगी।

इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने कहा कि मेंटेनेंस कर्मियों को सभी आवश्यक और मानकीकृत टूल्स की उपलब्धता सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है, जिससे ऑपरेशनल एफिशिएंसी, सेफ्टी और सिस्टम की विश्वसनीयता में उल्लेखनीय सुधार होगा।

उन्होंने यह भी दोहराया कि जोधपुर मंडल सिग्नल एवं टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर को सुदृढ़ करने हेतु प्रोएक्टिव मेंटेनेंस और तकनीकी उन्नयन के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है।

इनका कहना है

हमारे फ्रंटलाइन स्टाफ को आधुनिक और मानकीकृत टूल्स से सशक्त बनाना केवल दक्षता बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सुरक्षा, विश्वसनीयता और विज़न 2047 के अनुरूप भविष्य के लिए तैयार रेलवे प्रणाली के निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

फार्मासिस्ट संवर्ग का जॉब चार्ट जारी, कैडर अनुसार तय हुई जिम्मेदारियां

फार्मासिस्ट संवर्ग के लिए नई कार्यप्रणाली, जॉब चार्ट जारी

स्मार्ट हलचल | कोटा

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने फार्मासिस्ट संवर्ग के लिए जॉब एंड रिस्पांसिबिलिटी चार्ट जारी कर दिया है। निदेशक जन-स्वास्थ्य डॉ. रवि प्रकाश शर्मा ने बताया कि इसके अंतर्गत फार्मासिस्ट संवर्ग के पदों को डिप्टी डायरेक्टर (फार्मासिस्ट), सुपरिंटेंडेंट फार्मासिस्ट, सीनियर फार्मासिस्ट एवं फार्मासिस्ट श्रेणियों में विभाजित कर उनके कार्य एवं दायित्व निर्धारित किए गए हैं। इससे विभागीय कार्यप्रणाली में पारदर्शिता आएगी और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार होगा।

कैडर अनुसार तय हुई जिम्मेदारियां

डॉ. शर्मा के अनुसार डिप्टी डायरेक्टर (फार्मासिस्ट) को मुख्यालय स्तर पर नियंत्रण एवं प्रशासनिक जिम्मेदारी दी गई है। सुपरिंटेंडेंट फार्मासिस्ट दवा आपूर्ति श्रृंखला की निगरानी, गुणवत्ता जांच हेतु नमूनों को समय पर 'रूस्ट भेजने तथा जिला स्तर पर DDW व DDC के निरीक्षण का कार्य करेंगे। सीनियर फार्मासिस्ट उप-भंडार व वैक्सीन डिपो का प्रबंधन, दवाओं का भौतिक सत्यापन, ऑडिटिंग तथा वार्षिक मांग प्रस्ताव तैयार करेंगे। वहीं फार्मासिस्ट दवाओं के वितरण, भंडारण रिकॉर्ड संधारण, आपूर्ति श्रृंखला में सहयोग तथा मरीजों को दवाओं के दुष्प्रभावों पर परामर्श देंगे।

संघ ने जताया आभार

राजस्थान फार्मासिस्ट कर्मचारी संघ (एकीकृत) के प्रदेशाध्यक्ष तिलक चंद शर्मा ने सरकार एवं चिकित्सा प्रशासन का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यह मांग पिछले डेढ़ दशक से लंबित थी। जॉब चार्ट जारी होने से फार्मासिस्ट संवर्ग को स्पष्ट दिशा मिलेगी और कार्य निष्पादन अधिक प्रभावी होगा।

कोटा इकाई में खुशी का माहौल

कोटा जिला अध्यक्ष डॉ. महावीर प्रसाद खींची ने बताया कि कैडर के अनुसार जिम्मेदारियां तय होने से कर्मचारियों में उत्साह है। इससे चिकित्सा विभाग एवं निःशुल्क दवा योजना को मजबूती मिलेगी। उन्होंने यह भी कहा कि केडर सुधार, वेतन विसंगति एवं भत्तों के निर्धारण जैसे मुद्दों के समाधान के लिए संगठन निरंतर प्रयासरत है।

योग प्रशिक्षकों का धरना आयुर्वेद योग प्रशिक्षकों ने फुल टाइम, संविदा कैडर में शामिल करने की मांग की

स्मार्ट हलचल

जयपुर। अखिल राजस्थान योग प्रशिक्षक महासंघ (रजि.) के आह्वान पर हजारों आयुर्वेद योग प्रशिक्षकों ने शहीद स्मारक, जयपुर में सांकेतिक धरना प्रदर्शन किया। महासंघ के प्रदेश संरक्षक डॉ. बी. एल. कुमावत ने कहा कि योग प्रशिक्षकों ने राजस्थान को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है, लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि वही योग प्रशिक्षक आज स्वयं आर्थिक बदहाली का जीवन जीने को मजबूर हैं।उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत नियुक्त पार्ट टाइम योग प्रशिक्षक पिछले 4-5 वर्षों से मात्र 5,000 से 8,000 रुपये मासिक मानदेय पर सेवाएं दे रहे हैं। महंगाई के इस दौर में इतने कम वेतन में परिवार का पालन-पोषण करना बेहद कठिन हो गया है। कई महिला योग प्रशिक्षकों को रोज़ाना 40-45 किलोमीटर तक आवागमन करना पड़ता है, फिर भी उन्हें न तो स्थायी सेवा सुरक्षा मिली है और न ही फुल टाइम वेतनमान।डॉ. कुमावत ने कहा कि आयुर्वेद योग प्रशिक्षकों ने अपनी मांगों को लेकर जिला कलेक्टर, विधायक, मंत्री, उपमुख्यमंत्री एवं मुख्यमंत्री तक सैकड़ों ज्ञापन सौंपे हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान भाजपा नेताओं ने योग प्रशिक्षकों से वादा किया था कि यदि प्रदेश में भाजपा की सरकार बनती है तो आयुर्वेद योग प्रशिक्षकों के लिए फुल टाइम स्थायी पद सृजित किए जाएंगे, लेकिन सरकार बनने के बाद अब तक यह वादा पूरा नहीं किया गया।

उन्होंने कहा कि योग दिवस पर सरकार योग की उपलब्धियों का श्रेय लेती है, लेकिन योग को जन-जन तक पहुँचाने वाले प्रशिक्षकों के योगदान को नजरअंदाज किया जा रहा है। यह सरकार की दोहरी नीति का प्रतीक है।

महासंघ के प्रदेश अध्यक्ष दिनेश नांगल ने कहा कि आज के महंगाई भरे दौर में अल्प मानदेय से घर खर्च चलाना बेहद मुश्किल हो गया है, लेकिन सरकार में योग प्रशिक्षकों के भविष्य को लेकर अभी भी अंधेरा बना हुआ है। धरना प्रदर्शन में लगभग आयुर्वेद विभाग के लगभग 1300 योग प्रशिक्षक सम्मिलित हुये।

सिंगल यूज प्लास्टिक पर सख्ती की नपा ने 25 किलो पालीथिन जब्त

स्मार्ट हलचल

वजीरपुर उपखण्ड क्षेत्र नगर पालिका द्वारा पालीथिन मुक्त अभियान के तहत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम एसडब्ल्यू एम 2016 की पालना करते हुए सख्त कार्रवाई की गई। नगरपालिका ईओ नारायण लाल गुप्ता के नेतृत्व में नमोनारायण मीणा लवकुश जाट सहित अन्य पालिका कर्मचारियों की टीम ने मुख्य बाजार एवं सब्जी मंडी में निरीक्षण किया। नियमों का उल्लघंन पाए जाने पर 25 किलो पालीथिन जब्त की गई, तथा एक हजार रूपए का चालान काटा गया। अभियान के दौरान दुकानदारों ठेले वालों एवं रोजमर्रा का सामना बेचने वाले विक्रेताओं को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि वे ग्राहकों को सिंगल यूज प्लास्टिक में सामान न दे। नगरपालिका टीम ने व्यापारियों को पालीथिन के स्थान पर कपड़े या जूट के थैलों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया।ईओ नारायण लाल गुप्ता ने बताया कि एसडब्ल्यू एम रूल 2016 के तहत सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध है, और इसके उल्लघंन पर निरंतर कार्यवाही की जाएगी। नगरपालिका ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपने साथ कपड़े के थैले लेकर खरीदारी करें और सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग न करें। भविष्य में भी ऐसे अभियान नियमित रूप से चलाएं जाएंगे तथा नियम तोड़ने वालो के विरूद्ध सख्त कदम उठाए जाएंगे।

मण्डल रेल प्रबन्धक ने बिल्थरारोड सहित वाराणसी-भटनी रेलखंड का किया निरीक्षण

स्मार्ट हलचल

वाराणसी। रेल यात्रियों को सुरक्षित, संरक्षित और आरामदायक यात्रा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से पूर्वोत्तर रेलवे वाराणसी मंडल के मंडल रेल प्रबंधक आशीष जैन ने 29 जनवरी 2026 को वाराणसी सिटी-भटनी रेलखंड का संरक्षा विंडो ट्रेलिंग निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कीडिहरपुर, लार रोड, बेल्थरा रोड, सलेमपुर एवं पिवकोल स्टेशनों का गहन जायजा लिया गया। डीआरएम ने स्टेशन परिसरों, यात्री सुविधाओं, प्लेटफॉर्म, परिचालन, सिग्नलिंग व्यवस्था, ट्रैक रख-रखाव एवं संरक्षा से जुड़े कार्यों की बारीकी से समीक्षा की। कीडिहरपुर स्टेशन पर स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था, पेयजल, शौचालय एवं स्टेशन पैनल रूम का निरीक्षण करते हुए प्लेटफॉर्म संख्या-1 के विस्तार कार्य को शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए। यात्री शेड पर स्टेशन का नाम अंकित कराने तथा पैनल रूम में सीएस पैनल के नीचे मैट लगाने को कहा गया। डीआरएम ने रेल कर्मचारियों से संवाद कर ट्रेनों के सुरक्षित एवं समयबद्ध परिचालन पर विशेष बल दिया। इसके पश्चात लार रोड स्टेशन पर प्लेटफॉर्म, एटीवीएम, वाटर बूथ, यात्री शेड, आरसीसी बेंच, स्टेशन भवन एवं स्टेशन पैनल की समीक्षा की गई तथा दोहरीकरण के परिप्रेक्ष्य में निर्माणाधीन नए स्टेशन भवन, कार्यालयों और प्लेटफॉर्मों के उच्चीकरण-विस्तारीकरण कार्यों को गुणवत्ता के साथ समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। इसके बाद बेल्थरा रोड स्टेशन पर अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत चल रहे पुनर्विकास कार्यों का विस्तृत निरीक्षण किया गया, जहां नए स्टेशन भवन के आंतरिक भाग, फसाड, सर्कुलेटिंग एरिया, अप्रोच रोड, नाली, फुट ओवर ब्रिज फाउंडेशन, प्लेटफॉर्म फ्लोरिंग, शेड सीलिंग, आगमन-प्रस्थान द्वार, पार्किंग, प्रतीक्षालय, टिकट काउंटर, फाल सीलिंग, साफ-सफाई एवं रेलवे कॉलोनी के कार्यों की समीक्षा की गई और सभी कार्य निर्धारित समयसीमा में पूर्ण करने का निर्देश दिया गया।

राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी संघ उपशाखा झालरापाटन के चुनाव हुए

स्मार्ट हलचल | झालरापाटन

राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी संघ उपशाखा झालरापाटन के चुनाव बुधवार को पंचायत समिति झालरापाटन सभागार में शांतिपूर्ण एवं गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुए। चुनाव प्रक्रिया जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजेश कुमार मीणा एवं जिला पर्यवेक्षक श्री महावीर गुर्जर की उपस्थिति में पारदर्शी ढंग से कराई गई।

चुनाव में ब्लॉक अध्यक्ष पद पर श्री अविनाश शर्मा निर्वाचित हुए, वहीं उपाध्यक्ष पद पर ललिता चौरसिया को चुना गया। इसके साथ ही ब्लॉक मंत्री श्री सुमित भारद्वाज, जिला प्रतिनिधि श्री रोहित शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री विश्रुत जैन, संगठन मंत्री श्री किशोर कुमावत, प्रवक्ता श्री सुदर्शन सिंह, वरिष्ठ सहायक श्री महावीर नामा एवं श्रीमती संगीता शर्मा, आईटी मंत्री श्री प्रत्युष पाटीदार, तथा वरिष्ठ सलाहकार श्री दुष्यंत धावा व श्री प्रकाश नागर भी निर्वाचित घोषित किए गए।

चुनाव प्रक्रिया के आरंभ में जिला निर्वाचन अधिकारी श्री राजेश कुमार मीणा ने निर्वाचन विधान की जानकारी दी।

अंबेडकर संघर्ष समिति सावर की नई कार्यकारिणी गठित, घनश्याम पंवार को सौंपी कमान

संगठन विस्तार, सामाजिक चेतना व युवाओं की भागीदारी पर हुआ गहन मंथन

स्मार्ट हलचल

सावर (अजमेर)। डॉ. भीमराव अंबेडकर संघर्ष समिति सावर की नवीन कार्यकारिणी का गठन अंबेडकर पार्क में आयोजित बैठक में किया गया। बैठक में सर्वसम्मति से घनश्याम पंवार को समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। उनके नेतृत्व में संगठन को और अधिक सशक्त व सक्रिय बनाने पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक के दौरान समाज को संगठित करने, सामाजिक जागरूकता बढ़ाने, युवाओं को शिक्षा एवं संगठन से जोड़ने तथा डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने को लेकर वक्ताओं ने अपने विचार रखे। साथ ही सामाजिक अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट होकर संघर्ष करने का आह्वान किया गया।

नवमनोनित अध्यक्ष घनश्याम पंवार के नेतृत्व में समिति के सचिव पद पर विनोद कुमार पंवार तथा कोषाध्यक्ष पद पर कालूराम रेगर को दायित्व सौंपा गया। संरक्षक मंडल में सुरजकरण मालावत, रंगलाल आलोरिया, मांगीलाल धोबी एवं नाथूलाल मेघवंशी को शामिल किया गया।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष के रूप में चांदमल सामरिया, जीवनलाल सामरिया, मदनलाल रेडिया, मदन आलोरिया एवं बंटूलाल मीणा को मनोनीत किया गया, जबकि उपाध्यक्ष पद पर विनोद उर्फ बबलू खटीक, रंगलाल भील, अशोक कुमार मीणा, भरत धोबी एवं कालू खटीक को जिम्मेदारी दी गई। सह-कोषाध्यक्ष पद पर सर्वेश्वर बलाई व रामचंद्र खटीक, वहीं सह-सचिव के रूप में गोविंद मालावत, मथुरा प्रसाद चौहान एवं किशनलाल धोबी को नियुक्त किया गया। समिति के मार्गदर्शक मंडल में उम्मेदसिंह दीदावत, सत्यनारायण महावर, जगन्नाथ खटीक एवं सोहनलाल खींची को शामिल किया गया। इसके अलावा संगठन मंत्री पद पर नाथूलाल पंवार, नरेंद्र कुमार शेरस्या, रामगोपाल चांवला, मदनलाल मीणा एवं मोहनलाल महावर, जबकि प्रचार मंत्री के रूप में भेरूलाल डांगरीवाल, मुकेश सामरिया, रोहित मीणा एवं दीपक महावर को दायित्व सौंपा गया। प्रवक्ता व मीडिया प्रभारी के रूप में नियंत सामरिया, संतोष कुमार सामरिया, राजकुमार आलोरिया, श्रीनिवास शेरस्या एवं रवि डाबोडिया को मनोनीत किया गया। वहीं समिति में महिला सदस्यों के रूप में मनीषा मीणा, कमला देवी बलाई, विमला देवी कांसोटिया, मौसमी देवी शेरस्या एवं नेहा महावर को शामिल किया गया। बैठक के अंत में सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया तथा माला पहनाकर उनका स्वागत किया गया।

सरल नहीं पर प्रभावशाली थे, आदर्शवादी नहीं पर निर्णायक थे अजित पवार

नीरज कुमार दुबे

अजित पवार ने 1982 में सहकारी क्षेत्र से अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की। वह चीनी मिल के बोर्ड में चुने गए और यहीं से बारामती की राजनीति में उनकी जड़ें मजबूत होती गईं। 1991 में वह पुणे जिला केंद्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष बने और उसी वर्ष बारामती से लोकसभा सांसद चुने गए।

महाराष्ट्र की राजनीति को आज तब गहरा आघात लगा जब उपमुख्यमंत्री अजित पवार का बारामती में विमान हादसे में निधन हो गया। लैंडिंग के दौरान विमान में आई तकनीकी खराबी के बाद यह दुर्घटना हुई। हादसे की खबर फैलते ही राज्य भर में शोक की लहर दौड़ गई। देखा जाये तो अजित पवार महाराष्ट्र के उन नेताओं में थे जिन्होंने सत्ता के केंद्र में रहते हुए भी जमीन से नाता नहीं तोड़ा। वह भले ही कभी मुख्यमंत्री न बने हों, लेकिन राज्य में सबसे लंबे समय तक उपमुख्यमंत्री रहने का इतिहास उनके नाम दर्ज है। छह बार उपमुख्यमंत्री के रूप में सेवा देने वाले अजित पवार ने अलग-अलग सरकारों में अपनी प्रशासनिक पकड़ और राजनीतिक प्रभाव बनाए रखा। बारामती में अजित पवार की राजनीति का सबसे बड़ा प्रमाण उनका काम खुद था। वह उन गिने चुने नेताओं में थे जिनके लिए अपना खुद का चुनाव प्रचार एक औपचारिकता भर था। विधानसभा चुनावों में वह हमेशा समय पर अपना नामांकन दाखिल करते थे, लेकिन उसके बाद बारामती की गलियों में शायद ही कभी उन्हें प्रचार करते देखा गया। जनता जानती थी कि किसे वोट देना है, इसलिए जनता ही उनका प्रचार करती थी। अजित पवार का भरोसा नारों पर नहीं, काम पर था। इसी आत्मविश्वास के चलते वह बारामती से निश्चिंत रहकर राज्य के दूसरे इलाकों में पार्टी उम्मीदवारों के प्रचार में जुट जाते थे। बारामती उनके लिए सिर्फ एक निर्वाचन क्षेत्र नहीं था, वह उनका कर्मक्षेत्र था, जहां उन्होंने यह साबित किया कि जब विकास बोलता है तो नेता को खुद बोलने की जरूरत नहीं पड़ती।

अजित पवार ने 1982 में सहकारी क्षेत्र से अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की। वह चीनी मिल के बोर्ड में चुने गए और यहीं से बारामती की राजनीति में उनकी जड़ें मजबूत होती गईं। 1991 में वह पुणे जिला केंद्रीय सहकारी बैंक के अध्यक्ष बने और उसी वर्ष बारामती से लोकसभा सांसद चुने गए। बाद में उन्होंने यह सीट शरद पवार के लिए खाली की। इसके बाद वह बारामती से सात बार विधायक बने। उनके परिवार में पत्नी सुनेत्रा पवार और दो पुत्र जय और पार्थ हैं। सहकार से सत्ता तक का उनका सफर बारामती से शुरू हुआ और वहीं समाप्त हुआ।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी में विभाजन के बाद अजित पवार के

नेतृत्व वाले गुट को चुनाव आयोग ने पार्टी का मूल नाम और चुनाव चिन्ह सौंपा था। यह गुट भाजपा के नेतृत्व वाले महायुति के साथ जुड़ा। वहीं उनके चाचा और वरिष्ठ नेता शरद पवार ने अलग रह कर एनसीपी-एससीपी का नेतृत्व संभाला। यह विभाजन महाराष्ट्र की राजनीति का सबसे भावनात्मक और निर्णायक मोड़ माना गया। दोनों पक्षों का विवाद अदालत के दरवाजे तक पहुँचा लेकिन हाल के दिनों में पवार परिवार एकजुट नजर आ रहा था। हम आपको याद दिला दें कि 2024 के लोकसभा चुनावों में अजित पवार ने अपनी पत्नी सुनेत्रा पवार को अपनी चचेरी बहन सुप्रिया सुले के खिलाफ उतार कर पारिवारिक और राजनीतिक रिश्तों में तीखापन ला दिया था, लेकिन समय के साथ उन्होंने यह स्वीकार किया था कि वह फैसला एक भूल था। राजनीति के उस कठोर दौर के बाद हालिया निकाय चुनावों में उन्होंने जिस परिपक्वता का परिचय दिया, वह उनके व्यक्तित्व का दूसरा और अधिक मानवीय पक्ष सामने लाता है। शरद पवार की पार्टी के साथ गठबंधन कर दोनों एनसीपी को एक मंच पर लाने की पहल उन्होंने खुद की थी। बहन सुप्रिया के साथ संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस में उन्होंने साफ कहा था कि परिवार में कोई मतभेद नहीं हैं और जनता चाहती है कि दोनों दल साथ मिलकर काम करें। यह सिर्फ राजनीतिक बयान नहीं था, बल्कि एक भावनात्मक स्वीकारोक्ति भी थी। देखा जाये तो अपने निधन से पहले अजित पवार कम से कम इतना तो कर ही गए कि उन्होंने परिवार से सुलह कर ली, टूटे रिश्तों को जोड़ दिया और महाराष्ट्र की राजनीति को यह संकेत दे दिया कि टकराव नहीं, संवाद ही आगे का रास्ता है।

अपने लंबे राजनीतिक जीवन में अजित पवार ने पृथ्वीराज चव्हाण, देवेंद्र फडणवीस, उद्धव ठाकरे और एकनाथ शिंदे जैसे मुख्यमंत्रियों के साथ काम किया। गठबंधनों के बदलते दौर में भी अपनी उपयोगिता और असर बनाए रखना उनकी सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी रही। अजित पवार चूंकि केंद्र और महाराष्ट्र में सत्तारुढ़ एनडीए के प्रमुख घटक थे इसलिए उनका निधन बड़ा राजनीतिक नुकसान भी है।

देखा जाये तो अजित पवार का जाना सिर्फ एक व्यक्ति का जाना नहीं है, यह उस राजनीतिक शैली का अंत है जो चुपचाप काम करने में यकीन रखती थी। उनकी राजनीति प्रशासनिक पकड़, आंकड़ों की समझ और सत्ता की नस पहचानने की कला से बनी थी। शरद पवार की विशाल छाया में राजनीति शुरू करना आसान था, लेकिन उस छाया से निकलकर अपनी पहचान बनाना बेहद कठिन था। अजित पवार ने यह कठिन रास्ता चुना। वह हमेशा इस द्वंद्व में रहे कि उन्हें उत्तराधिकारी के रूप में देखा जाए या एक स्वतंत्र नेता के रूप में। शायद इसी बेचैनी ने उन्हें बार-बार जोखिम लेने के लिए प्रेरित किया।

2023 की वह सुबह भारतीय राजनीति के सबसे नाटकीय क्षणों में गिनी जाती है जब उन्होंने अचानक सत्ता का समीकरण बदल दिया था। उनकी काफी आलोचना हुई, अविश्वास भी पैदा हुआ, लेकिन यह भी सच है कि उसी क्षण ने उन्हें निर्णायक नेता के रूप में स्थापित किया। बाद में चुनाव आयोग का फैसला उनके पक्ष में जाना इस बात का संकेत था कि राजनीति में साहस कई बार वैधता भी दिला देता है। अजित पवार की राजनीति नैतिकता के आदर्शों की किताब से कम और यथार्थ की जमीन से ज्यादा निकली थी। यही कारण है कि वह आलोचकों के निशाने पर भी रहे और समर्थकों के भरोसे का केंद्र भी बने। वह जानते थे कि सत्ता स्थायी नहीं होती, लेकिन प्रभाव बनाया जा सकता है। उन्होंने वही किया। विभिन्न लोकसभा और महाराष्ट्र विधानसभा चुनावों के दौरान मैंने खुद देखा कि वह समर्थकों और कार्यकताओं के कितने करीब रहते हैं और सबकी बातें ध्यान से सुनते हैं। यही कारण था कि बारामती में खासतौर पर अजित दादा के नाम का बोलबाला हर जगह देखने को मिलता है।

आज जब उनका जाना अचानक और असमय हुआ है, महाराष्ट्र की राजनीति एक खालीपन महसूस कर रही है। यह खालीपन सिर्फ पद का नहीं, उस अनुभव का है जो दशकों में गढ़ा जाता है। आने वाले समय में यह सवाल और तीखा होगा कि क्या कोई नेता सहकार से सत्ता तक के इस रास्ते को फिर उसी धार और दृढ़ता से तय कर पाएगा। इसमें कोई दो राय नहीं कि अजित पवार की विरासत विरोधाभासों से भरी रही, लेकिन शायद यही उनकी सच्ची पहचान भी है। वह सरल नहीं थे, पर प्रभावशाली थे। वह आदर्शवादी नहीं थे, पर निर्णायक थे। और इसी वजह से महाराष्ट्र की राजनीति में उनका नाम लंबे समय तक याद रखा जाएगा।

संपादकीय

खौफनाक पढ़ाई

पिछले दिनों फरीदाबाद में ठीक से पढ़ाई न कर सकने वाली बच्ची की पिता द्वारा पिटाई करने से हुई मौत की खबर ने हर संवेदनशील इंसान को झकझोरा है। यह विश्वास करना कठिन है, कोई पिता इतना क्रूर हो सकता है कि महज गिनती न सीख पाने के कारण बच्ची की जान ले ले। यदि इस घटना के पीछे कोई परोक्ष कारण नहीं है तो निश्चय ही यह घटना किसी भी सभ्य समाज के लिये कलंक ही कही जाएगी। यह शर्म की बात ही है कि इस ज्ञान की सदी में किसी बच्ची की पिता के हाथों पढ़ाई के नाम पर मौत हो जाए। यह विडंबना ही है कि 21वीं सदी में भी हमारे समाज में मानसिक ग्रंथि की वह गांठ नहीं खुल पाई है, जो मानती है कि डर व मारपीट से बच्चों को सिखाया जा सकता है। ऐसी तमाम घटनाएं आज भी हमारे स्कूलों व घरों तक में सामने आती हैं। यदि स्कूल या कोचिंग में किसी बच्चे-बच्ची के साथ पढ़ाई के नाम पर आक्रामक व्यवहार होता है तो उम्मीद की जाती है कि परिवार उसके साथ मुश्किल समय में खड़ा होगा। लेकिन जब घर में माता-पिता ही हिंसक व्यवहार करने लगें तो मासूम किसके भरोसे रहेगा... कहने को देश में बच्चों के साथ होने वाले किसी भी हिंसक व्यवहार को रोकने के लिये तमाम तरह के प्रावधान सुरक्षा कवच उपलब्ध कराते हैं। लेकिन जब प्रवर्तन एजेंसियां ही उदासीन रहेंगी तो समस्या का समाधान संभव ही नहीं है। पहले तो स्कूलों में ही ऐसे मामलों पर पर्दा डालने की कोशिश की जाती है, फिर यदि मामला पुलिस या संबंधित विभाग के संज्ञान में आता भी है तो उसे रफा-दफा करने के प्रयास तेज हो जाते हैं। ऐसे मामलों में शिक्षक अभिभावक संगठन की भूमिका पर भी सवाल उठते रहे हैं। जिसमें अकसर शिक्षण संस्था के सुर में बोलने वाले अभिभावकों को ही रखा जाता है। आज भी यह एक गंभीर समस्या है और इसके गंभीर समाधान की जरूरत महसूस की जा रही है। यह हमारे समाज की विडंबना ही कही जाएगी कि आज भी यह सोच बलवती है कि बच्चों के साथ सख्त व्यवहार से उनकी पढ़ने-लिखने की क्षमता में वृद्धि होती है। जबकि हकीकत यह है कि किसी भी आक्रामक व्यवहार से बच्चों पर गहरा नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। देश व दुनिया में हुए तमाम शोध व अध्ययन बताते हैं कि बच्चों के साथ सख्त व आक्रामक व्यवहार किए जाने से बच्चों की एकाग्रता व याद्दाश्त पर प्रतिकूल असर पड़ता है।

चिंतन-मनन

जीना और मरना

जिस भांति हम जीते हैं, उसे जीवन नाममात्र को ही कहा जा सकता है। हमे न जीवन का पता है; न जीवन के रहस्य का द्वार खुलता है। न जीवन के आनंद की वप्रा होती है; न हम यह जान पाते हैं कि हम क्यों जी रहे हैं, किसलिए जी रहे हैं? हमारा होना करीब-करीब न होने के बराबर होता है। किसी भांति अस्तित्व ढो लेते हैं, जीवित रहते हुए मुर्दे की भांति। लेकिन ऐसा भी होता है कि मरते क्षण में भी कोई जीवंत होता है कि उसकी मृत्यु को भी हम मृत्यु नहीं कहते। बुद्ध की मृत्यु को हम मृत्यु नहीं कह सकते हैं और अपने जीवन को हम जीवन नहीं कह पाते हैं। कृष्ण की मृत्यु को मृत्यु कहना भूल होगी। उनकी मृत्यु को हम मुक्ति कहते हैं। उनकी मृत्यु को हम जीवन से और महाजीवन में प्रवेश कहते हैं। उनकी मृत्यु के क्षण में कौन-सी प्रांति घटित होती है, जो हमारे जीवन के क्षण में भी घटित नहीं हो पाती। किस मार्ग से वे मरते हैं कि परम जीवन को पाते हैं।

और किस मार्ग से हम जीते हैं कि जीवत रहते हुए भी हमें जीवन की कोई सुगंध का भी पता नहीं पड़ता है। जिसे हम शरीर कहें, वह हमारे लिए कब्र से ज्यादा नहीं है, एक चलती-फिरती कब्र। और यह लंबा विस्तार जन्म से लेकर मृत्यु तक, बस आहिस्ता-आहिस्ता मरते जाने का ही काम करता है। ऐसे रोज-रोज और मौत के करीब पहुंचते हैं। हमारी सारी यात्रा मरघट पर पूरी हो जाती है। जीने का सब कुछ निर्भर है जीने के ढंग पर और मरने का भी सब कुछ निर्भर है मरने के ढंग पर। हमें जीने का ढंग भी नहीं आता। बुद्ध जैसे व्यक्ति को मरने का ढंग भी आता है। कृष्ण ने कहा है, ।हे अजरुन, जिस काल में शरीर त्यागकर गए योगीजन, पीछे न आने वाली गति और पीछे आने वाली गति को भी प्राप्त होते हैं, उस काल को, उस मार्ग को मैं तुमसे कहूंगा। इसमें दो-तीन बातें समझ लेनी चाहिए। जिस काल में, जिस क्षण में। बड़ा मूल्य है क्षण का, बड़ा मूल्य है काल का। उस क्षण का जिसमें कोई व्यक्ति मृत्यु को उपलब्ध होता है। हमारे भीतर भी एक घड़ी है और भीतर भी क्षणों का हिसाब है। भीतरी घड़ी के उस क्षण में-बहुत कुछ निर्भर होता है। क्योंकि जगत में आकस्मिक कुछ भी नहीं है। मृत्यु भी बहुत कारणों से सुनिश्चित है और मृत्यु देखकर कहा जा सकता है कि व्यक्ति कैसे जिया। यदि भीतर की घड़ी, भीतर का समय विचार से भरा हो, वासना से भरा हो, कामना से भरा हो, तो व्यक्ति मरकर वापस लौट आता है। लेकिन भीतर का समय शुद्ध हो, कोई कामना नहीं, तृष्णा का सूत्र नहीं, शुद्ध क्षण हो तो उस क्षण में मरा हुआ व्यक्ति संसार में लौटकर नहीं आता।

साहसी पत्रकारिता से आधुनिक मीडिया तक

सुनील कुमार महला

हर वर्ष 29 जनवरी को भारतीय समाचार पत्र दिवस (इंडियन न्यूजपेपर डे) के रूप में मनाया जाता है। यह दिन भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में इसलिए विशेष महत्व रखता है, क्योंकि 29 जनवरी 1780 को भारत का पहला समाचार पत्र 'हिक्की का गजट', जिसे 'हिक्कीज बंगाल गजट' के नाम से भी जाना जाता है, कोलकाता से प्रकाशित हुआ था। यही कारण है कि इस ऐतिहासिक शुरूआत की स्मृति में 29 जनवरी को भारतीय समाचार पत्र दिवस मनाया जाता है। बहुत से पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि यह अखबार न केवल भारत का, बल्कि पूरे एशिया का पहला मुद्रित (प्रिंटेड) समाचार पत्र था। इसका आधिकारिक नाम 'द बंगाल गजट' अथवा 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' था। इसके संस्थापक, लेखक और प्रकाशक थे-जेम्स ऑगस्टस हिक्की। अपनी बेबाक पत्रकारिता, तीखी टिप्पणियों और स्वतंत्र सोच के कारण यह अखबार आम लोगों के बीच 'हिक्की गजट' के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

यदि इस दिवस के महत्व की बात करें, तो भारतीय समाचार पत्र दिवस स्वतंत्र, निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता के महत्व को रेखांकित करता है। यह दिवस अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, लोकतंत्र की मजबूती और समाज को जागरूक करने में मीडिया की भूमिका का प्रतीक है। दूसरे शब्दों में कहें तो 29 जनवरी पत्रकारिता के इतिहास और लोकतांत्रिक मूल्यों को नमन करने का दिन है। अब यदि हम बंगाल गजट की विशेषताओं पर नजर डालें, तो यह अखबार उस दौर में साप्ताहिक रूप से (हर शनिवार) प्रकाशित होता था। इसकी कीमत एक रुपया थी, जो उस समय के हिसाब से काफी महंगी मानी जाती थी। इस अखबार की सबसे बड़ी पहचान उसका सरकार-विरोधी रुख था। उपलब्ध जानकारियों के अनुसार, जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने इसकी शुरूआत से ही ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के भ्रष्टाचार के खिलाफ खुलकर मोर्चा खोल दिया था।अखबार के शीर्ष पर छपा वाक्य अपने आप में इसकी विचारधारा को स्पष्ट करता है-एक साप्ताहिक राजनीतिक और व्यापारिक पत्र, जो सभी पक्षों के लिए खुला है, लेकिन किसी के प्रभाव में नहीं है। यह कथन अपने आप में स्वतंत्र पत्रकारिता का घोषणापत्र था।

यह कहना भी गलत नहीं होगा कि बंगाल गजट जितना साहसी था, उतना ही विवादास्पद भी। बहुत कम लोग जानते हैं कि यह अखबार केवल पारंपरिक 'न्यूज पेपर' नहीं था, बल्कि इसमें उस दौर के गॉसिप कॉलम भी प्रमुखता से छपते थे। हिक्की ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों के भ्रष्टाचार, प्रेम संबंधों, निजी पार्टियों और सत्ता के दुरुपयोग से जुड़ी चटपटी व सनसनीखेज खबरें प्रकाशित करते थे। जब हिक्की ने तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स और उनकी पत्नी पर टिप्पणी करते हुए भ्रष्टाचार के आरोप लगाए, तो ब्रिटिश सरकार बौखला गई। परिणामस्वरूप, हिक्की को जेल भेज दिया गया। लेकिन पत्रकारिता के इतिहास में यह एक अनोखा उदाहरण है कि हिक्की ने जेल के भीतर से भी अखबार लिखना और छपवाना जारी रखा, जब तक कि अंततः अंग्रेजों ने उनका प्रिंटिंग प्रेस ही जब्त नहीं कर लिया। हिक्की के लिए 'आजादी' का अर्थ केवल भारत की आजादी नहीं था, बल्कि वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (फ्रीडम ऑफ स्पीच) और ब्रिटिश सत्ता की तानाशाही के खिलाफ लड़ रहे थे। इस दृष्टि से वे अपने समय के 'एंटी-एस्टेब्लिशमेंट पत्रकार' कहे जा सकते हैं।

बंगाल गजट में प्रकाशित होने वाले विज्ञापन भी अपने आप में बेहद रोचक और उस दौर की सामाजिक सच्चाइयों को उजागर करते थे। इनमें गुमशुदा कुत्तों, बिकने वाले दासों (जो उस समय की कड़वी हकीकत थी), तथा यूरोप से आए ताजा पनीर और शराब जैसे विज्ञापन प्रमुखता से छपते थे।अपनी तीखी लेखनी के कारण हिक्की ने वारेन हेस्टिंग्स से गहरी दुश्मनी मोल ले ली। अंततः मार्च 1782 में ब्रिटिश सरकार ने उनका प्रिंटिंग प्रेस जब्त कर लिया और मात्र दो वर्षों के भीतर यह ऐतिहासिक अखबार बंद हो गया। हिक्की जैसे साहसी पत्रकार का अंत अत्यंत दुखद रहा। प्रेस जब्त होने के बाद वे पूरी तरह कंगाल हो गए। माना जाता है कि उनकी मृत्यु एक जहाज पर हुई और उनके पास अंतिम संस्कार तक के पैसे नहीं थे।

आज यदि हम वर्तमान समय में समाचार पत्रों की भूमिका पर दृष्टि डालें, तो स्पष्ट होता है कि समाचार पत्र मनुष्य के दैनिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। वे केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि समाज का दर्पण होते हैं। समाचार पत्र राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान, तकनीक, कृषि, व्यापार, खेल, अनुसंधान, अंतरिक्ष, बैंकिंग और सामाजिक विषयों पर गहन, तथ्यपरक और विश्लेषणात्मक सामग्री प्रदान करते हैं। साथ ही बच्चों, युवाओं, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए विशेष सामग्री उन्हें बहुआयामी बनाती है।

आज भले ही हम एआई और सोशल मीडिया-जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर), व्हाट्सएप और यूट्यूब के युग में जी रहे हों, फिर भी प्रिंट मीडिया की विश्वसनीयता और प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। डिजिटल माध्यम जहां त्वरित सूचना देते हैं, वहीं समाचार पत्र घटनाओं की पृष्ठभूमि, विश्लेषण और निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। इसके अलावा, सुबह की चाय के साथ अखबार पढ़ने का अनुभव आज भी अपने आप में खास है।

इसी महत्व को समझते हुए हाल के वर्षों में हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश सरकारों ने स्कूलों में अखबार पढ़ने को लेकर महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। पहले हिमाचल प्रदेश सरकार ने स्कूलों की प्रार्थना सभा में अखबार पढ़ने की व्यवस्था की और अब उत्तर प्रदेश सरकार ने सभी बेसिक और सैकेंडरी सरकारी स्कूलों में इसे अनिवार्य कर दिया है। इसका उद्देश्य बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करना, सामान्य ज्ञान बढ़ाना और आत्मविश्वास के साथ बोलने की क्षमता को सशक्त करना है।

यदि हम अंत में हिक्की के बंगाल गजट और आज के अखबार युग की तुलना करें, तो यह कहना अनुचित नहीं होगा कि बंगाल गजट शब्दों की पहली चिंगारी था। तब संसाधन सीमित थे, पाठक कम थे, लेकिन साहस असीम था। आज तकनीक उन्नत है, पहुंच व्यापक है, लेकिन भूमिका वही है-सत्ता से सवाल करना, समाज को जागरूक करना और लोकतंत्र की निगरानी करना।अखबार तब भी सच का आईना था, और आज भी है।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

यूजीसी के नए इक्विटी नियम, सामाजिक न्याय और आशंकाओं के बीच संतुलन की चुनौती

कांतिलाल मांडोत

उच्च शिक्षा किसी भी लोकतांत्रिक समाज की रीढ़ होती है। विश्वविद्यालय केवल डिग्री देने वाली संस्थाएं नहीं होते, बल्कि वे ऐसे मंच होते हैं जहां समान अवसर, विचारों की स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय के मूल्य आकार लेते हैं। भारत जैसे विविधता से भरे देश में यह सवाल हमेशा से प्रासंगिक रहा है कि क्या हमारे शैक्षणिक परिसरों में सभी छात्रों को समान सम्मान और अवसर मिल पाते हैं। इसी पृष्ठभूमि में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 13 जनवरी 2026 को अधिसूचित किए गए नए नियम ह्यप्रमोशन ऑफ इक्विटी इन हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस रेगुलेशंस, 2026 सामने आए हैं। इन नियमों का उद्देश्य स्पष्ट रूप से जाति आधारित भेदभाव को रोकना और वंचित वर्गों को संरक्षण देना बताया गया है। लेकिन इन्हीं नियमों को लेकर देश के कई हिस्सों में तीखा विरोध भी देखने को मिल रहा है। यह विरोध केवल राजनीतिक नहीं है, बल्कि इसमें छात्रों, शिक्षकों और सामाजिक संगठनों की वास्तविक आशंकाएं भी जुड़ी हुई हैं।

सरकार और यूजीसी का तर्क यह है कि उच्च शिक्षा संस्थानों में जाति आधारित भेदभाव की घटनाएं कोई कल्पना नहीं हैं। बीते एक दशक में सामने आई कुछ दर्दनाक घटनाओं ने इस मुद्दे को राष्ट्रीय बहस का विषय बना दिया। रोहित वेमुला और पायल तडवी जैसे मामलों ने यह सवाल उठाया कि क्या विश्वविद्यालय प्रशासन समय रहते हस्तक्षेप करने में विफल रहा। सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शों के बाद नियमों को सख्त करने की जो प्रक्रिया शुरू हुई, उसका मकसद जवाबदेही तय करना और यह सुनिश्चित करना था कि किसी भी छात्र को जाति के आधार पर अपमान, उपेक्षा या उत्पीड़न का सामना न करना पड़े। इस दृष्टि से हर कॉलेज में ईक्वल अपॉर्च्युनिटी सेंटर, इक्वलिटी कमेटी और निगरानी तंत्र बनाने का प्रस्ताव एक सकारात्मक कदम माना जा सकता है। यह व्यवस्था उन छात्रों के लिए एक औपचारिक मंच उपलब्ध कराती है, जो अब तक शिकायत दर्ज कराने से डरते रहे हैं या जिनकी आवाज दबा दी जाती थी।

सरकार का यह भी कहना है कि नियमों में सख्ती इसलिए जरूरी है क्योंकि केवल सलाह या दिशानिर्देश पर्याप्त साबित नहीं हुए। पहले के नियमों में दंड का अभाव था, जिसके कारण कई संस्थानों ने उन्हें गंभीरता से नहीं लिया। नए प्रावधानों में ग्रांट रोकने या मान्यता रद्द करने जैसे कठोर कदम शामिल कर यह संदेश दिया गया है कि जातीय भेदभाव को अब हल्के में नहीं लिया जाएगा। इस तर्क में एक हद तक दम है, क्योंकि किसी भी कानून या नियम की प्रभावशीलता उसके पालन से जुड़ी होती है, और पालन अक्सर दंड के भय से ही सुनिश्चित होता है।

लेकिन दूसरी ओर, इन नियमों को लेकर जो विरोध सामने आया है, उसे केवल पूर्वाग्रह या राजनीतिक उकसावे का परिणाम मान लेना भी उचित नहीं होगा। जनरल कैटेगरी के छात्रों और कुछ शिक्षाविदों का कहना है कि नियमों की भाषा और संरचना असंतुलित है। भेदभाव की परिभाषा में केवल कुछ वर्गों को पीड़ित के रूप में चिन्हित किया गया है, जबकि जनरल कैटेगरी को इस दायरे से बाहर रखा गया है। इससे यह संदेश जाता है कि एक वर्ग को संभावित अपराधी और दूसरे को संभावित पीड़ित के रूप में पहले से ही तय कर दिया गया है। किसी भी न्यायपूर्ण व्यवस्था में यह धारणा स्वयं में समस्या पैदा कर सकती है।

सबसे अधिक चिंता झूठी या दुर्भावनापूर्ण शिकायतों के संदर्भ में जताई जा रही है। प्रारंभिक ड्राफ्ट में गलत शिकायत करने पर दंड का प्रावधान था, जिसे अंतिम नियमों से हटा दिया गया। आलोचकों का तर्क है कि इससे नियमों का दुरुपयोग आसान हो जाएगा। शिक्षा संस्थान पहले ही आंतरिक राजनीति, गुटबाजी और व्यक्तिगत टकरावों से अछूते नहीं हैं। ऐसे माहौल में यदि शिकायतकर्ता पर कोई जवाबदेही न हो, तो निष्पक्ष जांच की प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है। हालांकि यह भी सच है कि झूठी शिकायतों की आशंका के कारण वास्तविक पीड़ितों को न्याय से वंचित करना भी गलत होगा। यहां संतुलन की आवश्यकता थी, जिसे नियमों में स्पष्ट रूप से संबोधित नहीं किया गया।

इक्वलिटी कमेटी की संरचना भी विवाद का विषय बनी है। इसमें एसवी,, एसटी, ओबीसी महिलाएं और दिव्यांगों को शामिल करना सामाजिक प्रतिनिधित्व की दृष्टि से सही कदम माना जा सकता है, लेकिन जनरल कैटेगरी के किसी सदस्य का अनिवार्य न होना कई सवाल खड़े करता है। विविधता का उद्देश्य केवल वंचित वर्गों की उपस्थिति नहीं, बल्कि सभी दृष्टिकोणों को स्थान देना होता है। यदि किसी वर्ग को पूरी तरह बाहर रखा गया, तो कमेटी के फैसलों पर एकतरफापन का आरोप लगना स्वाभाविक है। यह स्थिति न केवल अविश्वास पैदा कर सकती है, बल्कि नियमों की वैधता को भी कमजोर कर सकती है।

कॉलेज प्रशासन की भूमिका भी इन नियमों के बीच जटिल हो गई है। 24 घंटे में मीटिंग और तय समयसीमा में कार्रवाई जैसे प्रावधान त्वरित न्याय के इरादे से बनाए गए हैं, लेकिन व्यवहारिक स्तर पर यह दबाव पैदा कर सकते हैं। शिक्षण संस्थान केवल अनुशासनात्मक ढांचे नहीं होते, वे अकादमिक निर्णय भी लेते हैं, जिनमें समय, विचार और परामर्श की जरूरत होती है। यदि हर निर्णय पर सजा का भय मंडराएगा, तो यह आशंका है कि कॉलेज मेरिट के बजाय जोखिम से बचने की नीति अपनाएं। इससे शिक्षा की गुणवत्ता और स्वायत्तता दोनों प्रभावित हो सकती हैं।

एक और महत्वपूर्ण सवाल यूसीजी के अधिकार क्षेत्र को लेकर उठाया जा रहा है। आलोचकों का कहना है कि यूजीसी एक्ट 1956 मुख्य रूप से अकादमिक मानकों और वित्तीय सहायता तक सीमित है, और जातीय उत्पीड़न जैसे सामाजिक मुद्दों पर सीधे नियम बनाना उसके अधिकार से बाहर है। यह एक संवैधानिक और कानूनी बहस का विषय है, जिस पर अंतिम निर्णय न्यायपालिका ही करेगी। सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिकाएं यह संकेत देती हैं कि यह मुद्दा केवल नीतिगत नहीं, बल्कि मौलिक अधिकारों से भी जुड़ा हुआ है।

इन सभी तर्कों के बीच यह मानना जरूरी है कि समस्या एकतरफा नहीं है। सरकार यदि गलत है तो इसलिए नहीं कि वह भेदभाव रोकना चाहती है, बल्कि इसलिए कि नियमों के निर्माण में संतुलन और सभी हितधारकों के विश्वास को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। वहीं छात्र यदि सही हैं तो इसलिए नहीं कि वे सामाजिक न्याय के खिलाफ हैं, बल्कि इसलिए कि वे निष्पक्षता, समानता और दुरुपयोग से सुरक्षा की मांग कर रहे हैं। दोनों पक्षों की चिंताओं में सच्चाई का अंश मौजूद है।

आवश्यकता इस बात की है कि नियमों को संवाद के माध्यम से और अधिक परिष्कृत किया जाए। झूठी शिकायतों के लिए स्पष्ट और निष्पक्ष प्रावधान जोड़े जा सकते हैं, कमेटियों की संरचना में सभी वर्गों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सकता है और समयसीमा को व्यवहारिक बनाया जा सकता है। इससे न केवल वंचित छात्रों को सुरक्षा मिलेगी, बल्कि जनरल कैटेगरी के छात्रों का भरोसा भी कायम रहेगा। अंततः शिक्षा का उद्देश्य समाज को जोड़ना है, न कि नए विभाजन पैदा करना। यदि यूसीजी के नए नियम इस भावना के साथ लागू होते हैं कि हर छात्र समान सम्मान का हकदार है और हर आरोप की निष्पक्ष जांच जरूरी है, तो वे वास्तव में ऐतिहासिक साबित हो सकते हैं। लेकिन यदि आशंकाओं को नजरअंदाज किया गया, तो यह सुधार विवाद और अविश्वास की भेंट चढ़ सकता है। सामाजिक न्याय और निष्पक्षता के बीच संतुलन ही इस पूरे विवाद का मूल समाधान है।

डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थल

भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर जाकर सतधारा फाल्स में लीजिए शांति का अनुभव

सतधारा झरना या फाल्स हिमाचल प्रदेश की चंबा घाटी में स्थित है, जो बर्फ से ढके पहाड़ों और ताजे देवदार के पेड़ों के शानदार दृश्यों से घिरा हुआ है। 'सतधारा' का मतलब होता है सात झरने, इस झरने का नाम सातधारा सात खूबसूरत झरनों के जल के एक साथ मिलने की वजह से रखा गया है। इन झरनों का पानी समुद्र से 2036 मीटर ऊपर एक बिंदु पर मिलता है। यह जगह उन लोगों के लिए एक खास है, जो शहर की भीड़-भाड़ वाली जिंदगी से दूर जाकर शांति का अनुभव करना चाहते हैं। सतधारा फाल्स अपने औषधीय गुणों की वजह से भी जानी जाती है, क्योंकि यहां के पानी में अभ्रक पाया जाता है, जिसमें त्वचा के रोग ठीक करने के गुण होते हैं।

अगर आप डलहौजी के पास घूमने की अच्छी जगह तलाश रहे हैं तो सतधारा फाल्स आपके लिए एक अच्छी जगह है। इसे स्थानीय भाषा में 'गंडक' के नाम से जाना जाता है। यहां का पानी साफ क्रिस्टल और निर्मल है। राजसी सतधारा झरने का पानी की बूंदे जब चट्टानों पर टकराकर उछलती हैं तो पर्यटकों को बेहद आनंदित करती हैं। यहां पानी से गीली हुई मिट्टी की खुशबू हवा को ताजा कर देती है। सतधारा जलप्रपात को चारों ओर का दृश्य अपनी भव्यता के साथ दर्शकों को बेहद प्रभावित करता है। अगर आप सतधारा फाल्स घूमने के अलावा इसके पर्यटन स्थलों की सैर भी करना चाहते हैं तो इस आर्टिकल को पूरा जरूर पढ़ें, इसमें हमने सतधारा फाल्स जाने के बारे में और इसके पास के पर्यटन स्थलों के बारे में पूरी जानकारी दी है।

सतधारा जलप्रपात की मुख्य विशेषताएं

सतधारा जलप्रपात का अपना अलग औषधीय मूल्य है। स्प्रिंग्स में तत्व माइका तत्व पाया जाता है, जिसमें ऐसे औषधीय गुण होते हैं, जो संभावित रूप से कई बीमारियों का इलाज कर सकता है। यह चकाचौंध वाला झरने पंचपुला के रास्ते में स्थित हैं, जो डलहौजी में घूमने के लिए एक और बहुत ही लोकप्रिय जगह है। सतधारा झरने से सूर्यास्त का दृश्य बस शानदार दिखाई देता है, पर्यटकों को देखने में ऐसा लगता है कि एक पीली आग की नारंगी गेंद घूमती है और धीरे-धीरे पहाड़ियों के पीछे छुप जाती है।

सतधारा फाल्स घूमने के लिए टिप्स

- जब आप झरने के क्षेत्र में प्रवेश कर सकते हैं और इसमें चारों ओर छींटे आपके कपड़ों को गीला कर सकते हैं, इसलिए अतिरिक्त कपड़ें ले जाना न भूलें।
- फॉल्स से सूर्यास्त देखने के लिए वहां उपस्थित रहने की कोशिश करें।
- ऐसे जूते पहनें जो आपको अच्छी पकड़ और आराम दें, क्योंकि चट्टानों में काई से फिसलन होती है।
- अपने साथ कैमरा ले जाना न भूलें।

सतधारा फाल्स के आसपास के प्रमुख पर्यटन और आकर्षण स्थल

सतधारा फाल्स डलहौजी का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है, जो शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अगर आप इस फाल्स के अलावा डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों की सैर करना चाहते हैं तो यहां दी गई जानकारी को जरूर पढ़ें।

बकरोटा हिल्स

बकरोटा हिल्स जिसे अपर बकरोटा के नाम से भी जाना जाता है, यह डलहौजी का सबसे ऊंचा इलाका है और यह बकरोटा वॉक नाम की एक सड़क का सर्किल है, जो खजियार की ओर जाती है। भले ही इस जगह पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए बहुत कुछ नहीं है, लेकिन यहां टहलना और चारों तरफ के आकर्षक दृश्यों को देखना पर्यटकों की आंखों को बेहद आनंद देता है। आपको बता दें कि यह क्षेत्र चारों तरफ से देवदार के पेड़ों और हरी-भरी पहाड़ियों से घिरा हुआ है।

सच पास

सच दर्रा पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के ऊपर 4500 मीटर की ऊंचाई से होकर जाता है और डलहौजी को चंबा और पांगी घाटियों से जोड़ता है। आपको बता दें कि डलहौजी से 150 किमी की दूरी पर यह मार्ग उत्तर भारत में पार करने के लिए सबसे कठिन मार्गों में से एक है, जो लोग एडवेंचर पसंद करते हैं तो अक्सर सच पास (जब यह खुला होता है) का दौरा करते हैं और यहां से बाइक या कार चलाने का रोमांचक अनुभव लेते हैं। अगर आप इस मार्ग से यात्रा करें तो जोखिम न लें और अपने साथ एक अनुभवी ड्राइवर लेकर जाएं। यह चंबा या पांगी घाटी तक पहुंचने के लिए लोगों का पसंदीदा रास्ता है और डलहौजी से ट्रेकिंग के लिए एक प्रसिद्ध बिंदु है।

सुभाष बावली

सुभाष बावली डलहौजी में गांधी चौक से 1 किमी दूर स्थित एक ऐसी जगह है, जिसका नाम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सुभाष चंद्र बोस के नाम पर रखा गया। सुभाष बावली एक ओर अपने खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यों, दूर-दूर तक फैले बर्फ के पहाड़ों दृश्यों और सुंदरता के लिए जाना जाता है। सुभाष बावली वो जगह है, जहां पर सुभाष चंद्र बोस 1937 में स्वास्थ्य की खराबी के चलते आए थे और वो इस जगह पर 7 महीने तक रहे थे। इस जगह पर रहकर वे बिलकुल ठीक हो गए थे। आपको बता दें कि यहां पर एक खूबसूरत झरना भी है, जो हिमनदी धारा में बहता है।

डैनकुंड पीक

डैनकुंड पीक जिसे सिंगिंग हिल के नाम से भी जाना जाता है, जो डलहौजी में समुद्र तल से 2755 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। आपको बता दें कि यह डलहौजी में सबसे ऊंचा स्थान होने के कारण यहां से घाटियों और पहाड़ों के अद्भुत दृश्यों को देखा जा सकता है। प्रकृति प्रेमियों के लिए शांत जगह स्वर्ग के सामान है। डलहौजी क्षेत्र में स्थित डैनकुंड सचमुच देखने लायक जगह है, जो अपनी खूबसूरत बर्फ से ढकी चोटियों और हरे-भरे वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। डैनकुंड पीक हर साल भारी संख्या में देश भर से पर्यटकों को अपनी तरफ आकर्षित करती है।

गंजी पहाड़ी

गंजी पहाड़ी पठानकोट रोड पर डलहौजी शहर से 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित एक सुंदर पहाड़ी है। इस पहाड़ का नाम गंजी पहाड़ी इसकी खास विशेषता से लिया गया था, क्योंकि इस पहाड़ी पर वनस्पतियों की पूर्ण अनुपस्थिति है। गंजी का मतलब होता है गंजापन। डलहौजी के पास स्थित होने की वजह से यह पहाड़ी एक पसंदीदा पिकनिक स्थल है। सर्दियों के दौरान यह इलाका मोटी बर्फ से ढक जाता है, जो मनोरम दृश्य प्रस्तुत करता है।

चामुंडा देवी मंदिर

चामुंडा देवी मंदिर देवी काली को समर्पित एक महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र है। इस मंदिर के बारे में कहा जाता है कि यहां पर देवी अंबिका ने मुंडा और चंदा नाम के राक्षसों का वध किया था। इस मंदिर में देवी को एक लाल कपड़े में लपेटकर रखा जाता है, यहां आने वाले पर्यटकों को देवी की मूर्ति को छूने नहीं दिया जाता। इस क्षेत्र में पर्यटकों को कई सुंदर दृश्य भी देखने को मिलते हैं।

रॉक गार्डन

रॉक गार्डन डलहौजी में एक सुंदर उद्यान और एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल है। इस पार्क में पर्यटक आराम करने के अलावा, इस क्षेत्र में उपलब्ध कई साहसिक खेलों का भी मजा ले सकते हैं, जिनमें जिप लाइनिंग आदि शामिल हैं।

खाज्जिअर

खाज्जिअर डलहौजी के पास स्थित एक छोटा सा शहर है जिसको 'मिनी स्विट्जरलैंड' या 'भारत का स्विटजरलैंड' के नाम से भी जाना जाता है। इस स्थान की खूबसूरती हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करती है। 6,500 फीट की ऊंचाई पर स्थित खाज्जिअर अपनी प्राकृतिक सुंदरता की वजह से डलहौजी के पास घूमने की सबसे अच्छी जगहों में से एक हैं। इस जगह होने वाले साहसिक खेल जोरबिंग, ट्रेकिंग पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

पंचपुला

पंचपुला हरे देवदार के पेड़ों के आवरण से घिरा एक झरना है, जो डलहौजी के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। पंचपुला वो जगह है, जहां पर पांच धाराएं एक साथ आती हैं। पंचपुला की मुख्य धारा डलहौजी के आसपास विभिन्न जगहों में पानी की पूर्ति करती है। यह जगह ट्रेकिंग और खूबसूरत दृश्यों की वजह से जानी जाती है। पंचपुला के पास एक महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह (शहीद भगत सिंह के चाचा) की याद में एक समाधि बनाई गई है, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली थी। मानसून के मौसम में इस जगह के प्राचीन पानी का सबसे अच्छा आनंद लिया जाता है, जब पानी गिरता तो यहां का वातावरण पर्यटकों को आनंदित करता है।

डलहौजी जाने के लिए यह है सबसे अच्छा समय

डलहौजी अपनी आदर्श जलवायु की वजह से एक ऐसी जगह है, जहां आप पूरे वर्ष भर घूम सकते हैं। हालांकि, डलहौजी जाने का सबसे अच्छा समय मार्च-जून के बीच का होता है। मार्च और अप्रैल के महीनों में यहां पर बर्फ पिघलना शुरू हो जाती है और जब सूरज की किरणें बर्फ से ढके पहाड़ों और चरागाहों से टकराती है, तब इस जगह की चमक देखने लायक होती है। इस समय यहां का मौसम बहुत सुहावना रहता है आप मार्च और अप्रैल में ठंड का अनुभव कर सकते हैं और जून के महीने में यहां का तापमान थोड़ा बढ़ने लगता है। गर्मियों के महीनों में भी डलहौजी का मौसम काफी अच्छा होता है, जिसकी वजह से यह प्रकृति प्रेमियों के लिए स्वर्ग के सामान है। मानसून भी यहां का मौसम सुहावना है, क्योंकि मध्यम वर्षा से आपकी योजनाओं में कोई रुकावट नहीं आती। डलहौजी में सर्दियां साहसिक गतिविधियों के लिए सही हैं।

हवाई जहाज से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: हवाई जहाज से डलहौजी पहुंचने कांगड़ा में गग्गल हवाई अड्डा इसका सबसे निकटतम घरेलू हवाई अड्डा है। यह हवाई अड्डा शहर से 13 किमी दूर है और यहां से डलहौजी हिल स्टेशन तक पहुंचने के लिए टैक्सी आसानी से उपलब्ध हैं। इसके अलावा आप अन्य हवाई अड्डे चंडीगढ़ (255 किमी), अमृतसर (208 किमी) और जम्मू (200 किमी) के लिए भी उड़ान ले सकते हैं।

रेलगाड़ी से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: डलहौजी का सबसे निकटतम रेल स्टेशन पठानकोट है, जो इस पहाड़ी शहर से 80 किमी दूर स्थित है और भारत के विभिन्न शहरों, जैसे दिल्ली, मुंबई और अमृतसर से कई ट्रेनों के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। पठानकोट रेलवे स्टेशन से डलहौजी पहुंचने के लिए आपको बाहर से टैक्सियां मिल जाएंगी।

सड़क मार्ग से सतधारा फाल्स ऐसे पहुंचें: डलहौजी सड़क मार्ग की मदद से आसपास के प्रमुख शहरों और जगहों से जुड़ा हुआ है। राज्य बस सेवा और लक्जरी कोच डलहौजी को आसपास की सभी प्रमुख जगहों और शहरों से जोड़ते हैं। दिल्ली से डलहौजी के लिए रात भर लक्जरी बसें भी उपलब्ध हैं। इस मार्ग पर टैक्सी और निजी वाहन भी मिल जाते हैं।

स्त्री की देह के आकार वाली है रेणुका झील

रेणुका झील हिमाचल प्रदेश के नाहन से लगभग 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। रेणुका झील की समुद्र तल से ऊंचाई लगभग 2200 फीट है। यह एक अत्यंत रमणीक झील है, जो लगभग तीन किलोमीटर लंबी तथा आधा किलोमीटर चौड़ी एक अदभुत झील है। इस झील का आकार एक लेटी हुई स्त्री की देह के समान है। जो इसे अदभुत एवं अनोखा बनाता है।

इस झील के चारों ओर हरियाली एवं इसके पानी मे अठखेलियां करती मछलियां पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। इस झील की गणना एक पावन तीर्थ स्थल के रूप में भी की जाती है। हर वर्ष दिपावली के लगभग दस दिन बाद यहां एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है, जिसमें हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं। झील के किनारे मां रेणुका और परशुराम का प्रसिद्ध मंदिर है तथा एक छोटा सा चिडियाघर है, जो पर्यटकों को काफी पसंद आता है। झील में मनोरंजन के लिए बोटिंग करने की सुविधा उपलब्ध है, जिसमें बैठकर सैलानी झील के चारों ओर की प्राकृतिक सुंदरता के दर्शन कर सकते हैं, रेणुका झील का स्त्री रूपी आकार देखने के लिए यहा से आठ किलोमीटर ऊपर जामु चोटी पर जाना पड़ता है। जहां से रेणुका झील का आकार लेटी हुई स्त्री की देह के समान दिखाई पड़ता है।

रेणुका झील का इतिहास

रेणुका झील कैसे बनी और इसकी धार्मिक महत्व के पीछे कई मशहूर दंत कथाए प्रचलित हैं। एक कहानी के अनुसार कहा जाता है कि बहुत समय पहले यहां राजा रेणु रहा करते थे। उनकी दो सुंदर पुत्रियां थी, जिनमें से एक नैनुका तथा दूसरी पुत्री रेणुका थी। एक बार राजा ने दोनो पुत्रियों से प्रश्न किया कि वो किसका दिया खाती हैं, जिसके जवाब में नैनुका ने कहा कि वह अपने पिता का दिया खाती है। जबकि रेणुका ने जवाब दिया कि वह भगवान का दिया और अपने नसीब का खाती हूं। रेणुका के जवाब से राजा अप्रसन्न हो गए और उन्होंने रेणुका को सबक सिखाने का निर्णय लिया। कुछ समय बाद राजा ने बड़ी पुत्री नैनुका का विवाह बड़ी धूम-धाम से एक पराक्रमी राजा सहस्त्रबाहु से कर दिया और छोटी पुत्री रेणुका को सबक सिखाने रेणुका का विवाह एक सीधे साधे तपस्वी ऋषि जमदग्नि से कर दिया। हालांकि रेणुका राजसी ठाठ-बाट मे पली बढ़ी थी। फिर भी उसने ऋषि जमदग्नि को अपना पति स्वीकार किया और तन मन से उसकी सेवा करने लगी। एक दिन राजा सहस्त्रबाहु की दृष्टि रेणुका पर पड़ी तो वह उसे देखता ही रह गया। वास्तव में रेणुका का रूप लावण्य उसके हृदय में उतर गया था। उसने उसी समय रेणुका को अपनी रानी बनाने का फैसला किया और रेणुका को पाने की युक्ति सोचने लगा। अपने षड्यंत्र के तहत एक दिन वह चुपचाप ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुंचा और ध्यानमग्न जमदग्नि को उसने अपने बाण से मार डाला। उसके बाद वह रेणुका का चीरहरण करने उसकी तरफ बढ़ा। रेणुका सहस्त्रबाहु के अपवित्र इरादों को भांप गई और भागकर नीचे तलहटी मे जा पहुंची। सहस्त्रबाहु रेणुका का पीछा करता हुआ, उसके पीछे दौड़ा। इससे पहले वह रेणुका को पकड़ पाता। एकाएक धरती फटी और देखते ही देखते रेणुका उसमें समा गई। रेणुका के धरा में समाते ही पानी की धाराएं फूट पड़ी और देखते ही देखते उस स्थान ने एक झील का रूप धारण कर लिया। तभी से यह झील रेणुका झील के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

रेणुका झील कैसे पहुंचें

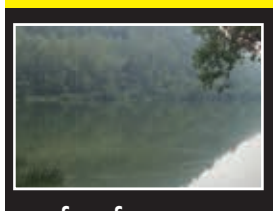

हवाई मार्ग

मुब्बार हटटी यहां का सबसे नजदीकी हवाई अड्डा है, जो यहां से 40 किमी की दूरी पर स्थित है। यहां से टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है।

रेल मार्ग

यहां का सबसे नजदीकी रेलवे स्टेशन कालका है, जो लगभग 110 किलोमीटर की दूरी पर है। यहां से आप बस या टैक्सी के द्वारा जा सकते हैं।

सड़क मार्ग

यह स्थल सड़क मार्ग से जुड़ा है।

स्वत्वाधिकार प्रकाशन एवं मुद्रक राजकुमार आमेटा के लिए स्मार्ट कम्प्यूटर्स एण्ड प्रिन्टर्स, कोर्ट के सामने, माण्डलगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित। मो. 9649222850 Email.smarthalchalnews@gmail.com